Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

7-3

अष्टछापीय भक्तिसंगीत उद्भव और विकास

भाग-3

[खण्ड-5]

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, कशेंदो
वाराणसी-5

न्यालय
वाराणसी-५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्री प्रेम लता · शर्मा

आम्नाय—ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Rare

॥ श्रीहरिः ॥

अष्टछापीय भक्ति-संगीत

(हवेली-संगीत)

31/32
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

उद्भव और विकास

भाग : ३ : (खण्ड-५)

लेखक

कीर्तनाचार्य

पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक

B. Mus. (1st Class), BhatKhande University

निवृत्त प्रिन्सिपाल, भातखण्डे संगीत विद्यालय, अमदावाद

निवृत्त प्रोध्यापक-एस. एल. यू. कोलेज फोर विमेन, अमदावाद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकाशक :

चम्पकलाल छ. नायक,
अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र,
६०, नायकनगर, अमदावाद-३८००१४
(गुजरात)

आम्नाय ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

मुद्रणव्यवस्थापक :
म.म., अध्या. के. का. शास्त्री,
विद्यावाचस्पति

प्रथम मुद्रण : प्रति १०००
वि. सं. २०४३, ई. स. १९८७

मूल्य : रु. ५० २०-००

मुद्रक :
पूजा प्रिन्टर्स एन्ड ट्रेडर्स,
महंदी कूवा, शाहपुर, अमदावाद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

आमुख

पुष्टिमार्गीय कीर्तनों की गानशैली को स्वरांकित करने का सर्वप्रथम प्रयास, जहाँ तक मुझे ज्ञात है, श्री चम्पकलाल नायक ने ही बहुत वर्षों पहले किया था। उसके बाद तो शनैः शनैः कुछ ग्रन्थ पुष्टिमार्गीय स्वरलिपियों के प्रकाशित हुए।

सम्पूर्ण पुष्टिजगत् इन स्वरलिपिकारों का चिरकाल तक ऋणी रहेगा। फिर भी पुष्टिमार्गीय कीर्तनशैली की ऐतिहासिक-शैलीगत-रागों के भेदोपभेद आदि के निरूपण से समृद्ध जैसी सांगोपांग विवेचना श्री चम्पकलालभाई ने की है, उसका उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

कीर्तनशैली एक जीवित परम्परा है और प्रत्येक जीवित परम्परा में तत्तत्स्थानीय, तत्तत्कालिक एवं परम्परावाहक तत्तद् व्यक्ति से जुड़ी हुई कुछ-न-कुछ विशेषताएं तो जुड़ ही जाती हैं, जैसे महा नदी में उपनदियाँ। इन सभी भेद-उपभेदों के सहिष्णु एक अभेद का जो अनुभव नहीं कर पाता उसे जीवित-परम्परा का वास्तविक रसास्वादन नहीं मिल पाता। अतएव गोकुल-कामवन, नाथद्वारा-कांकरोली, गुजरात आदि स्थानों में परिलक्षित होती कीर्तनशैलियों के स्वर-लिपिकरण द्वारा उनकी सुरक्षा सम्प्रदाय की एक महती सेवा है।

रामजयन्ती

गो. श्याममनोहर

व्रजकमल, स्वस्तिक सोसायटी,
चौथा रास्ता, जुहू स्कीम,
बम्बई-४०००५६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिन्तासंतानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः ।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

नि. ली. कांकरोलीस्थित तृतीयपीठाधीश्वर
आ. श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज
के
चरणों में

चरणकिंकर

चम्पकलाल छ. नायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

તૃતીય પીઠાધીશ્વર, કાંકરોલી.

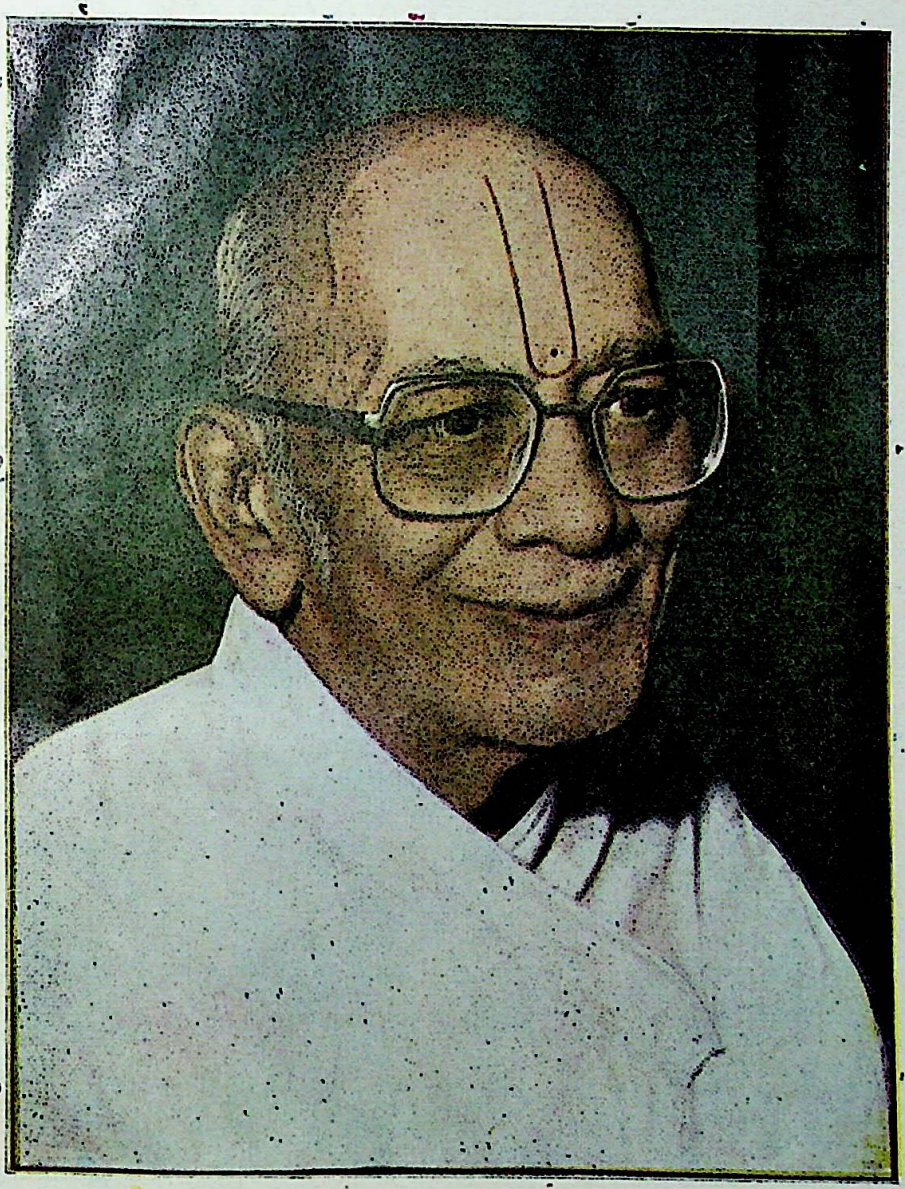

નિ. લિ. ગો. ૧૦૮ પૂ. શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रंथकार के पिताश्री छबीलदास मोरारजी नायक

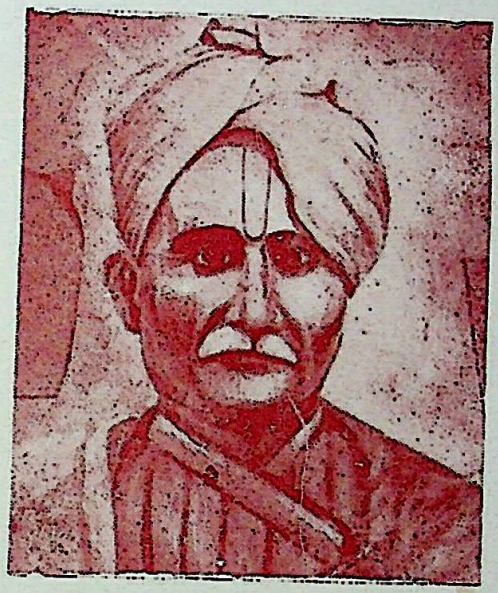

पुष्टि संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कीर्तनकार व श्रीमंत सरकार दामाजीराव गायकवाड की पाटण की गद्दी के गायक।

जन्म० सं० १९३२

गो० सं० २००१

संगीतोद्धारक पं० भातखण्डेजी के पट्टशिष्य व ग्रंथकार के संगीत विद्यागुरु संगीताचार्य पंडित वाडीलाल शिवराम नायक

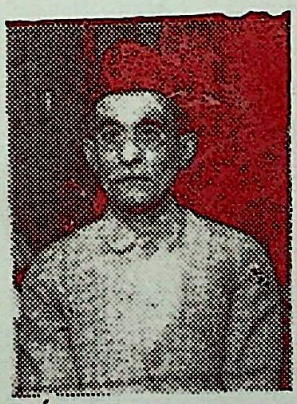

जिनके संबंध में पं. भारखण्डेजी का अमर कथन है–"मैं ऐसा कुछ नहीं जानता जो मैंने वाडीलाल को सिखाया न हो।"

जन्म–सं० १९३८

गो० सं० २००३

अखिल भारतीय पुष्टि भागीय कीर्तन संगीत संमेलन, अहमदाबाद–१९५५

बाँये से दाँये बैठे हुए : १. श्री लक्ष्मणप्रसादजी चतुर्वेदी; २. सेठ जमनादास जरीवाला; ३. श्री शिवकुमारजी चतुर्वेदी; ४. श्री गोविन्दरामजी बुरहानपुरकर; (५) श्री मन्नालालजी मुखियाजी (कांकरोली), ६. श्री चंपकलालजी नायक, ७. श्री पुरुषोत्तमजी पखावजी (नाथद्वारा); ८. श्री भगवती प्रसादजी (धांग्रवा.)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation Chennai

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

चित्रपरिचय

पं. श्री चम्पकलालजी को विचार आया कि पुष्टिमार्गीय संगीत-परम्परा से गानेवाले व्यवसायी एवं अव्यवसायी कीर्तनकार अदृश्य होते जा रहे हैं। जो विद्यमान हैं उनको एकट्ठा किया जाय और एक मञ्च पर लाकर उनकी विद्या का परिचय सुलभ होना चाहिये। इस विचार को मूर्त करने का उन्होंने यह सम्मेलन करके प्रयास किया था।

यहाँ सामने अमदावाद के भारतभुवन थियेटर में सन १९५५ में "पुष्टिमार्गीय संगीत-सम्मेलन" हुआ था उसमें जिन महानुभावों ने आ कर प्रत्यक्ष योगदान दिया था उन सबों का दर्शन इस चित्र में सुलभ हो रहा है। सबों के नाम तो यहाँ दिये जाते नहीं हैं। जो प्रमुख थे और अगली पंक्ति में बैठे हैं उनके नाम इस प्रकार हैं।

बाईं ओर से १. श्री लक्ष्मणप्रसाद चौबे, २. श्री जमनादासजी जरीवाला, ३. श्री शिवकुमारजी चौबे, ४. श्री गोविन्दरावजी बरहानपुरकर-पखवाजी, ५. श्री मन्नालालजी कीर्तन-मुखियाजी, ६. पं. चम्पकलालजी नायक, ७. श्री पुरुषोत्तमजी पखवाजी ८. श्री भगवतीप्रसादजी भट्ट

तदुपरान्त अमदावाद-बड़ेमन्दिर के कीर्तनकार श्री चुनीलालजी, सूरमण्डल के निष्णात श्री बाबूभाई (नासिक), श्री पुरुषोत्तमदास गान्धर्व, श्रीकृष्णदासजी पखवाजी (बुरहानपुर), इत्यादि तथा अन्य कलाकार भी पिछली पंक्तिमें।

Digitized by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौली
वाराणसी-5

प्रास्ताविक

ई. स. सोलहवीं शती के आरम्भ से ले कर ई. स. १९५० तक के ४५० वर्षों में पुष्टिमार्गीय संगीत का जो विकास हुआ वह इन तीनों ग्रन्थों में पं. चम्पकलालजी नायकने दे दिया है।

इस तृतीय ग्रन्थ से पं. चम्पकलालजी नायकने 'अष्टछापीय भक्ति-संगीत-उद्भव और विकास' के विषय में लिखने की जो प्रतिज्ञा की थी वह पूर्ण होती है। इस तृतीय ग्रन्थ की अपनी निजी विशिष्टता है। इस ग्रन्थ में पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में गाये जाते पदों में द्वितीय ग्रन्थ में जो बाकी रह गये थे उस विषय में लोगों की मांग आने के कारण वैसे करीब पचास पद स्वरलिपि के साथ दिये गये हैं। वह तो एक बात हुई। विशिष्टता यह है कि दिये गये प्रत्येक पद की स्वरलिपि देने के बाद उसी बन्दिश और समान स्वरूप में गाये जाने वाले करीब २५० पदों की प्रथम पंक्ति वहां वहां दी गई है। इसका लाभ है कि कीर्तनगायकों को समान पद्धति के अन्य गाये जाने वाले सभी पदों की गेयता आसान बन जाती है। यह कार्य आज तक हुआ ही नहीं था इस कारण पं. नायक को जितने धन्यवाद दिये जायँ इतने कम हैं।

इस ग्रन्थ को पं. नायकजी ने आखिर में ८ जितने परिशिष्ट दे कर पूर्ण किया है। परिशिष्ट-१ में उन्होंने अष्टछापीय कीर्तनगान और साहित्य का संक्षेप में परिचय दे कर कवि एवं कीर्तनकारों की सूची में श्रीमहाप्रभुजी के १९ एवं श्रीगुसांईजी के २१ शिष्य गायकों का समावेश किया है। परिशिष्ट-२ में हवेली-संगीत का अभ्यास करनेवालों के लिए आवश्यक जानकारी बताई गई है। परिशिष्ट-३ में ढाढीलीला एवं जोगीलीला का परिचय दिया है। परिशिष्ट-४ में नित्यपद, वर्षोत्सव के पद एवं वसन्त-धमार के पदों के क्रमशः तीन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग्रन्थ सम्प्रदाय में प्रचलित हैं उस विषय में जानकारी दी है। परिशिष्ट–५ में (१) नटनारायण का पद रह गया था वह स्वरलिपि के साथ बताया है और (२) अष्टछापीय कीर्तनसंगीत–परम्परा में ७४ प्रचलित रागों का अर्वाचीन दृष्टि में १० थाटों में जो विभागीकरण प्रचलित बना है वह बताया गया है।

परिशिष्ट–६ पुष्टिमार्गीय ध्रुपदगान क्या है यह विस्तार से बताता है। यह परम्परा मात्र पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की ही विशिष्टता है।

परिशिष्ट–७ में संगीत सम्प्रदाय में कौनसा है वह बताने के साथ साथ 'धोळ–गान' का स्वरूप क्या है वह बताया गया है। यह हवेली–संगीत का विषय नहीं है यह स्पष्ट रूप में कहा है।

यहां बीचमें पूर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ दूसरे का शुद्धिपत्र दिया गया है, बाद में परिशिष्ट–८ है, जिसमें पदों में प्राप्त व्रजभाषा के कठिन शब्दों के गुजराती हिन्दी पर्याय दिये हैं।

आखिर में परिशिष्ट–९ दिया है, जिसमें पखवाज (मृदंग) के तालों का परिचय दिया गया है। बस्तुतः सम्प्रदाय में कीर्तनों के साथ पखवाज़ का ही प्राधान्य है, तबलों का नहीं। दोनों के ठेकों में भी अन्तर है। गम्भीरता मात्र पखवाज में है। इसके तालों के ठेके से उसका परिचय सुलभ होता है। पं. नायकजी ने बचपन में पखवाज के जिन तालों का अध्ययन किया था वे ही ये ताल हैं। पिताजीने एवं श्री पूंजीरामजी ने इन्हीं तालों का ज्ञान आवश्यक गिना था यह नोंधपात्र बात है।

मैं समझता हूँ कि कीर्तन सीखने वालों के लिए एवं शोध करने वालों के लिए जो कुछ भी जरूरी है वह सब देने का इन ग्रन्थों में पं. नायकजी का प्रयत्न है।

अमदावाद–३८०००६ केशवराम का. शास्त्री

दि. ५–५–१९८७

❋

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भारतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

कीर्तनाचार्य और संगीताचार्य पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक का

जीवन-परिचय

ले. डा. चीनुभाई ज. नायक : अनु. डा. हरगोविन्द चं. नायक

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में संगीत का अर्थ है गायन, वादन और नृत्य का समुच्चय। तीनों कलाएं परस्पर का आधार ले कर विकसित हुई हैं। इन तीनों कलाओं के साथ जिस जाति का जन्म-जात सम्बन्ध है और जो इन कलाओं के प्रदर्शन में अत्यन्त कुशल है उस नायक-भोजक समवाय के संगीताचार्य पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक इस परम्परा के एक अनमोल रत्न हैं। उनकी कौटुम्बिक परम्परा में भक्ति-संगीत विरासत के रूप में चला आ रहा है।

कौटुम्बिक परम्परा :

चम्पकलालजी का जन्म उत्तर गुजरात के महेसाना जिले के पाटन नगर में १९ अप्रेल १९०९ के दिन हुआ था। पिता का नाम छबीलदास और माता का नाम रेवाबेन था। उनका परिवार वैष्णवी दीक्षा से सम्पन्न था। उनके चाचा हीराचन्द कीर्तनिया थे। पाटन-स्थित श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिर में वे भक्ति-संकीर्तन किया करते थे। चम्पकलालजी ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा छठी (आज की नवीं) कक्षा तक की पाटन में ही प्राप्त की। बचपन से ही वे अपने पिताजी के साथ मन्दिर में जाया करते थे और संगीत के संस्कार पाते रहते थे। छः वर्ष की छोटी-सी उम्र से ही उन्होंने सारंगी के साथ सूर भरना शुरू कर दिया था। पाटन के श्रीद्वारकानाथजी के उस मन्दिर में अमदावाद, कांकरोली और अन्य वैष्णवपीठों के आचार्य पधारते थे वे छबीलदास की कीर्तनकला और संगीतकला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से प्रभावित होकर अपने मन्दिरों में प्रसंगानुसार उन्हें निमन्त्रित भी करते थे। छबीलदासजी की आवाज़ बुलन्द और सूरीला थी। किशोर चम्पकलाल अपने पिताजी के साथ मन्दिर में मृदंगवादन कर सके इसी लिए उनकी तालीम के लिए उसी समय दरमियान पूंजीराम उस्ताद को एक वर्ष के लिए मन्दिर की ओर से नियुक्त किया गया। इस तालीम के पश्चात् वि. सं. १९७६ (ई. स. १९२०) में एक पखवाजी के रूप में मन्दिर की सेवा में चम्पकलालजी को लिया गया था। गोपाल नायक-घराने के उस्ताद श्री मणिलालजी से उन्होंने गायकी की तालीम प्राप्त की थी।

अपने राज्य में संगीतकला के प्रोत्साहन के निमित्त बड़ौदा राज्य के महाराजा श्रीमन्त सयाजीराव गायकवाड़ ने राज्य के चार नगरों में संगीतशालाएं प्रारम्भ कीं, जिनमें से एक पाटन में थी। इन संगीतशालाओं पर निगरानी रखने की जिम्मेवारी उस्ताद मौलाबक्ष को सौंपी गई थी। ग्यारह वर्ष की उम्र में चम्पकलालजी इस संगीतशाला में दाखिल हुए और तीन वर्षों तक संगीत की तालीम ले कर मध्यमा की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने पिताजी के साथ चम्पकलालजी को समय-समय पर श्रीनाथद्वारा, कांकरोली आदि तीर्थों में जाने का अवसर मिलता रहता था और इस प्रकार वैष्णव कीर्तनकारों के परिचय में आना होता रहता था।

संगीतशाला में प्राप्त तालीम, वैष्णव कीर्तनकारों का संगीत, परम्परागत संगीत और अन्य मन्दिरों में कीर्तनकारों के कण्ठों से गाये जाने वाले कीर्तनों में जो अन्तर दिखाई पड़ता था उसके प्रति संशोधनात्मक वृत्ति का अभिगम चम्पकलालजी में बचपन से ही अंकुरित हो गया था।

चम्पकलालजी का प्रथम व्याह राधनपुर के आश्रित संगीतकार श्री भाईलाल त्रिभोवनदास नायक की सुपुत्री अदिति(आन्नदी) के साथ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वि.सं. १९८३ (ई.स. १९२७) में हुआ था। अपनी प्रथम पत्नी से तीन सन्तानें—हसुबेन, बालकृष्ण और रमेशचन्द्र—हुईं। प्रथम पत्नी के निधन के पश्चात् भावनगर के सुप्रसिद्ध राजगायक श्री दलसुखराम वस्ताराम भोजक की पौत्री प्रसन्नबेन के साथ वि.सं. १९९८ (ई.स. १९४२) में लग्न सम्पन्न हुआ। इनसे पांच सन्तानें–घनश्याम, जगदीश, भानुमती, प्रवीणा और हेमांगिनी–हुईं।

चम्पकलालजी ने वि.सं. १९७४ (ई.स. १९१८) से वि. सं. १९८३ (ई.स. १९२७) तक पाटन के श्रीद्वारकाधीशजी के मन्दिर में पखवाजी के रूप में सेवाएँ दीं। तत्पश्चात् वि. सं. १९८४ (ई.स. १९२८) से वि.सं. १९८६ (ई.स. १९३०) तक महेसाना और विसनगर के श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिरों में तथा लालीबा के मन्दिर, बम्बई में कीर्तनिया के रूप में सेवाएं दीं। उसके बाद वे अमदावाद में स्थिर हुए। अमदावाद के रायपुर चकला में आये हुए श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिर में कीर्तनिया के रूप में नियुक्त किये गये। वि.सं. १९९२ (सन १९३६) में वे साबरकांठा के मोड़ासा हाईस्कूल में पूरे समय के संगीतशिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। यहाँ लगभग दो वर्षों तक कार्य कर के पुनः अमदावाद आये और अमदावाद की खानगी प्राथमिक शालाओं में खण्ड–समय के शिक्षक के रूप में सेवा देनी प्रारम्भ की। सात वर्षों के पश्चात् वि.सं. १९९९ (सन. १९४३) में वे कांकरोली के श्रीद्वारकेश संगीत विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में लगे। यहाँ तीन वर्षों तक कार्य किया। पुनः वे अमदावाद आये और वि.सं. २००२ (सन. १९४६) में श्रीमती लीनाबेन मंगळदास के होम स्कूल में खण्ड–समय के संगीतशिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। इस के पूर्व सन १९१७ से वे पं. वाडीलाल शिवराम नायक से भातखण्डे–पद्धति का अभ्यास करते रहे। उनका यह अभ्यास सात वर्षों तक चलता रहा। पण्डितजी से उनका योग कराने वाले प्रो. रसिकलाल छो. परीख थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सर्वश्री पण्डित वाडीलाल शिवराम, रसिकलाल छो. परीख, जयशंकर "सुन्दरी," गीताबेन मायोर, पण्डित के. का शास्त्री, डा. मच्छर और आचार्य श्री एम. एस. पण्डित की प्रेरणा से चम्पकलालजी को यह विचार आया कि भातखण्डे-संगीत-पद्धति की तालीम देने वाला एक विद्यालय होना चाहिए। ई.स. १९४८ में इस विचार को मूर्त रूप मिला और अमदावाद में प्रार्थनासमाज, रायखड़ में "भातखण्डे संगीत महाविद्यालय" का प्रारम्भ हुआ। भारतीय संसद के प्रथम स्पीकर दादा साहब गणेश वासुदेव मावळंकर की अध्यक्षता में और भातखण्डेजी के शिष्य पण्डित एस. एम. रातांजनकर के शुभ हाथों विद्यालय का उद्घाटन हुआ। विद्यालय के प्रारम्भ में २५ विद्यार्थी थे और बम्बई राज्य के शिक्षा-विभाग की ओर से संस्था को मान्यता भी प्राप्त हुई थी। यह महाविद्यालय १२ वर्षों तक चला। किन्तु शिक्षार्थियों की संख्या कम हो जाने के कारण विवश हो कर इसकी प्रवृत्ति बन्द करनी पड़ी। इसके पश्चात् एस. एल. यू. महिला कालेज में खण्ड-समय के संगीत-शिक्षक के रूप में ई.स. १९६७ तक सेवाएँ दीं। एस. एन. डी. टी. युनिवर्सिटी की स्नातक-कक्षा तक संगीत परीक्षक के रूप में नियुक्त होते रहते थे। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद (प्रयाग) संगीतसमिति की ओर से भी परीक्षक के रूप में उनकी नियुक्ति होती रहती थी। महिला कालेज गुजरात युनिवर्सिटी के साथ संलग्न हो जाने के बाद वे उसकी सेवा में से निवृत्त हो गये।

ई.स. १९४० से आकाशवाणी-अमदावाद से वे प्रायः हवेली-संगीत के कार्यक्रम देते रहे हैं।

ई.स. १९५५ में अमदावाद में भारतभुवन थियेटर में पुष्टिमार्गीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें चम्पकलालजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके लिए उन्हें शिल्ड अर्पित किया गया था।

ई.स. १९६५ में पोरबन्दर के गो. श्री माधवरायजी महाराजश्री के द्वारा दिग्दर्शित "गोविन्दस्वामी" चलचित्र में चम्पकलालजी ने मोगल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सम्राट अकबर की भूमिका की और गो. श्री रसिकरायजी के साथ इसके संगीत का दिग्दर्शन भी किया । यह चलचित्र वैष्णव समाज में पर्याप्त समादर प्राप्त कर चुका है ।

पं. चम्पकलालजी के जीवन में सर्वश्री रसिकलाल छो. परीख, जयशंकर "सुन्दरी" और पं. वाडीलाल शिवराम नायक के परिचय ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । इस परिचय के निमित्त पं. केशवराम का. शास्त्री थे । चम्पकलालजी के पिता श्री छवीलदास और पं. श्री केशवराम के पिताश्री आचार्य काशीराम शास्त्री, दोनों कीर्तनिया होने के कारण, समय-समय पर परिचय में आते रहते थे । यह परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठ हुआ । इस समय दरमियान चम्पकलालजी की प्रथम पुस्तक "संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन" गुजराती में वि.सं. १९९१ (ई.स. १९३५) में प्रकाशित हुई । श्री रसिकभाई को यह प्रकाशन अत्यन्त पसन्द आया ।

शैक्षणिक सिद्धियाँ :

चम्पकलालजी ने माध्यमिक कक्षा ६ (आजकी कक्षा ९) तक अभ्यास किया था । किंतु संगीत के सम्बन्ध में कौटुम्बिक परम्परा को सुरक्षित रखते हुए अपने पिताजी तथा वैष्णव आचार्यों की प्रेरणा से स्वपुरुषार्थ से 'बी. म्युजिक' की उपाधि भातखण्डे युनिवर्सिटी आफ इण्डियन म्युजिक, लखनौ से प्रथम वर्ग में ई.स. १९४४ में प्राप्त की थी । इसके पूर्व वड़ौदा कालेज से १९४० में संगीत-डिप्लोमा प्राप्त किया था । चम्पकलालजी की भक्ति-संगीत-साधना से प्रभावित होकर कांकरोली के महाराजश्री ने उन्हें "संगीत-कीर्तनाचार्य" का विरुद ई.स. १९४८ में प्रदान किया था । वैष्णव आचार्यों और कई सामाजिक संस्थाओं के द्वारा श्री चम्पकलाल का बहुमान किया गया है जिनमें "रोटरी क्लब आफ अमदावाद", "श्री सयाजीराव गायकवाड़ हीरक महोत्सव समिति", "वैष्णव समाज, अमदावाद", "श्री त्रागाळा भोजक हितवर्धक समाज. अमदावाद," "श्री समस्त नायक भोजक केळवणी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंडळ, महेसाना," "वैष्णवसभा, अमदावाद," अमदावाद के श्री व्रजरायजी महाराज, सुरत के गोस्वामी श्रीव्रजरत्नलालजी महाराज, अमदावाद के संगीतप्रेमी नागरिकों की ओर से संगीताचार्य राजाभैया पूछवाले, पद्मश्री डा. एस. एम. रातांजनकर, "पुष्टिपराग विहार, सिहोर" आदि उल्लेखनीय हैं ।

उन्होंने वीस के लगभल अमूल्य ग्रन्थ गुजरात के संगीतसमाज तथा वैष्णवसमाज को प्रदान किये हैं । इन ग्रन्थों की सूची इस ग्रंथ में अलग से प्रकाशित की गई है ।

अपनी ढलती हुई उम्र में भी "अष्टछापीय भक्तिसंगीत" के तीन भागों (पांच खण्डों) का प्रकाशन उनकी संगीतसाधना तथा पुष्टिमार्गीय भक्ति संगीत के प्रति उनके प्रेम और आदर का सूचक है । अभी भी "भारतना हवेली संगीतमां गुजरातनुं प्रदान" ("भारत के हवेली-संगीत में गुजरात का प्रदान) विषय की संशोधनात्मक ग्रन्थ–योजना की अभीप्सा है । इसके अतिरिक्त "गुजराती नाटकोनां गीतोनी सरगम–भा. २" की हस्तप्रत आपके पास तैयार है, जिसे प्रकाशित करने की भी योजना है ।

चम्पकलालजी अपने ७८ वर्ष पूरे कर ७९ वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं । आँखों की रोशनी ने भी प्रायः जवाब दे दिया है, फिर भी स्मृति इतनी सचेष्ट और सतेज है कि यदि योग्य सहायक और प्रोत्साहक मिल जायँ तो उक्त योजनाओं के सम्बन्ध में आपका उत्साह आज भी बुलन्द है । श्रीमहाप्रभुजी की कृपा से आपकी यह इच्छा परिपूर्ण हो ऐसी शुभ कामना के साथ निरामय दीर्घायु की मंगल कामना । (डा. चीनुभाई नायक ने यह लेखन गुजराती भाषा में किया था । डा. हरगोविन्द नायक ने इसका हिन्दी अनुवाद करके अपनी सेवा दी, जो धन्यवादार्ह है ।)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दो शब्द

भारतीय संगीत में "शिष्ट संगीत" और "लोक-संगीत" ऐसे दो प्रकारों की धाराएँ प्रारम्भ से ही बहती आई हैं। भारतवर्ष में प्रारम्भ से ही धर्म ही संगीत के प्राण तथा संगीत ही धर्म की वाणी मानी जाती रही है। इस तथ्य का नियमबद्ध पालन पुष्टि-सम्प्रदाय में यथाशक्ति देखा जाता है। सम्प्रदाय के उद्गम के साथ ही भगवत्सेवाक्रम के साथ तद्रूप हुए संगीत को अष्टछाप की या अष्टछापपरम्पराप्राप्त भक्त कविवरों की अनुभववाणी कहें या शास्त्रीय संगीत या हवेली-संगीत कहें, यह सब भारतीय संगीत में आधार-रूप ऐसा "शिष्ट संगीत" ही है। यह सुप्रसिद्ध है कि सम्प्रदाय ने इसमें अमूल्य एवं अखूट प्रदान किया है।

पुष्टिसम्प्रदाय की सेवाप्रणाली जितनी भावात्मक है इतनी ही वेदोक्त भी है। सेवाप्रणाली के मुख्य अंग संगीत, सामग्री और शृंगार–शोभन माने गये हैं। "यथा देहे तथा देवे" के स्थूल सिद्धान्त का पालन इसी सम्प्रदाय में यथार्थ रूप से पाया जाता है।

आयुर्वेद तथा गान्धर्ववेद को लक्ष्य में रख कर सेवाप्रणाली का अनोखा सर्जन किया गया है। जैसे वर्षभर की ऋतुओं के अनुसार संगीत सामग्री तथा वेशभूषा आदि का जो विनियोग किया गया है वह अन्य सम्प्रदायों से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसी कारण सम्प्रदाय की राग, भोग, शृंगार आदि ललित कलाओं के प्रवर्त्तन में अग्रस्थान आ. श्रीवल्लभाचार्यजी के सुपुत्र एवं द्वितीय आचार्य

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गो. श्री. विट्ठलनाथजी का तथा इसके प्रचलन में आपके सात बालकों आदि प्राचीन गोस्वामियों का श्रेय माना जाता है।

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। इस जगत् में अस्तित्व रखने वाली प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन आता रहता है। मानव-जाति के इतिहास में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोक-कलाओं तथा भौगोलिक, प्राकृतिक सभी प्रक्रियाओं में परिवर्तन आते रहे हैं तदनुसार साम्प्रदायिक संगीतप्रणाली में भी परिवर्तन का आ जाना स्वाभाविक है।

श्रीनाथजी के मेवाड़ पधारने के पूर्व तक सभी सेवकगण एवं वैष्णवसमाज सम्प्रदाय की उपर्युक्त सेवाप्रणाली के अनुसार सेवा में तत्पर रहते थे।

किन्तु श्रीनाथजी के मेवाड़ पधारने के पश्चात् समय की गति के साथ-साथ काल के प्रभाव से सम्प्रदाय की परम्परागत सेवा-प्रणाली के आचरण में क्रमशः परिवर्तन होता रहा। फलतः परम्परा के अग्रगण्य कीर्तनकारों की संख्या क्रमशः कम होती चली। सिखाने वालों की कमी के साथ परम्परागत कीर्तनशैली के प्रति वैष्णवों की रुचि कम होती रही और उसके स्थान पर उस कालमें प्रचलित खयाल, ठुमरी आदि का प्रयोग बढ़ता रहा।

साम्प्रदायिक शुद्ध शास्त्रीय कीर्तनशैली के सीखने-सिखाने वालों की कमी होने के कारण संगीत की प्राचीन गुरुमुखी विद्या भी लुप्त हो गयी।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है तदनुसार प्राचीन गुरुमुख संगीतपरम्परा में भी परिवर्तन आ गया।

आधुनिक विज्ञानयुग में विद्या, कला, हुन्नर इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्राचीन शिक्षणपद्धति के स्थान पर निष्णात संशोधनकारों ने जो नयी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिक्षा-पद्धति अपनाई है और अपना रहे हैं इसका देशभर में स्वीकार हो चुका है। यह नई पद्धति साधन, समय, सरलता और आर्थिक दृष्टिसे इस युग में आशीर्वाद-समान मानी जायगी।

संगीतकला के विषय में देखा जाय तो संगीत की गायन वादन कला का जितना प्रचार और जानकारी समाज में दृष्टिगत होती है उसकी तुलना में ४०-५० वर्षों पहले केवल व्यवसायी समाज के तथा कुछ शिष्ट समाज के गृहस्थों में ही इसकी जानकारी थी।

आधुनिक युग में समाज में भी संगीत की विशेष जानकारी का श्रेय संगीत की थाट पद्धति एवं स्वरलिपिबद्ध इस नूतन शिक्षाप्रणाली को है।

इस नूतन स्वरलिपिबद्ध शिक्षापद्धति का भारतवर्ष में सबसे प्रथम आरम्भ प्राचीन वड़ौदा राज्य के श्रीमन्त सयाजीराव महाराज के प्रथम राज्यगायक मौलाबक्षजी द्वारा किया गया। इसके पश्चात् पं. आदित्यरामजी (जामनगर), पं. डाह्यालाल शिवराम (भावनगर) आदि पण्डितों ने इस नयी पद्धति में प्रारम्भिक कार्य किया।

इसके पश्चात् इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य विष्णुद्वय (पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर) ने किया है।

यदि चालू शती में संगीतोद्धारक विष्णुद्वय द्वारा थाटपद्धति एवं स्वरलिपि की नयी शिक्षापद्धति का प्रचारक और प्रसार न होता तो प्राचीन घरानों की परम्परागत हजारों चीजों की रागतालबद्ध बन्दिशों के दर्शन दुर्लभ हो जाते। यही नहीं सैंकड़ों नगरों में सैंकड़ों संगीतशालाओं द्वारा हजारों विद्यार्थियों तक जानकारी का जो प्रवाह आज देशभर में पहुंच रहा है वह कदापि सम्भव न होता।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर, जिस समय हमारे मन्दिरों में अष्टछापीय परम्परागत संगीत लुप्त हो रहा है उस समय इस प्रकार के सैंकड़ों कीर्तनपदों की रागतालबद्ध बन्दिशों को स्वरलिपिबद्ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करना जरूरी है। इससे न केवल वैष्णवसमाज, किन्तु संगीतक्षेत्र के जानकार महानुभाव भविष्य में भी इससे लाभान्वित होंगे।

"अष्टछापीय भक्तिसंगीत" के पूर्व प्रकाशित दो ग्रन्थों के सम्बन्ध में पू. पा. गोस्वामी महाराजों, विद्वानों, संगीत के मर्मज्ञों तथा वैष्णव-समाज के द्वारा न केवल सुन्दर तथा प्रोत्साहक प्रतिभाव प्राप्त हुआ, कि अपि तु प्रशंसा और अभिनन्दन के पत्र भी प्राप्त हुए।

इसके साथ कुछ उपयोगी और आवश्यक सूचन भी प्राप्त हुए जिनमें: (१) द्वितीय भाग के खण्ड ३ और ४ में दिये गये स्वरलिपि-बद्ध कीर्तनों के अतिरिक्त कुछ महत्त्व की बन्दिश वाले आवश्यक कीर्तनों का समावेश, (२) द्वितीय और इस तृतीय भागों में प्रसिद्ध स्वरलिपिबद्ध कीर्तनों जैसी समान बन्दिशों में गाये जाने वाले कीर्तनों की प्रथम पंक्ति की सूची तथा (३) दोनों ग्रन्थों में प्रसिद्ध कीर्तनों की ब्रजभाषा के कठिन शब्दों के अर्थ दिये जायें—ये तीन प्रमुख सूचन थे।

ये सूचन उपयोगी होने पर भी मेरी वृद्धावस्था तथा विशेष कर आंखों की घटी हुई रोशनी की तकलीफ के कारण दो—चार महिनों तक कुछ निश्चित विचार नहीं कर सका। किन्तु "मोहि बल है दोउ ठौर को। एक भरोंसो हरिभक्तन को दूजो नन्दकिशोर को" पंक्ति स्मरण आते ही शिथिल मन को श्रद्धा की शक्ति और विश्वास का सम्बल प्राप्त हुआ। इस के साथ भगवत्कृपा से आर्थिक चिन्ता और लेखन-कार्य की कठिनाई स्वजनों द्वारा हल होने से तृतीय भाग का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

इस ग्रन्थ में उक्त तीनों सूचनों का उचित समावेश किया गया है। इनमें दूसरे सूचन के सम्बन्ध में आज से करीबन ५२ वर्षों पूर्व गुजराती भाषा में प्रकाशित मेरे प्रथम ग्रन्थ "संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन" की प्रस्तावना लिख कर मुझको अनुगृहीत करने वाले, सम्प्रदाय के प्रसिद्ध विद्वान् गो.वा., प्रो. मगनलाल गणपतिराम शास्त्री ने

*

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उस समय मौखिक रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया था। उनकी पुनीत भावना को आज इस ग्रन्थ में साकार करते हुए मुझे हर्ष के साथ सन्तोष का अनुभव हो रहा है।

मेरे उक्त प्रथम प्रकाशित गुजराती ग्रन्थ के सन्दर्भ में एक और उपयोगी सूचन पखवाज(मृदंग) के तालों के सम्बन्ध में भी मिला था। सूचन यह था कि पखवाज के प्रचलित प्रसिद्ध तालों की शिक्षा के विना साम्प्रदायिक कीर्तनपरम्परा अधूरी है। वह गुजराती ग्रन्थ अब अप्राप्य है। अतः उस ग्रन्थ में दिये गये महत्त्व के पखवाज के तालों का समावेश हिन्दी ग्रन्थ में भी किया जाय। इस सूचन की उपयोगिता को लक्ष्य में रख कर पखवाज (मृदंग) के कुछ प्रचलित एवं प्रसिद्ध तालों का एक परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोड़ दिया गया है।

इन महत्त्व के सूचनों के उपरान्त ग्रन्थ की उपयोगिता को लक्ष्य में रख कर कुछ आवश्यक विषयों के अन्य परिशिष्ट भी जोड़ दिये गये हैं।

सम्प्रदाय की प्राचीन कीर्तनों की बन्दिशों को संगीत की इस नई शिक्षापद्धति के अनुसार स्वरलिपिबद्ध कर भविष्य के जिज्ञासुओं के लिए सुलभ बनाने का विनम्र प्रयास इस ग्रन्थमें किया गया है तब एक विशेष सूचन करना भी आवश्यक समझता हूँ। मेरा विनम्र सूचन है कि वर्तमान परिस्थिति में प्राचीन कीर्तनशैली का जब कि लोप हो चुका है तब संगीत की स्वरलिपिबद्ध इस नूतन-शिक्षाशैली की सहायता से शिक्षा देने वाले नूतन संगीतज्ञ कीर्तनिये तैयार किये जायँ। इस प्रकार यदि शिक्षा दे सकने में समर्थ ऐसे थोड़े-बहुत कीर्तनिये भी तैयार होंगे तो उन्हीं के द्वारा भविष्य में सैंकड़ों कीर्तनिये तैयार हो सकेंगे।

यह मात्र सूचन नहीं, मेरा स्वप्न भी है।

कांकरोली से मुक्त होने के पश्चात् इस ग्रन्थ के लेखक ने लगभग ४० वर्षों पूर्व प्राचीन कीर्तनपरम्परा के कीर्तनिये तैयार करने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की एक योजना बनाई थी जिसको कांकरोली तथा सुरत के अधिपति महाराजश्रियों का सहकार भी प्राप्त हुआ था। इस दिशा में तत्कालीन कीर्तनशैली के गायक-वादक कीर्तनकारों का एक सम्मेलन श्री श्रीमान् विट्ठलदास सी. शाह तथा सुप्रसिद्ध शास्त्री गो. वा. श्रीवसन्तरामभाई की सहायता से इस लेखक ने सर्वप्रथम १९५५ में आयोजित किया था। किन्तु किसी कारण से यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। योजना का प्रारूप और उस दिशा के सन्निष्ठ प्रयासों का इतिहास आज भी सुरक्षित है।

उसी इच्छा को स्वरलिपिबद्ध कर चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने का जो प्रयास आज इस ढलती उम्र में भी सम्भव हो सका है इसे मैं केवल भगवदिच्छा और कृपा का ही चमत्कार मानता हूँ। अतः मेरे उक्त सूचन के सम्बन्ध में सम्प्रदाय की पीठों के अधिपति गोस्वामीजी और धनाढ्य वैष्णव सेवक इस नूतन स्वरलिपिबद्ध पद्धति की सहायता से भविष्य में इस सम्बन्ध में जरूर प्रयास करेंगे और वही मेरे इस विनम्र प्रयास की सार्थकता होगी।

इस तृतीय ग्रन्थ के प्रकट होने में रू. ३०००/- दे कर शेष खर्च को पूरा करने की परमकृपा गो. श्री १०८ श्रीश्याममनोहरजी महाराज (बम्बई-किशनगढ़) ने की उसके लिए बहुत उपकृत हुआ हूँ। उस पूर्व पंचमपीठाधीश्वर गो. श्री १०८ श्रीगोविन्दलालजी महाराज से उनके पुत्र चि. गो. श्री गिरिधरलालजी द्वारा रु. ११००/-, गोस्वामी श्री १०८ चन्द्रगोपालजी महोदय रु. ११०० और राधावल्लभीय सम्प्रदाय के आचार्य गो. श्री लालूजी महाराज ने भी रु. ५००/- देने की कृपा की। इन सभी आचार्यों का ऋणस्वीकार करता हूँ। इनके सिवा वैष्णवों में से भी निम्न वैष्णवों ने सहाय दी है-

१ स्व. मणिलाल छगनलाल शाह (कपडवंज) रु. ३०००/-
२ एक वैष्णव रु. १०००/-
३ शेठ कीलाचंद देवचंद चेरिटी ट्रस्ट रु. १०००/-
४ गीताबेन साराभाई रु. ५००/-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नारणपुरा वैष्णव समाज (अहमदावाद) रु. ७०१-००
इन सबों का मैं ऋणी हूँ ।

आचार्य डॉ. चीनुभाई ज. नायक ने मेरा जीवनपरिचय लिख कर छपवाने के लिए दिया इसके लिए उनका भी मैं आभारी हूँ ।

इस ग्रन्थ की मुद्रणक्षम प्रतिलिपि तैयार करने में प. भ. भाई श्री जनकभाई ही. पटेल का एवं डॉ. हरगोविन्द सी. नायक का भी सानन्द आभार व्यक्त करता हूँ ।

तदुपरान्त मेरे परिवार में मेरी पत्नी तथा निकट के परिजनों के मूक किन्तु सक्रिय सहयोग को मैं भूल नहीं सकता ।

इसके साथ पू. पा. गुरुदेव का श्लोक समय पर भेज कर गो. श्री तृतीय पीठाधीश्वर श्री व्रजेशकुमारजी महाराजने मुझे उपकृत किया है ।

मेरे पूर्व ग्रन्थों में विद्या, संगीत, कला, कीर्तन सम्प्रदायकी प्रणालि आदि जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ है वह गुरुजनों की कृपा का ही फल है। अन्यथा मेरे जैसे अल्पज्ञ की सामर्थ्य के बाहर की वस्तु थी। इन सबों का ऋणस्वीकार यथास्थान किया गया है । फिर भी स्मृतिदोष के कारण किसी के नाम जाने-अनजाने छूट गये हों उनकी क्षमायाचना के साथ मेरे पितृचरण व गुरुचरणों में वन्दन करते हुए अपने इस ग्रन्थ का समापन करता हूँ।

अमदावाद-३८००१४
ता. २४-४-१६८७
श्रीवल्लभाचार्यप्राकट्यदिन

चम्पकलाल छ. नायक

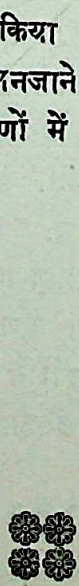

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनुक्रमणिका

तृतीय खण्ड

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(१)	
	राग–केदार,	३
१	वंदू श्री विठ्ठलवर सुंदर	
	(२)	
	राग–भैरव,	४
२	मंगलमंगलम् व्रजभुवि	
	(३)	
	राग–रामकली,	८
१	पिय संग रंग भरी करि कलोलें	
२	लालको मुख देखन हों आई	१०
	(४)	
	राग–विभास,	१२
१	प्रातसमें नवकुंजद्वार व्है	
२	कोनके भुराए भोर आए हो	१४
	(५)	
	राग–ललित,	१६
१	क्यों मोंहन दरपन नहिं देखो	
	(६)	
	राग–मालकौंस,	१८
१	मोरी भरी मटुकियाँ ले गयोरी	
२	माई रंग रंगे हो लाल	१९
	(७)	
	राग–देवगंधार,	२२
१	सांवरो मंगलरूपनिधान	
२	नेन भरि देखो नंदकुमार	२३
	(८)	
	राग–अल्हैया विलावल,	२५
१	पूजाविधि गिरिराजकी	
	(९)	
	राग–धनाश्री,	२७
१	लालकों मीठी खीर जो भावे	
२	में अपनो मन हरिसों, जोर्यो	२८
३	मन हर ले गये नंदकुमार	३०
	(१०)	
	राग–आसावरी,	३२
१	ग्वालिन कृष्णदरस सों अटकी	
२	मेरो माई ! हरि नागर सों नेह	३३
	(११)	
	राग–टोडी,	३४
१	जेंवत दोऊ रंगभरे	

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(१२)	
	राग–सारंग,	३६
१	छाक ले आई ग्वालिन गोरी	
२	ब्रजनन लोचन ही को तारो	३७
३	मोहन जेंवत छाक सलोंनी	३९
४	तरनितनयातीर लाल गावत	४०
५	दानघाटी छाक आई	४२
६	बेठे हरि राधेसंग	४५
७	तैं मोहन को मन हर्यो	४७
८	डोल झूलत है पिय प्यारी	४९
९	नैननिमें जिन डारो गुलाल	५१
१०	घर घर ग्वाल देत हैं हेरी	५३
	(१३)	
	राग–सोरठ मल्हार, चौताल	५५
१	झूलत सूरंग हिंडोरे राधा-मोहन	
	(१४)	
	राग गौड मल्हार	
१	घूमि घूमि घटा आई	५७
	(१५)	
	राग–धूलिया मल्हार,	५९
१	जै श्रीजगन्नाथ हरिदेवा	
	(१६)	
	राग–नट मल्हार,	६१
१	अरी माई नई नई धरती	
	(१७)	
	राग–गौरी,	६४
१	नातर लीला होती जूनी	
	(१८)	
	राग–जंगला,	६५
१	बाजे बधाइयां वे सैयां	
	(१९)	
	राग–यमन,	६७
१	जियकी न जानत हो पिय	
२	लाग्यो रे लाग्यो मोसो	६९
	(२०)	
	राग–खमाज,	७०
१	स्याम जमुना बिच खेवत नाव	
	(२१)	
	राग–कान्हरो,	७१
१	सूरभी कान जगाय खरिक	
२	हरि जनमत ही आनंद भयो	७३
	(२२)	
	राग–नायकी,	७५
९	वारों मीन खंजन आलीके	
	(२३)	
	राग–अडाना,	७७
१	राधेजू झूलत रमकि रमकि	
	(२४)	
	राग–बिहाग,	७८

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१	सखियन रुचि रुचि सेज, बनाई	
२	घरि घरिको रुसनो	८०
३	नवल किसोर नवल नागरियां	८२
४	रावल के कहे गोप आज व्रज	८४
५	झूलेरी झूलेरी झूलें प्यारो लाल	८६
	(२५)	
	राग–शुद्ध बसंत,	८८
१	खेलत बसंत गिरिधरनचंद	
	(२६)	
	राग–रामकली,	८९
१	माई सोहिलरा नंद महर–घर	
	(२७)	
	२८० विभिन्न समान पदोंकी नामावली	९२
	परिशिष्ट–१ अष्टछापीय कीर्तन गान और साहित्य	११६
	परिशिष्ट–२ हवेली संगीत के उत्साहियों को आवश्यक जानकारी	१२३
	परिशिष्ट–३ (अ) ढाढी लीला	१२७
	(ब) जोगीलीला (महादेवलीला)	१३१
	परिशिष्ट–४ २८० समान पदों की नामावली के पदों की पहचान	१३४
	परिशिष्ट–५ राग–नटनारायन, ताल–चर्चरी	१३५
	परिशिष्ट–६ मंदिरों का ध्रुपदगान	१३९
	परिशिष्ट–७ धोळ	१४५
	परिशिष्ट–८ भाग–२, ३ लिपिबद्ध पदों के	१४९
	कठिन शब्दों के हिन्दी एवं गुजराती अर्थ शुद्धिपत्र पूर्वग्रंथ अ. छा. भ. सं. भाग–२ (खण्ड–३, ४) का संपूर्ण शुद्धि–पत्र	१५७
	परिशिष्ट–९ पखवाज : (मृदंग) ताल परिचय	१६९
	(अ) ठेका–बोल परिचय	
	(ब) पखवाज के आवश्यक ताल–बोल इत्यादि	
	ताल मर्यादा	१७९
	अ. छा. भ. सं. भाग–३ (खण्ड–५) का शुद्धिपत्र	१८०
	लेखक के अन्य प्रकाशन	१८४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वर-लिपि का चिन्ह परिचय

१. शुद्ध स्वरों की पहिचान के लिये कोई चिह्न नहीं है। जैसे :- ग, म

२. जिन स्वरों के नीचे-ऐसी आड़ी लकीर हों, वे कोमल समझना चाहिये जैसे रे ग ध नि

३. स्वर के ऊपर खड़ी लकीर हों तो तीव्र समझना चाहिये जैसे : म

४. (अ) जिन स्वरों के माथेपर बिन्ही हों वे तार सप्तक के स्वर हैं, जैसे :-सां रें.

(ब) जिन स्वरों के नीचे बिन्दी हों वे मन्द्रसप्तक के स्वर हैं, जैसे :-ध़ नि़

(क) बगैर बिन्दी के स्वर मध्यसप्तक के हैं जैसे :- सारे.

५. (अ) जिस स्वरके बाद-ऐसा चिन्ह जितनी वार हो वहाँ उतनी ही मात्रा तक उस स्वर को बढाना चाहिए।
जैसे :- सा -, रे -

६. स्वरों में या गीत में ‿ ऐसा अर्धचन्द्राकार चिन्ह के अन्दर लिखे हुए स्वरों को एक मात्रा काल में गाने बजाने चाहिये, जैसे :- सारे सारेग

७. एक स्वर से दुसरे स्वर पर मींड से जाने आने के के लिए ऊपर की तरफ ⌒ ऐसा चिन्ह दिया जाता है, जैसे :- मरे

ताल-चिन्ह :-

(१) × ऐसा चिन्ह गाने बजाने में 'सम' को दिखाता है। ताल में पहली मात्रा और पहलीताली को सम कहते हैं।

(२) ० यह चिन्ह खाली का है।

(३) २, ३, ४, ऐसे नम्बर क्रमशः दूसरी तीसरी और चौथी ताली बताते हैं।

(४) । मात्रा या तालों के बीच ऐसी खडी लकीर जो खींची जाती है. वे प्रत्येक विभाग या खण्ड के लिए है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

उद्भव और विकास

पंचम् खण्ड

पूर्ति

चम्पकलाल छ. नायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आवश्यक सूचना

(१) असारवा (अहमदावाद) के गोपालदास का मूँगापन अष्टछापके स्थापक श्रीविठ्ठलेश्वरने अपने चर्वित तांबूल देकर दूर किया। बादमें शीघ्र ही गोपालदासजीने काव्यमय उस समयके प्रचलित रागोंमें तथा गुजराती भाषामें नवाख्यानका जो गान किया वह सम्प्रदायके इतिहासमें सुप्रसिद्ध है, जिनमेंसे प्रथम आख्यानमें अपने गुरुकी जो वंदना कि है उसकी उसी रागमें स्वरलिपि देकर यहाँ सर्वप्रथम आरम्भ किया गया है।

(२) वन्दनाके पश्चात् यहां २० रागोंमें जो स्वरलिपियां दी गई हैं उन रागोंकी शास्त्रीय परम्परा एवम् अन्य विवरण आदि माहितीके लिये "अ. भ. संगीत–उद्भव और विकास" भा. २ की अनुक्रमणिकामें देखिये।

(३) इस ग्रन्थमें दे गये तालोंका "विवरण, मात्रा, बोल" इत्यादि भी भा. २ में प्रकाशित किये गये हैं अतः यहां पुनरावर्तन किया नहि है।

(४) इस ग्रन्थके पूर्व भाग–२ (खण्ड ३–४) में लिपिबद्ध दिये गये १८५ एवम् इस ग्रन्थकी ४५ स्वरलिपियों सहित २३० पदोंके आधार पर उसी स्वरलिपि पर आधारित अन्य नित्य, बधाई, वसन्त एवम् त्यौहार आदि प्रणालिके कीर्तन जो गाये जाते हैं उनकी संख्या २७० का संशोधित संग्रह यहाँ दिया जा रहा है, जिससे लगभग ५०० कीर्तनों की बंदीशोंका खयाल जिज्ञासुओंको एवम् शिखनेके उत्साही वैष्णवोंको सरल होगा।

पृष्ठ १२ पर विभास रागकी स्वरलिपिमें एक ही बन्दीशके दो पदोंका अंकन किया गया है। इन स्वरांकनके नीचे प्रथम पंक्तिमें जगायवेका पद और द्वितीय पंक्तिमें मंगला–आरतीका पद एक ही स्वरांकनमें बताया गया है। इसी उदाहरण अनुसार हमारे द्वितीय और यह तृतीय भाग की स्वर-लिपिमें स्वरबद्ध दिये गये २३५ पदोंकी बन्दीशमें गाये जानेवाले २७५ पदोंकी सूची स्वरांकनोंके पश्चात् दी गई है। जिनमें स्थायी की प्रथम पंक्ति लिपिके अंकन अनुसार उदाहरणार्थ दी गई है। जिससे कुल मिलाकर ५०० से अधिक कीर्तनोंका ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गीत संगीतसागराय नमः ।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ॥

वंदना.

राग केदार—ताल त्रिताल

वंदू श्री विठ्ठलवर सुंदर, नवघनश्याम तमाल;
जगतीतल उद्धार करेवा, प्रगट्या परम दयाल ॥१॥
श्रीपुरुषोत्तम स्वतंत्र क्रीडा, लीला द्विजतनु धारी,
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो, वासववृष्टि निवारी ॥२॥

× × ×

पूरणब्रह्म श्रीलक्ष्मणसुत, पुरुषोत्तम श्रीविठ्ठलनाथ,
श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या, स्वजन कीधां सनाथ ॥२४॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	—	म	ग	प	—	प	मप	ध	धनि	ध	प	मप	धप	म	म
वं	—	दूं	—	श्री	—	वि	—	ठ्ठ	ल—	व	र	सुं—	—	द	र
—	मग	प	मप	धनि	सां	ध	प	म	—	प	—	म	सा	रे	सा
—	नव	घ	न—	स्या	—	म	त	मा	—	—	—	—	—	—	ल
सा	सा	म	ग	प	प	प	मप	ध	धनि	ध	प	मप	धप	म	—
ज	ग	ती	—	त	ल	उ	—	द्धा	—	—	र	क—	रे—	वा	—
—	मग	प	मप	धनि	सां	ध	प	म	—	प	—	म	सा	रे	सा
—	प्रग	टया	—	प—	र	म	द	या	—	—	—	—	—	—	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×				२				०				३			
प	—	प	प	नि	ध	नि	ध	सां	सां	—	सां	सां	रें	सां	—
श्री	—	पु	रु	षो	—	त्त	म	स्व	तं	—	त्र	क्री	—	डा.	—
सां	ध	ध	—	ध	नि	सां	रें	सां	नि	सां	—	ध	नि	प	—
ली	—	ला	—	द्वि	ज	त	नु	धा	—	—	—	—	—	री	—
प	—	प	प	ध	ध	प	प	म	म	प	म	रे	—	सा	—
सा	—	त	दि	व	स	गि	रि	व	र	क	र	धा	—	र्यो	—
सा	—	म	ग	प	—	म	प	ध	नि	ध	प	म	रे	सा	—
वा	—	स	व	वृ	—	ष्टि	नि	वा	—	—	—	—	—	री	—

श्रीमत्प्रभुचरण गुसांईजीकृत यह कीर्तन मंगलभोग सरे
हंमेशा गाया जाता है ।

राग भैरव–ताल चर्चरी

मंगलमंगलम् व्रजभुवि मंगलम् ।
मंगलमिह श्रीनंदयशोदानामसुकीर्तनमेतद्रुचिरोत्संगसुलालितपालितरुपम् ॥१॥
श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्तजनाशयतापापहमिति मंगल रावम् ।
व्रजसुन्दरीवयस्यसुरभीवृन्दमृगीगणनिरुपमभावामंगलसिंधुचयाय ॥२॥
मंगलमीषत्स्मितयुतवीक्षणभाषणमुन्नतनासापुटगतमुक्ताफलचलनम् ।
कोमलचलदंगुलिदलसंगतवेणुनिनादविमोहितवृन्दावनभुवि जाताः ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मंगलमखिलं गोपीशिलुरिति मन्थरगतिविभ्रममोहितरासस्थितगानम् ।
त्वं जय सततं श्रीगोवर्धनधर पालय निजदासान् ॥४॥

स्थायी

०		३			×		२		
मग	म	प	म	प	ध	–	ध	प	–
मं–	–	ग	ल	–	मं	–	ग	लं	–
म	ग	रे	ग	मप	म	ग	रे	सा	–
व्र	ज	भु	वि	––	मं	–	ग	लं	–

अंतरा

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	ध	नि	नि	सां	–	–
मं	–	ग	ल	–	मि	ह	श्री	–	–
रें	–	रें	–	रें	गं	रें	सां	–	–
न	–	न्द	–	य	शो	–	दा	–	–
रें	–	सां	–	सां	नि	सां	नि	ध	प
ना	–	म	–	सु	की	–	र्तं	न	–
ग	म	ध	ध	ध	प	म	प	प	म
मे	–	त	द्रु	चि	रो	–	त्सं	ग	सु
प	ध	नि	सां	–	नि	ध	प	ग	म
ला	–	लि	त	–	पा	–	लि	–	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	प	ध	सांनि	सां	—	—	धप	गम	प
रू	—	—	पं	—	—	—	मं	ग	ल

संचारी

×		२			०		३		
ध	—	ध	प	म	प	—	प	—	—
श्री	—	श्री	—	—	कृ	—	ष्ण	—	—
नि	सां	नि	ध	प	गम	पध	प	—	—
इ	ति	श्रु	ति	—	सा—	— —	रं	—	—
ध	—	ध	प	म	प	म	ग	म	ग
ना	—	म	स्वा	—	तं	ज	ना	—	श
ग	रे	सा	—	सा	ग	म	प	प	—
य	—	ता	पा	—	प	ह	मि	ति	—
ध	प	म	ग	म	ग	रे	रे	—	सा
मं	—	ग	ल	—	रा	—	वं	—	—

आभोग

×		२			०		३		
ध	ध	ध	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां
व्र	ज	सु	—	न्द	री	—	व	य	स्य
रें	रें	रें	रें	—	गं	रें	सां	सां	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सु	र	भी	वृ	–	न्द	–	मृ	गी	–
रें	रें	सां	सां	नि	ध	–	प	प	–
ग	ण	नि	रु	–	पं	–	भा	वा	–
ग	म	ध	ध	प	प	म	प	प	म
मं	–	ग	ल	–	सिं	–	धु	–	च
ध	प	ध	सांनि	सां	–	ध	प	म	पं
या	–	–	य–	–	–	मं	–	ग	लं

मं–गल–मीष– – –तुस्मितयुत–वी–क्षण–भा–षण–मु–न्न–त–ना–सा–
पु ट ग त–मु–क्ता फ ल च ल नं– – ॥ संचारी अनुसार ।

को–म ल–च ल दं–गु लि–द ल–सं–ग त–वे–णु नि–ना–द–वि मो–
हि त–वृन्दा– –व न भु वि–जा–ता– – ॥ आभोग अनुसार ।

संचारी–३

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	म	प	प	प	–	–
मं	–	ग	ल	–	म	खि	लं	–	–
प	ध	नि	सां	सां	नि	ध	ध	प	प
गो	–	पी	शि	तु	रि	ति	म	न्थ	रं
प	ध	नि	ध	प	म	–	प	प	–
ग	ति	वि	भ्र	म	मो	–	हि	त	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग	म	रे	ग	म	ग	रे	रे	–	सा
रा	–	स	स्थि	त	गा	–	नं	–	–

आभोग–३

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	ध	नि	नि	सां	–	सां
त्वं	–	ज	य	–	स	त	तं	–	श्री
रें	–	–	रें	–	गं	रें	सां	सां	–
गो	–	–	व	–	र्ध	न	घ	र	–
नि	सां	नि	ध	प	ध	प	म	ग	म
मा	–	ल	य	–	ान	ज	दा	–	–
ध	प	ध	सांनि	सां	–	–	धप	गम	प
सा	–	–	–	न्	–	–	मं–	ग–	ल

"प्रत्येक टुक अन्तरानुसार"

राग रामकली–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

पिय संग रंग भरि करि कलोलें ।
सबनकों सुख देन पियसों करत सेन, चित्त तब परत चेन जबहिं बोलें ॥२॥
अति ही विख्यात सब बात इनके हाथ, नाम लेत ही कृपा करें अतोलें ।
दरस करि परस करि ध्यान हियमें रहे, सदा व्रजनाथ इन संग डोलें ॥२॥
अति ही सुखकरन दुःख सबनके हरन, एहि लिनो परन दे जु कोलें ॥
जेसी जसुने जानि नित करों गुनगान, 'रसिक प्रीतम' पाय नग अमोलें ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थाया

×		२			०		३		
सा	सा	म	ग	म	प	—	प	ग	म
पि	य	सं	—	ग	रं	—	ग	भ	रि
प	ध	ध	प	ध	पध	नि	धप	मग	म
क	रि	क	लो	—	लें—	—	——	——	—
ध	ध	प	—	प	म	—	म	ग	म
पि	य	सां	—	ग	रं	—	ग	भ	रि
म	रे	ग	म	प	मग	म	रे	सा	—
क	रि	क	लो	—	लें—	—	—	—	—

अंतरा

×		२			०		३		
ध	ध	ध	प	ध	नि	नि	सां	—	सां
स	ब	न	कों	—	सु	ख	दै	—	न
रें	रें	रें	—	सां	गं	रें	सां	—	सां
पि	य	सों	—	क	र	त	सौ	—	न
सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	प	—	ष
चि	त्त	त	ब	प	र	त	चे	—	न
ग	म	प	प	ध	सांनि	सांनि	धप	मग	म
ज	ब	हि	बो	—	लें—	——	——	——	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		२			०		३		
म	म	म	ग	म	प	—	प	ग	म
अ	ति	ही	वि	—	ख्या	—	त	स	ब
ध	—	ध	प	म	प	—	म	—	म
बा	—	त	इ	न	के	—	हा	—	थ
ग	रे	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा
ना	—	म	ले	—	त	हां	कृ	पा	—
सा	रे	ग	म	प	मग	म	रे	—	सा
क	रें	अ	तो	—	लें	—	—	—	—

"आभोग अन्तरानुसार"

द र स क रि प र स क रि ध्या—न हि य में—रहे—
स दा—वृ ज ना—थ इ न सं—ग डो—लें— — — —

राग रामकली—ताल त्रिताल (८ मात्रा)

लालको मुख देखन हों आइ ।
कालि मुख देखि गइ दधि बेचन, जात हिं गयो बिकाइ ॥१॥

नितते दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाइ ।
आइ हों धाय थंभाइ साथकी, मोहन देहु जगाइ ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुनि तिय बचन बिहसि उठी बेठे, नागरि निकट बुलाइ ।
'परमानंद' सयानी ग्वालिमी, सेंन संकेत बताइ ॥३॥

स्थायी

× २ ० ३ × २ ० ३

सा सा | ग म | प प | ध प | पध निसां | नि ध | प म | गम प
मु ख | दे – | ख न | हों – | आ– – – | इ ला | – ल | को– –
पध नि | ध प | म ग | रे सा | सारे गम | गम पध | पम गम | प –
मु– ख | दे – | ख न | हों – | आ– – – | – – इ– – | – –

अंतरा

× २ ० ३ × २ ० ३

ध ध | प ध | सां – | सां सां | सांरें गंमं | गं रें | सांरें गंरें | सां स
क ल | मु ख | दे – | ख ग | ई– – – | द धि | बे– – – | च न
सांरें सां | नि ध | प प | धप मग | गम पध | प ध | प म | गम प
जा– – | त हि | ग यो | हे– बि– | का– – – | इ ला | – ल | को– –

संचारी

× २ ० ३ × २ ० ३

सां सां | सांनि सां | नि ध | पम गम | ध प | म म | गम पध | प प
नि त | तें– – | दू – | नो– – | ला – | भ भ | यो– – | घ र
ग – | म ग | रे सारे | सा – | सारे गम | गम पध | पम गम | प –
का – | ज र | ब छि– | या – | जा– – – | – – इ– – | – –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आभोग

× २ ० ३ × २ ० ३

— ध प ध | सां — | सां सां | सां रें गंमं | मं मंगं | रें रें | सां —

— आ इ हों | धा — | य थं | भा- — — | इ सा— | — थ | की —

— सां रें गं रें | सांनि सां | निध पम | गम पध | सांनि ध | प म | गम प

— मो— ह न | दे— — | हु— ज— | गा- — — | इ— ला | — ल | को- —

× ×

सुनितिय बचनबिह सउठ बै–ठे–ना–गरिनिकटबुला — — —इ — —

× ×

परमा–नं–दसया–नी–ग्वा–लिनी– सेंन संके–तबता –ईला–लको–

"संचारी–आभोगानुसार"

राग बिभास–ताल–त्रिताल (आठ भात्रा)

प्रातसमें नवकुंजद्वार व्है ललिता ललित बजाई वीना । पोढों सुनत श्याम श्रीस्यामा, दंपति चतुर नवीन नवीना ।।१।। अति अनुराग सुहाग भरे दोउ कोक कलाजु प्रवीन प्रवीना । 'चत्रभुजदास' निरखि दंपतिछबि, तन मन धन न्योछावर कीना ।।२।।

स्थायी

३ × २ ० ३ × २ ०

ध — | प ध सां — | ध प | ग — | ध प | रे रे | सा —

प्रा — | त स में — | न व | कुं — | ज द्वा | — र | व्है —

प्रा — | त स में — | न व | कुं — | ज म | ह ल | में —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग ग	ग –	प प	ध पध	सां –	ध प	ग रे	सा –				
ल लि	ता –	ल लि	त ब–	जा –	ई –	बी –	ना –				
श्री –	रा –	धा –	ओ र	नं –	द कि	शो –	र –				

अंतरा

३	×	२	०	३	×	२	०
प ग	प ध	सां सां	सां सां	ध ध	सां –	रें –	सांध सां
पो –	ढे –	सु न	त स्या	– म	श्री –	स्या –	मा– –
द –	क्षि ण	क र	मु –	कता –	स्या –	मा –	के –
ध –	ग ग	प प	ध पध	सां –	ध प	ध पग	रे सा
दं –	प ति	च तु	र न–	वी –	न न	वी –	ना –
त्य ज	त हं	– स	ओ र	चु ग	त च	को –	र –

संचारी

३	×	२	०	३	×	२	०
प प	प प	ध –	प ध	सां –	ध प	ध प	गप ध
अ ति	अ नु	रा –	ग सु	हा –	ग भ	रे –	दो– उ
ता –	प र	ए –	क अ	धि क	छ बि	उ प	ज त
सां –	ध प	ध –	प प	ग रे	सा रे	सारे गरे	साध सा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

क्रो –	क क	ला –	जु प्र	वी –	न प्र	वी–	––	ना–	–
ऊ –	प र	भ्र म	र क	र त	ध न	घो	–	र	–

"आभोग अंतरानुसार"

राग बिभास—ताल चौताल

कोनके भुराए भोर आए हो भवन मेरे ऊँची दृष्टि क्यों न करो काहेको लजानें (हो) ॥ जाहि कौ भवन भावे ताहीकें सिधारौ कान्ह काहि एसी चाड परी कोन गही आनें (हो) ॥१॥ भोरी भोरी बतियनि मोहिं भुरवन आए अब जानत नाहिन कोउ आए चतुर सयानें (हो) ॥ "कृष्णदास" प्रभु रसिक—मुकुटमनि छाँडहु लाल नीकें पहिचानें (हो) ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	ध	रें	सां	ध	प	प	–	प	ध	–	ध
को	–	न	के	–	भु	रा	–	ए	भो	–	र
प	–	ग	पग	ध	प	रे	रे	–	साध	सा	सा
आ	–	ए	हो-	–	भ	व	न	–	में–	–	रे
ग	–	ग	प	–	प	ध	–	प	ध	ध	–
ऊं	–	ची	दृ	–	ष्टि	क्यो	–	न	क	रो	–
सां	ध	रें	सां	ध	प	ध	प	प	ग	प	ध
का	–	हे	कों	–	ल	जा	–	नें	हो	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	ध	प	सां	सां	–	सां	–	सां
जा	–	हि	को	–	भ	व	न	–	भा	–	वे
ध	ध	ध	सां	रें	रें	सांरें	गं	रें	सांध	सां	सां
ता	–	हि	कें	–	सि	धा-	–	रौ	का-	–	न्ह
सां	–	सां	सां	ध	प	पग	ध	ध	प	ध	–
का	–	हि	ए	–	सी	चा-	–	ड	प	री	–
प	गं	रें	रें	सां	–	रें	सां	ध	प	गप	ध
को	–	न	ग	ही	–	आ	–	ने	हो	– –	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	–	प	ध	ध	प	ध	–	ध
भो	–	री	भो	–	री	ब	ति	य	नि	मो	हि
सांध	सां	ध	सां	–	ध	सां	रें	सां	सां	ध	प
भु-	–	र	व	–	न	आ	–	ये	अ	–	ब
सां	सां	–	सां	ध	प	ग	ध	प	रे	–	सा
तु	म	–	गि	–	रि	धा	–	री	जू	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सा	ध़	सा	सा	रे	रे	सारे	गप	रे	साध़	सा	–
नि	प	–	ट	–	स	या ---		ने	हो–	–	–

कृ––ष्ण––दा–स प्र भु–,र सि–क–सि रो–म नि–
छाँ–ड हु छाँ–ड हु–ला–ल, नी–के प हि चा–नें–हों–

"आभोग अन्तरानुसार"

राग ललित–ताल त्रिताल (८ मात्रा)

क्यों मोहन दरपन नहिं देखो ॥
क्यों घरनी पग नख नख नावत, क्यों मोतन नहीं पेखो ॥१॥
क्यों ठाडे कयों वेठत नाहिं, कहा परी हम चूक ॥
पीतांबर गही कहयो वेठिए, कहाजु रहे हो मूक ॥२॥
उघर गयो उरतें उपरना, देखियत अंग विभाग ॥
'सूरस्याम' लटपटी पाग पर, यावक की छवि लाग ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
म ग	रे सा	नि रे	ग म	म म	म म	मम गम	ग –
क्यों –	मो –	ह न	द र	प न	न ही	दे- --	खो –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
ध	मध	सां	सां	सां	–	सां	सां	नि	रें	सां	गं	रें	सां	सां	सां
क्यों	––	ध	र	नी	–	प	ग	न	ख	न	ख	ना	–	व	त
रें	सां	सां	–	नि	नि	ध	ध	म	ध	नि	ध	नि	ध	म	म
क्यों	–	मो	–	त	न	न	हीं	पे	–	–	–	खौ	–	–	–

संचारी

×		२		०		३		×		२		०		३	
म	–	म	म	ग	–	म	ध	नि	ध	म	ध	म	म	म	–
क्यों	–	ठा	–	डे	–	क्यां	–	वे	–	ठ	त	ना	–	ही	–
म	ग	रे	सा	नि	रे	ग	म	म	म	म	म	ग	रे	ग	म
क	हा	–	प	री	–	ह	म	चू	–	–	–	क	–	–	–

आभोग

×		२		०		३		×		२		०		३	
–	ध	म	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सांरें	गं	मं	गं	रें	सां	–
–	पी	तां	–	ब	र	ग	ही	क	ह्यो–	–	बे	–	ठि	ये	–
सांनि	रें	सां	सां	सां	–	नि	रें	नि	ध	नि	ध	म	–	म	–
क–	हा	जु	र	हे	–	हो	–	मू	–	–	–	–	–	क	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग मालकौंस–ताल त्रिताल

मोरी भरी मटुकियाँ ले गयोरी ।
आपुन खात ग्वाल ही खवावत, रीति कर मोहि दे गयोरी ॥१॥

वृन्दावनकी सघन कुंजमें, ऊँची नीची मोसों कहि गयोरी ।
'परमानन्द' व्रजवासी सांवरो, अंगुठा दिखाय रस ले गयोरी ॥२॥

स्थायी

०				३				×				२			
ग	गम	ग	सा	नि	सा	ध	नि	सा	–	म	ग	म	–	म	म
भ	री–	–	म	टु	कि	यां	–	ले	–	ग	यो	री	–	मो	री
ग	गम	ग	सा	निसा		गसा	ध नि	सा	–	म	ग	म	–	गम	धम
भ	री–	–	म	टु–		कि–	यां –	ले	–	ग	यो	री	–	मो–	री–

अंतरा

०				३				×				२			
ग	–	म	म	ध	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	गं	नि	सां	सां
आ	–	पु	न	खा	–	त	ग्वा	–	ल	ही	ख	वा	–	व	त
नि	नि	सां	गं	सां	नि	नि	–	ध	नि	सां	निसां	ध	धनि	ध	म
री	ति	क	र	मो	–	हि	–	दे	–	ग	यो–	री	––	मो	री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

०	३	×	२
म ग म –	ध ध नि –	सां सां नि ध	नि ध म –
वृं – दा –	व न की –	स घ न कुं	– ज में –
ग गम ग सा	गसा निसा ध नि	सा सा म ग	म – – –
ऊं ची – नी ची	मो – – सों –	क हि ग यो	री – – –

आभोग

०	३	×	२
ग ग म म	ध ध नि धनि	सां – सां सां	गं नि सां –
प र मा नं	– द ब्र ज –	वा – सी सां	– व रो –
नि नि सां सां	गं गं मं गं	सां – नि सां	ध धनि ध म
:अं गु ठा दि	खा य र स	ले – ग यो	रो – मो री

राग मालकौंस—ताल चौताल

माइ रंग रंगे हो लाल उनही त्रियन संग, छबि देखियत ढंग परत कछु ओर ओर ॥

ले दरपन देखियेजु प्यारे लाल, अधरन अंजन लाग्यो ठोर ठोर ॥१॥

मोसों अवधि बदी ओरनसों रति मानी, प्रीत करत फिरत नइ पोर पोर ।

जाओजी जाओजी तुम उनहीकें 'सूर' प्रभु, काहे को आवत मेरे प्रात दोर दोर ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म	ग	सा	सा	ध	नं	सा	—	म	म	—	म
रं	—	—	ग	—	रं	गे	—	हो	ला	—	ल
ग	ग	म	ध	नि	नि	ध	नि	ध	म	—	म
उ	न	—	ही	—	त्रि	य	—	न	सं	—	ग
ग	ग	म	म	ध	ध	नि	—	सां	सां	सां	सां
छ	वि	दे	खि	य	त	ढं	—	ग	प	र	त
गं	सां	—	ध	नि	ध	मध	नि	ध	म	ग	सा
क	छु	—	ओ	—	र	ओ—	—	र	मा	—	इ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
ध	म	—	ध	—	नि	सां	—	—	सां	—	—
ले	—	—	द	—	र	प	—	—	न	—	—
गं	सां	सां	नि	—	नि	ध	नि	ध	म	—	म
दे	—	खि	ये	—	जु	प्या	—	रे	ला	—	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध	नि	सां	मं	गं	मं	गं	सां	—	सां	—	सां
अ	ध	—	र	—	न	अं	—	—	ज	—	न
गं	सां	नि	ध	नि	ध	मध	नि	ध	म	ग	म
ल	ग्यो	—	ठो	—	र	ठो—	—	र	मा	—	इ

सांचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	ग	म	म	ध	म	—	म	म	—
मो	—	—	सों	—	अ	व	धि	—	ब	दी	—
ग	—	म	म	ध	ध	नि	ध	नि	ध	म	म
ओ	—	र	न	—	सों	र	ति	—	मा	—	नी
ध	—	—	नि	—	सां	सां	सां	—	नि	ध	म
प्री	—	—	त	—	क	र	त	—	फि	र	त
ग	म	ग	सा	ध	नि	सा	—	म	म	—	म
न	इ	—	पो	—	र	पा	—	र	मा	—	इ

आभोग

×		०		२		०		३		४	
ग	म	—	ध	—	नि	सां	—	सां	सां	—	सां
जा	ओ	—	जी	—	जा	ओ	—	जी	तु	—	म

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गं	सां	–	नि	–	नि	ध	–	नि	ध	–	म
उ	न	–	ही	–	कें	सू	–	र	प्र	–	भु
ध	–	नि	सां	–	सां	गं	–	मं	गं	सां	सां
का	–	हे	को	–	आ	व	–	त	मे	–	रे
गं	सां	सां	नि	–	नि	ध	नि	ध	म	ग	म
प्रा	–	त	दो	–	र	दो	–	र	मा	–	इ

राग देवगंधार—ताल तीव्रा

सांवरो मंगलरूप निधान ।
जा दिनते हरि गोकुल प्रगटे, दिन दिन होत कल्यान ॥१॥

बैठि रहो स्यामगुन सुमरो, रैन दिना सब याम ।
'श्रीभट'के प्रभु नेन भरि देखो, कमलनयन घनश्याम ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सां	सां	सां	ध	प	प	पध	सां	निध	प	म	ग	गम	प
मं	ग	ल	रू	–	प	नि–	धा	––	न	सां	–	ब–	रो
नि	ध	ष	मग	रे	गम	प	म	ग	म	रे	–	सा	–
मं	ग	ल	रू–	–	प–	नि	धा	–	–	–	–	न	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
म	म	म	प	ध	सां	सां	रें	रें	रें	गं	रें	सां	—
जा	दि	न	ते	—	ह	रि	गो	कु	ल	प्र	ग	टे	—
रें	रें	रें	सां	ध	प	प	पध	नि	ध	प	ग	म	प	प
दिन	दि	न	हो	—	त	क-	ल्या	—	न	सां	—	व	रो

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सां	सां	सां	ध	प	प	ध	नि	ध	प	म	गम	प	—
वे	ठि	र	हो	—	स्या	—	म	गु	न	सु	म-	रो	—
धनि	ध	प	मग	म	गम	प	म	ग	म	रे	—	सा	—
रे-	न	दि	ना-	—	स-	व	या	—	—	—	—	म	—

"आभोग अन्तरासुसार"

राग देवगंधार—ताल आडाचौताल

नेन भरि देखो नंदकुमार ।
जसुमतिकूखि चंद्रमा प्रगट्यो, या व्रजको उजियार ॥१॥
बन जिनि जाउ आज सब कोऊ, गोसुत गांइ गुआर ।
××××× गोकुलवधू निरखि आनंदित, सुंदरताको सार ।
दास 'चत्रभुज'प्रभु चिरिजीवो गिरधर प्रान आधार ॥५॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×		२				३				४			
म	–	म	–	–	–	प	–	–	–	प	ध	रें	–
दे	–	खो	–	–	–	नं	–	–	–	द	–	कु	–
सां	–	–	–	रें	–	नि	ध	प	म	ग	म	प	प
मा	–	–	–	–	–	र	–	–	ने	–	न	भ	रि
नि	–	ध	प	म	–	म	ग	म	रे	ग	म	प	–
दे	–	खो	–	–	–	नं	–	–	–	द	–	कु	–
म	ग	म	–	रे	–	खा	–	–	म	ग	म	प	प
मा	–	–	–	–	–	र	–	–	ने	–	न	भ	रि

अंतरा

×		२				३				४			
म	म	म	ग	म	–	प	–	प	:ध	सां	–	–	–
ज	सु	म	–	ति	–	कू	–	–	–	खि	–	–	–
सां	रें	मं	–	मं	–	रें	–	रें	–	सां	–	–	–
चं	–	द्र	–	मा	–	प्र	–	ग	–	टयो	–	–	–
रें	–	रें	–	सां	–	रें	नि	ध	प	प	–	प	ध
या	–	ब्र	–	ज	–	को	–	–	–	उ	–	जि	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	–	–	–	रें	नि	ध	प	ध	म	ग	म	प	प
या	–	–	–	–	–	र	–	–	ने	–	न	भ	रि

संचारी

×		२				३				४			
सां	सां	सां	–	सां	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
ब	न	जि	–	न	–	जा	–	–	–	उ	–	–	–
नि	–	ध	–	प	–	म	ग	म	–	ग	म	प	–
आ	–	–	–	ज	–	स	–	ब	–	को	–	ऊ	–
नि	–	ध	–	प	–	म	ग	रे	ग	म	–	प	–
गो	–	सु	–	त	–	गा	–	–	–	इ	–	गु	–
म	ग	म	–	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–
आ	–	–	–	–	–	र	–	–	–	–	–	–	–

"आभोग अन्तरानुसार"

राग अल्हैया बिलावल—ताल धमार

पूजाबिधि गिरिराजकी, नंदलाल बतावें ।
झुंडन झुंडन गोपिका, मिलि मंगल गावें ॥१॥
गंगाजलसों न्हवाइकें, दूध धौरीको नावें ।
बिबिध बसन पहिरायकें, चंदन चरचावें ॥२॥
धूप दीप करि आरती, बहु भोग धरावें ।
तिलकु कियो बीरा दियो माला पहिरावें ॥३॥
खरिक चले लहुरे बडे, मिलि गाय खिलावें ।
फिरि गिरिधर भोजन कियो, सुख 'सूर' दिखावें ॥४॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
सां	–	–	ध	नि	प	–	ध	प	–	म	–	ग	–
पू	–	–	जा	–	–	–	त्रि	धि	–	गि	–	रि	–
रे	–	–	ग	म	प	ग	रे	सा	–	ध	–	ध	–
रा	–	–	–	–	–	ज	की	–	–	नं	–	द	–
नि	ध	प	म	ग	म	रे	ग	प	–	ध	–	नि	–
ला	–	–	ल	–	–	व	ता	–	–	वें	–	–	–

अंतरा

×					२		०			३			
गं	–	–	गं	–	गं	–	रें	–	–	सां	–	सां	–
झूं	–	–	ड	–	न	–	झूं	–	–	ड	–	न	–
–	–	–	सां	रें	गं	रें	सां	–	–	ध	–	ध	–
–	–	–	गो	–	–	पि	का	–	–	मि	–	ल	–
नि	ध	प	म	ग	म	रे	ग	प	–	ध	–	नि	–
मं	–	–	ग	–	ल	–	गा	–	–	वें	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	–	–	नि	ध	प	म	–	ग	–
गं	–	–	गा	–	–	–	ज	ल	–	सो	–	म्ह	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	रे	–	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ध	–	ध	–
वा	–	–	–	–	–	इ	कें	–	–	दू	–	ध	–
नि	ध	प	म	ग	सा	रे	ग	–	–	रे	–	सा	–
धो	–	–	री	–	को	–	ना	–	–	वें	–	–	–

विवि–ध–व–सन–प–हे– – – –रा– –इके– –
चं– – –दन–च–र–चा– –वें– – –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धनाश्री–ताल त्रिताल (आठ भाग)

लालकों मीठी खीर जो भावे ।
वेला भरि भरि लावत जसोदा, बूरों अधिक मिलावे ॥१॥
कनिया लियें जसोदा ठाडी, रुचिकर कोर बनावे ।
ग्वालबाल बनचरन के आगें, झूठें ही हाथ दिखावे ॥२॥
ब्रजरानीजु चहुँधा चितवत, तम मन मोद बढावे ।
'परमानंददास'को ठाकुर, हँसी हँसि कंठ लगावे ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	नि –	सां –	सां रें	सांनि सां	निध प	म ग	गम प
मी –	ठी –	खी –	र जो	भा– –	वे– ला	– ल	को– –
नि –	ध प	प म	म म	म ग	गम प	ग रे	सा –
मी –	ठी –	खी –	र जो	भा –	– –	वे –	– –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
प –	प –	म पम	ग म	प –	नि नि	सां सां	सां –
बे –	ला –	भ रि–	भ रि	ला –	व त	ज सो	दा –
गं –	गं –	रें सां नि	सां रें	सां नि सां	निध प	म ग	म प
बू –	रों –	अ– धि	क मि	ला– –	वे– –	ला –	ल को

सचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
ध ध	ध –	प प	– पध	नि –	सां –	नि ध	प –
क नि	या –	लि यें	– ज–	सो –	दा –	ठा –	डी –
प नि	ध प	म –	म प	म ग	म प	ग रे	सा –
रु चि	क र	को –	र ब	ना –	– –	बे –	– –

खा–ल बा–ल ब न च र न के आ–गे–

झू–ठें ही हा–थ दि खा–वे–ला–ल को

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धनाश्री–ताल धमार (मध्यलय विलंबित)

में अपनो मन हरिसों जोर्यो, हरिसों जोरि सबनिसों तोर्यो ।
नाच नच्यो तब घूंघट केसो, लोकलाज डर पटकि पिछोर्यो ॥१॥
आगें पाछें सोंच मिट्यो जियको, बाट मांझ मटुका ले फोर्यो ।
कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोर्यो ॥२॥
नवललाल गिरिधरन पिया संग, प्रेमरंगमें यह तन बोर्यो ।
'परमानंद'प्रभु लोक हँसनि दै, लोक वेद तिनुका ज्यों तोर्यो ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२		०			३			
नि	–	–	सां	नि	सां	रें	सां	–	–	नि	ध	प	म
में	–	–	अ	–	प	–	नो	–	–	म	–	न	–
ग	ग	–	म	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
ह	रि	–	सां	–	–	–	जो	–	–	यों	–	–	–
प	प	–	प	–	–	–	म	प	–	ग	–	म	–
ह	रि	–	सों	–	–	–	जो	–	–	रि	–	स	–
प	प	–	नि	–	सां	रें	सां	नि	सां	ध	प	म	प
ब	नि	–	सों	–	–	–	तो	–	–	यों	–	–	–

अंतरा

×					२		०			३			
प	–	–	प	–	प	–	मं	प	म	ग	–	म	–
ना	–	–	च	–	न	–	च्यो	–	–	त	–	ब	–
प	नि	–	सां	–	सां	रें	सां	नि	–	सां	–	सां	–
घूं	–	–	घ	–	ट	–	के	–	–	सो	–	–	–
गं	–	–	गं	–	गं	–	रें	रें	–	सां	–	सां	–
लो	–	–	क	–	ला	–	–	ज	–	ड	–	र	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	–	सां	–	रें	–	सां	नि	–	ध	प	म	प
प	ट	–	कि	–	पि	–	छो	–	–	यों	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
ध	–	–	ध	–	ध	–	नि	ध	–	प	–	प	–
आ	–	–	गें	–	–	–	पा	–	–	छं	–	सों	–
म	ग	–	म	–	म	–	प	ग	–	रे	–	सा	–
–	च	–	मि	–	टयो	–	जि	य	–	को	–	–	–
नि	सा	–	म	–	म	–	प	प	–	ग	–	म	–
बा	–	–	ट	–	मां	–	–	झ	–	म	–	ड	–
प	नि	–	ध	प	म	प	म	ग	–	रे	–	सा	–
का	–	–	ले	–	–	–	फो	–	–	यों	–	–	–

क ह–नो– – –हो इ–सो– – –क हो– – –स–खी–री– – –

क हा – – –भ–यो– –का– – –हू– – मु–ख–मो– –यों– – –

"आभोग अंतरानुसार"

राग धनाश्री–ताल धमार

मनहर ले गये नंदकुमार ।
बारक दृष्टि परी चरनन तन, देखन पायो बदन सुचार ॥१॥
हों अपने घर सुचसों बेठी पोवत ही मोतिन के हार ।
कांकरि डार द्वार व्हे निकसे बिसर गयो तन करत सिंगार ॥२॥
कहारी करों क्यों मिल हें गिरिधर, किहि मिस हों जसोदाघर जाऊं ।
'परमानंद'प्रभु ठगीरी अचानक, मदनगोपाल भावतों नाऊं ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×					२			०				३			
नि	नि	नि	सां	–	सां	रेंसां		नि	ध	प		म	ग	म	प
ले	ग	ये	नं	–	द	कु–		मा	–	र		म	न	ह	र
नि	ध	प	म	ग	म	प		मग	रे	सा		नि	सा	ग	म
ले	ग	ये	नं	–	द	कु		मा–	–	र		म	न	ह	र

अंतरा

×					२			०				३			
प	प	प	मप	धप	ग	म		प	नि	नि		सां	रेंसां	नि	सां
बा	र	क	ट–	––	ष्टि	प		री	च	र		न	न–	त	न
गं	गं	रेंसां	रें	नि	सां	–		निनि	सां	रें		सांनि	धप	ग	म
दे	ख	न–	पा	–	यो	–		वद	न	सु		चा–	––	–	र

संचारी

×					२			०				३			
ध	ध	ध	प	म	ग	म		प	नि	सां		नि	ध	प	–
हों	अ	प	ने	–	घ	र		सुचि	सों	–		बे	–	ठी	–
नि	ध	प	म	–	म	प		ग ग	म	प		म	ग	रे	सा
पो	व	त	ही	–	मो	–		तिन	के	–		हा	–	–	र

"आभोग अन्तरानुसार"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग आसावरी–ताल त्रिताल (मध्यलय)

ग्वालिन कृष्णदरस सों अटकी ।
बार बार पनघट पर आवत, सिर जमुनाजल–मटकी ॥१॥

मनमोहनको रूपसुधानिधि, पीवत प्रेमरस गटकी ।
'कृष्णदास' धनि धन्य राधिका, लोक लाज सब पटकी ॥२॥

स्थायी

								३			
								रें	म	प	सां
								ग्वा	–	लि	न
×				२				०			
ध	–	प	प	ध	म	पध	मप	ग	ग	रे	सा
कृ	–	ष्ण	द	र	स	सों-	--	अ	ट	की	–
गं	–	गं	गं	रें	रें	सां	–	रें	नि	ध	प
कृ	–	ष्ण	द	र	स	सों	–	अ	ट	की	–

रे	म	प	सां								
ग्वा	–	लि	न								
ध	म	प	सां								
ग्वा	–	लि	न								

अन्तरा

×				२				०			
म	–	प	ध	–	ध	नि	ध	सां	सां	सां	सां
बा	–	र	बा	–	र	प	न	घ	ट	प	र
गं	गं	रें	रें	सां	नि	रें	सां	ध	नि	ध	प
सि	र	ज	मु	ना	–	ज	ल	म	ट	की	–

३											
रें	नि	सां	सां								
आ	–	व	त								
ध	म	प	सां								
ग्वा	–	लि	न								

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×				२				०				३			
ध	ध	ध	–	नि	ध	प	–	ध	म	पध	मप	ग	–	रे	सा
म	न	मो	–	ह	न	को	–	रू	–	प–	सु–	धा	–	नि	धि
रे	–	सा	सा	रे	म	प	प	ध	ध	नि	ध	पम	रेम	प	–
पौं	–	व	त	प्रे	–	म	र	–	स	ग	ट	की-	–	–	–

आभोग

×				२				०				३			
म	–	प	ध	–	ध	नि	ध	सां	–	सां	सांरें	गं	रें	सां	–
कृ	–	ष्ण	दा	–	स	ध	न्य	ध	–	न्य	रा-	–	धि	का	–
गं	–	रें	सां	नि	नि	सांरें	निसां	ध	धनि	ध	प	ध	म	प	सां
लो	–	क	ला	–	ज	स-	ब–	प	ट–	की	–	ग्वा	–	लि	न

राग आसावरी—ताल धमार

मेरो माई ! हरि नागर सों नेह ॥
जब तें द्रष्टि परि नंदनंदन तब तें बिसरयो गेह ॥१॥
कोउ निंदों कोउ बंदों मो मन गयो संदेह ॥
सरिता सिंधु मिली 'परमानंद' भयो एक रस नेह ॥२॥

स्थायी

३				×					२			०		
पध	म	प	ध	सां	सां	सां	रें	नि	सांरें		निसां	नि	ध	प
मे–	रो	मा	इ	ह	रि	ना	ग	र	सो		–	ने	–	ह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे	म	प	सां	ध	प	प	ध	म	पध	मप	ग	रे	सा
मे	रो	मा	इ	ह	रि	ना	ग	र	सो–	––	नें	–	ह

अंतरा

×					२		०				३			
म	प	प	ध	–	नि	ध	सां	सां	सां		रें	नि	सां	सां
ज	ब	तें	द्र	–	ष्टि	प	रि	नं	द		नं	–	द	न
गं	गं	गं	रें	रें	सां	–	रें नि	ध	प		पध	म	प	ध
त	ब	तें	बि	स	यों	–	गे–	–	ह		मे–	रो	मा	इ

संचारी

×					२		०				३			
ध	ध	–	ध	–	प	ध	नि	नि	–		ध	–	प	–
को	ऊ	–	नि	–	दो	–	को	ऊ	–		वं	–	दो	–
ग	रे	सा	रे	म	प	प	ध	म	प		ग	–	रे	सा
मो	म	न	ग	यो	–	सं	दे	–	–		–	–	ह	–

स रि ता सिं—धु मि ली प र मा—नं द,
म यो—ए क र स ने—ह मे रो मा इ,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग टोडी ताल—तीव्रा

जेंवत दोऊ रंगभरे ।
चारि भांतिके ब्यंजन आने, खटरस रुचिर करें ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोपीजनके मंडल शजत, लोकवेद बिसरें ।
सकल मनोरथ पूरक नंदनंदन, प्रति प्रति रुप धरें ॥२॥
बासर केलि मुदित गिरिधारी, सुख बिलसत सगरें ॥
'लालदास' प्रभु यह विधि क्रीडत, भोजन अखिल करें ॥३॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
म	ग	म	प	ध	प	प	म	ग	मप	धम	ग	रे	सा
जें	–	व	त	दो	–	उ	रं	–	ग–	म–	रे	–	–

अंतरा

×			२		३		×			२		३	
प	ग	म	ध	नि	सां	सां	ध	नि	सां	गं	रें	सां	–
चा	–	र	भा	–	त	के	ब्यं	ज	न	आ	–	ने	–
निध	प	प	ग	म	प	ध	मग	रे	सा	म	ग	म	प
खट	र	स	रु	चि	र	क	रें	–	–	जें	–	व	त

संचारी

×			२		३		×			२		३	
ध	प	–	ध	प	प	–	म	ग	ग	म	ध	प	प
गो	पी	–	ज	न	के	–	मं	ड	ल	रा	–	ज	त
म	ग	ग	रे	ग	रे	सा	नि	सा	–	ग	–	रे	सा
लो	–	क	वे	–	–	द	बि	स	–	रे	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सक ल म नो र थ पू र क नंद नं — दन
प्रति प्रति रु — प घ रें — — जें — व त

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारंग–ताल त्रिताल

छाक ले आइ ग्वालिन गोरी ।
जसुमति सब पकवान छाब भरि, पठइ टेरत भोरीं ॥१॥
जबही आनि अरोगत प्यारो, गोरस कनक कमोरी ।
'व्रजाधीस' प्रभु स्यामढाक तर, भली बनी यह जोरी ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	नि –	सां –	सां सांरें	नि –	म प	नि –	नि सां
आ –	इ –	ग्वा –	लि न–	गो –	री –	छा –	क ले
रें –	सां –	नि –	प म	नि –	पम पम	रे –	नि सा
आ –	इ –	ग्वा –	लि न	गो –	— —	री –	– –

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
म प	नि नि	सां सां	नि सां	निसां रेंमं	रें सां	रें नि	सां सां
ज सु	म ति	स ब	प क	वा– —	न छा	– ब	भ रि
रें रें	रें –	सां –	सां सांरें	नि –	म प	नि –	नि सां
पू ठ	इ –	टे –	र त–	भो –	रीं –	छा –	क लै

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि़ नि	नि –	सां –	सां सां	नि –	म प	नि़ –	सां –
ज ब	ही –	आ –	न अ	रो –	ग त	प्या –	रो –
नि –	प प	म म	रे सा	रे –	म रे	सा नि़	सा –
गो –	र स	क न	क क	मो –	– –	री –	– –

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
रें रें	– सां	– सां	नि सां	रें मं	रें सां	रें नि	सां सां
व्र जा	– धी	– स	प्र भु	स्या –	म ढा	– क	त र
नि नि	– नि	सां –	सां रें	नि –	म प	नि –	नि सां
भ ली	– ब	नी –	य ह	जो –	री –	छां –	क ले

राग सारंग—ताल त्रिताल (आठ मात्रा)

ब्रजजन लोचन ही को तारो ॥
सुनि जसुमति तेरो पूत सपूत यह, कुल दीपक उजियारो ॥१॥
धेनु चरावन जाति दूरि जब, होत भवन अति भारो ॥
धोख सुजीवनि प्रान हमारो, छिनु इत उत जिनि टारों ॥२॥
सात घोस गिरिराज धर्यो कर, सात बरसको बारो ॥
'गोविंद' प्रभु चिरजीवो रानी तेरो सुत, गोप वंस रखवारो ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	नि नि	सां –	सां रें	नि –	म प	नि नि	सां सां
लो –	च न	ही –	को –	ता –	रो –	व्र ज	ज न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें – | रें रें | सां – | नि प | निं – | पम पम | रे – | नि सा
लो – | च न | ही – | को – | ता – | – – | रो – | – –

अंतरा

× २ ० ३ × २ ० ३
रें रें | रें रें | मं मं | मं रें | रें – | सां सां | रें नि | सां सां
सु न | ज सु | म ति | ते रो | पू – | त स | पू त | य ह
रें रें | रें मं | रें सां | सां सांरें | नि – | म प | नि नि | सां सां
कु ल | दी – | म क | उ जि- | या – | रो – | व्र ज | ज न

संचारी

× २ ० ३ × २ ० ३
नि – | नि नि | सां – | सां सांरें | नि – | म प | नि नि | सां सां
धे – | नु च | रा – | व न– | जा – | त दू | – रि | ज ब
रें – | रें रें | सां सां | नि प | नि – | पम प | म रे | नि सा
हो – | त भ | व न | अ ति | भा – | – – | रो – | – –

आभोग

× २ ० ३ × २ ० ३
मं – | मं मं | मं रें | रें रें | रें रेंगं | रें सां | रें नि | सां –
धो – | ख स | जी – | व न | प्रा – | न ह | मा – | रो –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	सां	रें	मं	रें	रें	सां	सांरें	नि	–	म	प	नि	नि	सां	सां
छि	न	इ	त	उ	त	जि	न–	टा	–	रो	–	व्र	ज	ज	न

सा – त थो – स गि रि श – ज घ यौ – क र, सा – त
ब र स को – बा – – – रो – – –, (संचारी अनुसार)
गो – विं द प्र भु चि र जी यो रा नी ते रो सु त, गो – प
वं – स र ख वा – रो व्र ज ज न (आभोग अनुसार)

राग सारंग–ताल आडा चौताल

मोहन जेंवत छाक सलोंनी ॥
सखन सहित हुलसे दोऊ भैया, झपटत कर ले दोनी ॥१॥
आछे बिंजन बनें कोनके, चाहत हरिकी कोनी ॥
'परमानंद' प्रभु कहत सखनसों, पहिलें करि लेउ बोनी ॥२॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
नि	प	मप	नि	सां	सां	सां	नि	पम	प	निसां	रें	नि	सां
मो	–	ह–	न	जें	व	त	छा	––	क	स–	लों	–	नी
नि	प	मप	नि	सां	नि	प	म	रे	मप	नि	पम	रे	सा
मो	–	ह–	न	जें	व	त	छा	–	क–	स	लों–	–	नी

अन्तरा

×			२		३		×			२		३	
मप	नि	नि	सां	सां	नि	सां	रें	मं	रें	रेंसां	नि	सां	–
सख	न	स	हि	त	हु	ल	से	दो	ऊ	भै–	–	या	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	रें	नि	सां	नि	प	मप	निसां	रें	नि	सां	
झप	ट	त		क	र	लें-	--	दो	-	नी	

संचारी

×				२		३		×			२			३		
सां	-	सां		नि	-	प	प	म	प	प	नि	नि		सां	-	
आ	-	छे		बिं	-	ज	न	व	ने	को	-	न		के	-	
नि	प	प		म	रे	नि	सा	म	रे	म	प	-		-	-	
चा	ह	त		ह	रि	की	-	को	-	-	ना	-		-	-	

आभोग

×				२		३		×			२			३		
म	प	नि		सां	सां	सां	सां	निसां	रें	मं	रें	रें		सां	-	
प	र	मा		नं	द	प्र	भु	कह	त	स	ख	न		सों	-	
निनि	प	म		प	नि	सां	सां	रें	नि	सां	नि	प		मप	नि	
पहि	ले	-		क	र	ले	उ	बो	-	नी	मो	-		ह-	न	

राग सारंग—ताल चर्चरी

तरनि तनया तीर लाल गावत बने, अधर कर मुरलिका रत्न हाकट खची ॥
तेरे रस रसिक सिरमोर गिरिवरधरन, सुनहु चरचरी ताल राग सारंग सची ॥१॥
और अद्भुत देखि लेत अवघर तान, आन अनगति भई भ्रुकुटि भोहें नची ॥
सुरति मिलवत मधुप जूथ मधुपनि लिये,
तुव मान ओंट कित रहत सुंदर बची ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सखी वचनामृत श्रवन पुट पान करि, मिलि नवरंग वर रूप मनमथ मची ॥
'कृष्णदासनि' नाथ को जु वैभव निरखि,
आन सुरपति सहित सुभग लज्जित सची ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
नि	नि	सां	सां	सां	सांनि	सां	नि	प	प
त	र	नि	त	न	या–	–	ता	–	र
नि	प	प	प	म	रे	रे	रे	सा	–
ला	–	ल	गा	–	व	त	ब	ने	–
म	म	रे	प	प	नि	नि	म	प	–
अ	ध	र	क	र	मु	र	लि	का	–
रें	–	रें	सां	–	नि	प	नि	म	प
र	–	त्न	हा	–	क	ट	ख	ची	–

अंतरा

×			२		०		३		
रें	–	रें	रें	रें	मं	मं	मं	रें	रें
ते	–	रे	र	स	र	रि	क	सि	र
रें	–	रें	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां
मो	–	र	गि	रि	व	र	ध	र	न
नि	नि	नि	सां	सां	रें	सां	नि	–	प
सु	न	हं	च	र	च	री	ता	–	ल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	–	रें	सांनि	सां	रें	सां	नि	म	प
रा	–	ग	सा–	–	रं	ग	स	ची	–

संचारी

×			२		०		३		
नि	–	प	प	प	नि	प	म	–	प
ओ	–	र	अ	द	भु	त	दे	–	खि
नि	–	सां	सां	सां	नि	प	प	–	प
ले	–	त	अ	व	घ	र	ता	–	न
सां	–	सां	नि	प	म	म	रे	सा	–
आ	–	न	अ	न	ग	ति	भ	ई	–
म	रे	म	प	–	नि	प	म	प	–
भ्र	कु	टि	भों	–	हे	–	न	ची	–

सु र त मि ल व त म धु प, जू – थ म धु प नि लिं यें –,
तु व मा – न ओं – ट कि त, र ह त सुं – द र ब ची –,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारग–ताल चौताल

दान घाटी छाक आई गोकुल तें कावरि भरि रांवलकी रावरेने राखी सब घेरि ॥ जानि तो तवे ही देहो नंद जू की आनि खेहों भोजन की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रही कछू चाखो एक बेरी ॥१॥ अति प्रवीन जान राय कनक बेला कर में लिये बाँटत मेवा मन प्रसन्न हेरत चहुँ फेरि ॥ सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद टोक करज सुबल टेरि टेरि ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	–	सां	नि	प	प	नि	प	प	म	प	प
दा	–	न	धा	–	टी	छा	–	क	आ	–	ई
म	रे	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	–	सा
गो	–	कु	ल	–	ते	का	व	रि	भ	–	रि
नि	सा	रे	रे	म	–	प	–	प	नि	म	प
रां	–	व	ल	की	–	रा	–	व	रे	–	ने
नि	–	सां	सां	–	सां	नि	पम	पम	रे	म	प
रा	–	खी	स	–	व	घे	--	--	रि	–	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	–	सां
जा	–	–	नि	–	तो	त	बे	ही	दे	–	हो
नि	सां	सां	रें	–	रें	मं	रें	रें	सां	नि	प
नं	–	द	जु	–	की	आ	–	नि	खे	–	हो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

म	प	रें	रें	—	सां	रें	सां	निसां	नि	म	प
भो	:—	ज	न	—	की	र	ही	—	क	छू	—
सां	निसां	नि	प	म	प	नि	प	म	रे	म	प
चा	—	खो	ए	—	क	बे	—	—	—	रि	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	—	प	नि	प	प	म	प	प
अ	ति	प्र	वी	—	न	जा	—	न	रा	—	य
म	प	नि	नि	सां	सां	रें	सां	सां	नि	—	प
क	न	क	बे	—	ला	क	र	मैं	लि	—	ये
नि	प	प	म	प	प	नि	:पम	म	रे	—	सा
बा	ट	त	मे	—	वा	म	न—	प्र	स	—	न्न
नि	सा	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	सा	सा
हे	—	र	त	—	—	च	हु	—	फे	—	रि

स क ल पा — क प र मा नं — द आ — रो — ग त
परमानं — द परमानं — द टो — क क र त सु ब ल टे —
रि टे — — रि — —

"आभोग अन्तारानुसार"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग सारेंग – ताल चौताल

बेठे हरि राधे संग कुंजभवन अपनें रंग, कर मुरली अधर धरें सारंग मुख गाइ ।

मोहन अतिही सुजान परम चतुर गुन निधान, जानि बूझि अेक तान चूकिकें बजाइ ॥२॥

प्यारी जब गहयो वीन सकल कला गुन प्रवीन, अति नवीनरुप सहित वही तान सुनाइ ।

'वल्लभ' गिरिधरनलाल रीझ दइ अंकमाल, कहत भलें भलेंजु लाल सुन्दर सुखदाइ ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	–	प	म	रे	म	रेंम	पनि	पम	रे	–	सा
वे	–	ठं	–	ह	रि	रा–	–	धे–	सं	–	ग
नि	सा	रे	मरे	म	प	नि	पम	पम	रे	–	सा
कुं	–	ज	भु–	व	न	अ	प–	ने–	रं	–	ग
नि	सा	रे	म	प	–	नि	प	म	प	नि	सां
क	र	मु	र	ली	–	अ	ध	र	ध	रें	–
निसां	रें	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
सा–	–	रं	ग	मु	ख	गा	–	–	इ	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	नि	प	नि	सां	नि	सां	—	सां
मो	—	ह	न	अ	ति	ही	—	सु	जा	—	न
नि	सां	रें	मं	रें	सां	नि	सां	सां	नि	—	प
प	र	म	च	तु	र	गु	न	नि	धा	—	न
म	प	रें	रें	सां	सां	रें	नि	सां	नि	प	प
जा	—	न	बु	—	झ	अे	—	क	ता	—	न
निसां	रें	सां	नि	प	प	नि	प	म	रे	म	प
चु	—	क	के	—	ब	जा	—	—	इ	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	—	प	प	नि	प	म	प	—	प
प्या	—	री	—	ज	ब	ग	हो	—	बो	—	न
म	प	नि	नि	सां	निसां	रें	रें	सा	नि	प	प
स	क	ल	क	ला	—	गु	न	प्र	वी	—	न
नि	नि	प	म	प	म	रे	—	रे	सा	नि	सा
अ	ति	न	वी	—	न	रु	—	प	स	हि	त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रे	रे	म	प	–	प	नि	प	म	रे	नि	सा
व	ही	–	ता	–	न	सु	ना	–	इ	–	–

व–रुलभगिरिधरन ला – ल, री – क्ष द इ – अं – क
मा – ल, कहत भ लें – भ लें जु ला – ल, सुं – दर
सु ख दा – – इ – –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारंग–ताल धमार

तें मोहनको मन हर्यो तो बिन रह्यो न जायरी प्यारी ॥ध्रु॥ कुंज महल बेठे पिया नव, पल्लव तलप संवारि, री प्यारी ॥ वीच जुही बीच सेवती अरु, बिच बिच नवल निवारि, री प्यारी, ॥१॥ ×××××× गोविंद प्रभु पिय सों मिली, रहसि कंठ लपटाय, री प्यारी ॥७॥

स्थायी

×					२		०			३			
रें	–	–	सां	नि	सां	–	नि	ध	प	म	–	प	–
तें	–	–	मो	–	–	–	ह	न	–	को	–	–	–
नि	ध	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	–	–	–
म	न	–	–	–	ह	–	र्यो	–	–	–	–	–	–
म	–	–	म	–	म	रे	रे	रे	–	म	–	प	–
तो	–	–	बि	–	न	–	र	ह्यो	–	–	–	न	–
नि	ध	ध	ध	नि	सां	नि	ध	प	–	म	प	नि	सां
जा	–	–	–	–	–	य	री	–	–	प्या	–	री	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	–	प	म	प	म	रे	रे	–	म	–	प	–
कुं	–	–	ज	–	म	–	ह	ल	–	वे	–	–	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	नि	–	सा	–
ठे	–	–	–	–	पि	–	या	–	–	न	–	व	–
म	–	–	रे	–	रे	–	म	म	–	प	–	प	–
प	–	–	ल्ल	–	व	–	त	ल	–	प	–	सं	–
ध	–	–	ध	नि	ध	नि	ध	प	–	म	प	नि	सां
वा	–	–	–	–	रि	–	री	–	–	प्या	–	रा	–

अंतरा

×					२		०			३			
रें	–	–	रें	–	रें	मं	मं	–	–	रें	–	रें	–
वी	–	–	च	–	जु	–	ही	–	–	बि	–	च	–
रें	–	–	रें	गं	रें	सां	रें	नि	–	सां	–	सां	–
–	–	–	से	–	व	–	ती	–	–	औ	–	र	–
रें	रें	मं	रें	–	रें	–	सां	सां	–	सां	–	सां	रें
बि	च	–	बि	–	च	–	न	व	–	ल	–	नि	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	–	प	–	म	प	नि	–	–	सां	–	नि	सां
वा	–	–	–	–	री	–	प्या	–	–	री	–	–	–

संचारी—कुजमहल तुव पथ अनुसार और आभोग अन्तरानुसार

राग सारंग—ताल धमार

डोल झूलत है पिय प्यारी ।। नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥१॥ कमल नैन पर केसर डारी ॥ अबीर गुलाल करी अंधियारी ॥२॥ झूलत श्याम झुलावति नारी ॥ हँसी हँसी देत परस्पर गारी ॥३॥ गावत गीत दे दे कर तारी ॥ बाजत वेनु परम रुचिकारी ॥४॥ भीजि लगी तन तनसुख सारी ॥ खेल मच्यो वृन्दावन भारी ॥५॥ रसिक सिरोमनि कुंजबिहारी ॥ "कृष्णदास" प्रभु गिरिवरधारी ॥६॥

स्थायी

×					२		०			३			
नि	–	–	नि	–	नि	–	सां	–	–	सां	–	सां	रें
झू	–	–	ल	–	त	–	हे	–	–	पि	–	य	–
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	सां	–
प्या	–	–	री	–	–	–	डो	–	–	–	–	ल	–
रें	–	–	सां	–	सां	–	नि	–	–	प	–	म	प
झू	–	–	ल	–	त	–	है	–	–	पि	–	य	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	नि	–	सा	–
प्या	–	–	–	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	–	–	नि	–	नि	–	सां	सां	–	नि	–	सां	–
नं	–	–	द	–	नं	–	द	न	–	वृ	–	ष	–
रें	मं	–	रें	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
भा	–	–	न	–	दु	–	ला	–	–	री	–	–	–

अंतरा

×					२		०			३			
मं	मं	–	मं	–	रें	–	रें	रें	–	सां	नि	सां	–
क	म	–	ल	–	नें	–	–	न	–	प	–	र	–
रें	–	–	रें	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
के	–	–	स	–	र	–	डा	–	–	री	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	सां	रें	नि	–	–	म	–	प	–
अ	वां	–	र	–	गु	–	ला	–	–	ल	–	क	–
रें	–	–	सां	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
री	–	–	अं	–	धि	–	या	–	–	री	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
नि	–	–	नि	–	नि	–	सां	–	–	सां	–	नि	सां
अ	–	–	ल	–	त	–	स्या	–	–	म	–	ह	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	मं	–	रें	–	सां	–	रें	नि	–	सां	– – –
ला	–	–	व	–	त	–	ना	–	–	री	– – –
नि	नि	–	नि	–	नि	–	सां	–	–	सां	– सां रें
हँ	सि	–	हँ	–	सि	–	दे	–	–	त	– प –
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	– – –
र	–	–	स्प	–	र	–	गा	–	–	री	– – –

गा– –व–त–गी– –त–दे–, दे –क–र–ता– –री– – –,
बा– –ज–त–वें– –नु–प–, र म–रु–चि–का– –री– – –,

"आभोग अंतरानुसार"

राग सारंग–ताल धमार

नैननिमें जिन डारो गुलाल तिहारे पाँय परत नंदलाल ॥
होत है अंतर पिय दरसनमें, बिनु दरसन बेहाल ॥१॥
कनकबेली वृषभान नंदिनी, प्रीतम स्यामतमाल ॥
रितु बसंत वृन्दाबन फूल्यों, नाचत गोपी ग्वाल ॥२॥
व्रजके लोग सबे जुरि आये, करत कुलाहल स्याल ॥
"रामदास" प्रभु गिरिधर नागर, पीक रंग सोहै गाल ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३		
नि	–	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	नि	–	प –
नै	–	–	न	–	न	–	में	–	–	जि	–	न –
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	सां –
डा	–	–	रो	–	गु	–	ला	–	–	ल	–	ति –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रें	–	–	रें	–	–	–	सां	–	–	सां	–	सां	–		
हा	–	–	रे	–	–	–	पाँ	–	–	य	–	प	–		
नि	प	–	म	प	नि	–	प	म	–	रे	–	नि	सा		
र	त	–	नं	–	द	–	ला	–	–	–	–	ल	–		

अन्तरा

×					२		०			३			
रें	–	–	रें	–	रें	–	रें	–	–	रें	–	रें	–
हो	–	–	त	–	है	–	अं	–	–	त	–	र	–
मं	रें	–	सां	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
पि	य	–	द	–	र	–	स	न	–	में	–	–	–
नि	सां	–	रें	–	मं	–	रें	रें	–	सां	नि	सां	–
बि	न	–	द	–	र	–	स	न	–	बे	–	–	–
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	–	–
हा	–	–	ल	–	ति	–	हा	–	–	रें	–	–	–
रें	–	–	रें	–	रें	–	सां	सां	–	नि	–	प	–
पा	–	–	य	–	प	–	र	त	–	नं	–	द	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	–	–	–
ला	–	–	–	–	–	–	ल	–	–	–	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
नि	नि	-	सां	-	सां	-	नि	प	-	म	-	प	-
क	न	-	क	-	वे	-	-	लि	-	वृ	-	ष	-
नि	-	-	प	म	प	म	रे	रे	-	नि	-	सा	-
भा	-	-	न	-	नं	-	-	दि	-	नी	-	-	-
म	-	-	म	-	म	-	रे	-	-	म	-	प	-
प्री	-	-	त	-	म	-	स्या	-	-	म	-	त	-
ध	-	-	नि	ध	नि	ध	प	-	-	-	-	-	-
मा	-	-	-	-	-	-	ल	-	-	-	-	-	-

रि तु–ब–सं– –त–वृ– – –, दा – –ब–,न–फू– –ल्यो– – –ना– –
च–त–गो – –पी– – –, ग्वा– –ल–ति–हा– –रें– – –,पा– –य–प–
रत–नं–द–ला– – – – – –ल– – – – – –,

राग सारंग–ताल धमार

घर घर ग्वाल देत हैं हेरी ।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी, ढोल दमामा मेरी ।।२।।
झूटत लूटत खात मिठाई, कहि न सकत कोउ फेरी ।।
उनमद ग्वाल करत कोलाहल, ब्रजवनिता सब घेरी ।।२।।
ध्वजा पताका तोरन माला, सबे सिंगारित सेरी ।।
जै जै कृष्ण कहत "परमानंद" प्रगटयो कंसको बेरी ।।३।।

स्थायी

×					२		०			३			
नि	-	-	नि	-	सां	-	-	सां	-	सां	-	रें	-
ग्वा	-	-	ल	-	दे	-	-	त	-	है	-	-	-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	नि	सां	नि	प	म	प	नि	नि	–	सां	–	सां	–
हे	–	–	री	–	–	–	घ	र	–	घ	–	र	–
रें	–	–	रें	–	सां	–	–	सां	–	नि	–	प	–
ग्वा	–	–	ल	–	दे	–	–	त	–	है	–	–	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	नि	–	सा	–
हे	–	–	–	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

अंतरा

×					२		०			३			
म	प	–	नि	–	नि	–	सां	–	–	सां	–	नि	सां
मा	–	–	ज	–	त	–	ता	–	–	ल	–	मृ	–
रें	मं	–	रें	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
दं	–	–	ग	–	वां	–	–	सु	–	री	–	–	–
रें	मं	–	मं	–	मं	–	रें	–	–	सां	–	रें	–
डो	–	–	ल	–	द	–	मा	–	–	मा	–	–	–
सां	नि	सां	नि	–	म	प	नि	नि	–	सां	–	सां	–
मे	–	–	री	–	–	–	घ	र	–	घ	–	र	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×				२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	रें	सां	नि	सां	नि	–	प	–
झूं	–	–	ट	–	त	–	लूं	–	–	ट	–	त	–
नि	–	–	म	–	प	–	नि	–	–	सां	–	–	–
खा	–	–	त	–	मि	–	ठा	–	–	इ	–	–	–
रें	रें	–	रें	–	सां	–	सां	सां	–	नि	–	प	–
क	हि	–	न	–	स	–	क	त	–	को	–	उ	–
नि	–	–	प	म	प	म	रे	–	–	सा	नि	सा	–
फे	–	–	–	–	–	–	री	–	–	–	–	–	–

उ – – न्म – द – ग्वा – – ल – क – र त – को – – – ला – – ह–
ल – , व्रज – व – नि – ता – – स – ब –, घे – – री – – –
घर – घ – र –,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सोरठ मल्हार–ताल आडा चौताल

झूलत सूरंग हिंडोरे राधामोहन ॥
बरन बरन चूनरी पहिरें व्रजबधू चहूंओरे ॥१॥

राग मल्हार अलापत सप्तसुर तीनग्राम जोरे ॥
मदनमोहनकी या छबि उपर 'गोविंद' बल तृनतोरे ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
नि	सां	रें	नि	धप	मग	रेसा	मरे	प	—	मप	धसां	—	—
झू	ल	त	झू	रं—	ग—	हिं—	डो—	रें	—	रा—	धा—	—	—
निध	प	म	—	गरे	नि	सा	रेग	मप	प	मग	मग	रे	ग
मो—	ह	न	—	झू—	ल	त	झू—	—	रं	—	ग—	—	हिं
प	म	—	गरे	ग	नि	सा							
डो	—	—	—	—	रे	—							

अंतरा

×			२		३		×			२		३	
मंमं	मं	मं	रें	रें	—	—	रेगं	रें	सां	रें	नि	सां	—
बर	न	व	र	न	—	—	चू—	न	री	प	हि	रें	—
नि	सां	रें	नि	धप	मग	रेसा	मरे	प	—	मप	धसां	—	—
ब्र	ज	व	धू	—	च—	हूं—	ओ—	रे	—	रा—	धा—	—	—

संचारी

×			२		३		×			२		३	
म	रे	म	प	—	प	प	म	प	प	धनि	सां	धप	म
रा	ग	म	ल्हा	—	र	अ	ला	प	त	स—	प्त	सु—	र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मग	रे	सा	रेग	मप	मग	रेग	प	म	—	रे	—	सा	—
ती-	—	न	ग्रा-	—	—	म-	जो	—	—	रे	—	—	—

आभोग

×			२		३		×			२		३	
मप	नि	नि	सां	सां	सां	सां	गंमं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
मद	न	मो	ह	न	जु	की	या-	छ	वि	उ	—	प	र
नि	सां	रें	निध	प	मग	रेसा	मरे	प	—	मप	धसां	—	—
गो	विं	द	व-	ल	तृ-	न-	तो-	रे	—	रा-	धा-	—	—

राग गौड मल्हार—ताल चौताल

घूमि घूमि घटा आइ झूमि झूमि लता रही
भूमि हरियारी लागे सुभग सुहाय माइ ॥
तहा बेठे पिय प्यारी भूखन छवि न्यारी न्यारी
मुख की उजियारी न्यारी मानो चांदनीसी छाइ माइ ॥१॥
तनन तनन तान लेत प्यारी कर ताल देत
गावत मल्हार राग अति ही मन भाइ ॥
'श्रीविट्ठलगिरिधारीलाल' लखि मोहि ब्रजबाल
रीझि रीझि रहे दोऊ कंठ लपटाइ माइ ॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	ध	ध	नि	पध	नि	सां	—	नि	सां	सां
घू	—	मि	घू	—	मि-	घ	टा	—	आ	—	इ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	प	म	प	:—	प	धनि	सां	धप	मग	प	म
झू	—	मि	झू	—	मि	ल—	ता	——	र-	ही	—
म	रे	रे	ग	म	प	मग	म	रे	रे	सा	सा
भू	—	मि	ह	—	रि	या-	—	री	ला	—	गे
म	रे	प	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
सु	भ	—	ग	—	सु	हा-	—	इ—	मा	—	इ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	—	सां	—	नि	सां	सां	—	नि	सां	सां
त	हा	—	वै	—	ठे	पि	य	—	प्या	—	री
म	म	प	प	नि	प	निसां	रें	रें	ध	नि	प
भू	ख	न	छ	—	वि	न्या-	—	री	न्या	—	री
प	रें	रें	सां	रें	गं	पं	गं	मं	रें	सां	सां
सु	ख	की	—	उ	जि	या	—	री	मा	—	नो
सां	ध	नि	प	म	प	धनि	सां	धप	म	ग	म
चां	—	द	नी	—	सी	छा-	—	इ—	मा	—	इ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	म	रे	रे	रे	प	प	प	–	पं
त	न	न	त	न	न	ता	–	न	ले	–	तं
म	रे	रे	प	प	प	धनि	सां	ध	प	म	ग
ष्या	–	री	–	क	र	ता–	–	ल	दे	–	तं
म	गम	रे	ग	म	प	म	प	म	रे	–	सा
गा	––	व	त	–	म	ल्हा	–	र	रा	–	गं
म	रे	प	–	म	प	ध	धनि	प	म	रे	सां
अ	ति	ही	–	म	न	भा	––	–	इ	–	–

श्री वि ठ्ठ ल गि रि धा – री ला – ल, ल खि – मो – हि
व्र ज – बा – ल, री – झि री – झि रहे – दो – ऊ, कं
– ठ ल – प टा – इ मा – इ

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धूलिया मल्हार – ताल आडा चौताल (मात्रा १४)

जै श्रीजगन्नाथ हरि देवा ॥
रथ बैठे प्रभु अधिक बिराजत, करे जगत सब सेवा ॥१॥
सनक सनंदन और ब्रह्मादिक, इन्द्रादिक जुरि आये ॥
अपनी अपनी भेट सबें ले, गगन विमाननि छाये ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रतन जटित रथ नीको लागत, चंचल अस्व लगाये ।।
नरनारी आनंद भये अति, प्रमुदित मंगल गाये ।।३।।
गारी देत, दिवावत आपुन, यह विधि रथहि चलाये ।।
'रामराय' गोवर्धनवासी, नगर उडीसा आये ।।४।।

स्थायी

×		२	०			३		०		४		०	
नि	–	सां	–	सां	–	रें	नि	नि	ध	प	म	ग	रे
ज	–	गं	–	ना	–	–	–	थ	–	ह	–	रि	–
म	रे	प	–	–	–	ध	नि	सां	–	ध	प	म	–
दे	–	वा	–	–	–	ज–	–	य	–	श्री	–	–	–
रे	–	रे	ग	रे	सा	रे	–	प	–	प	म	ग	रे
ज	–	गं	–	ना	–	–	–	थ	–	ह	–	रि	–
प	–	म	–	–	–	म	रे	ग	–	नि	–	सा	–
दे	–	वा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

अंतरा

×		२	०			३		०		४		०	
मं	मं	रें	–	–	–	रें	–	गं	–	रें	–	सां	–
र	थ	बै	–	–	–	ठे	–	–	–	प्र	–	भु	–
रें	गं	रें	–	सां	–	रें	–	नि	–	सां	–	सां	–
अ	धि	क	–	बि	–	रा	–	–	–	ज	–	त	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	नि	सां	–	सां	रें	नि	ध	प	म	ग	रे	ग	सां
क	र	–	–	ज	–	ग	–	त	–	स	–	ब	–
म	रे	प	–	–	–	ध	नि	सां	–	ध	प	म	–
से	–	वा	–	–	–	ज	–	य	–	श्री	–	–	–

संचारी

×		२		०		३		०		४		०	
म	मरे	म	–	म	–	प	–	–	–	प	–	प	–
स	न-	क	–	स	–	नं	–	–	–	द	–	न	–
म	–	प	–	प	–	ध	नि	सां	–	ध	प	म	–
औ	-	र	–	ब्र	–	ह्मा-	–	–	–	दि	–	क	–
रे	ग	रे	–	सा	–	रे	ग	म	प	म	ग	रे	ग
ई	–	न्द्रा	–	–	–	दि	–	क	–	जु	–	रि	–
प	–	म	–	–	–	रे	–	–	–	नि	–	सा	–
आ	–	–	–	–	–	ये	–	–	–	–	–	–	–

"आभोग अन्तरासुसार"

राग नट मल्हार ताल चौताल

अरी माई नई नई धरती दुलहनि होय रही, मेघ मल्हार आये ब्याहन ॥
इन्द्र के नगारे बाजें बृंदन के सेहरा, बादर बराती आये बरन बरन ॥१॥
पपैया पिकपिक करें दादुर सुर भरें, कोकिला कुहु कुहु लागे करन ॥
'रसिक' प्रीतमकी बानिक निरखत, रतिपति काम लाग्यौ डरन ॥२॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

०		३		४	
नि	ध	नि	प	ग	म
अ	री	–	मा	–	इ
रें	सांनि	सां	ध	नि	प
ध	र–	–	ती	–	–
धनि	सां	सां	ध	नि	प
हो	–	य	र	ही	–
प	–	मग	म	रे	सा
ल्हा	–	र–	आ	–	ये

×		०		२	
नि	ध	–	नि	सां	–
न	ई	–	न	ई	–
म	म	रे	प	प	–
दु	ल	–	ह	नि	–
म	ग	रे	ग	म	ध
मे	–	–	ध	–	म
नि	ध	प	रे	ग	म
ब्या	–	–	ह	न	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	–	म	प	नि	नि	सां	–	सां	रें	नि	सां
इ	–	न्द्र	के	–	न	गा	–	रे	बा	–	जै
निम	प	प	नि	सां	–	रें	रें	नि	ध	नि	प
बू–	–	द	न	को	–	से	–	ह	रा	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	–	रें	रें	गं	गं	मं	रें	सां	ध	नि	प
वा	–	द	र	–	ब	रा	–	ती	आ	–	ये
धनि	ध	प	रे	ग	म	–	धनि	प	रे	ग	म
ब–	र	न	ब	र	न	–	अ–	री	मा	–	इ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	रे	प	प	प	ध	ध	नि	प	प	–
प	पै	या	–	पि	उ	पि	उ	–	क	रे	–
म	रे	प	प	म	प	धनि	सांरें	सां	ध	नि	ष
दा	–	दु	र	सु	र	ता–	––	ल	भ	रे	–
ग	म	रे	ग	म	प	ध	प	रे	ग	म	–
को	–	कि	ला	–	–	कु	हु	–	कु	हु	–
म	रे	प	प	ध	प	ग	म	रे	रे	सा	–
ला	–	–	गे	–	–	क	र	–	न	–	–

र – सिक – प्रीत – मकी – – बा – – नी – क निर – ख – त रति – पति – का – भला – ग्यो ड र – न – –

"आभोग अन्तारानुसार"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग गौरी (पूर्वी थाट) ताल त्रिताल

नातर लीला होची जूनी जापें श्रीवल्लभ प्रगट न होते, वसुधा रहती सूनी ॥१॥ दिनप्रति नई नई छवि लागत, ज्यों कंचन नग चूनी ॥ 'सगुनदास' यह घरको सेवक, जस गावत जाको मुनी ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२	०	३	×	२
म ध	नि सां	रें -	सां -	ध प	मप ध	मग रेग	रे सा
ना -	त र	ली -	ला -	हो -	ती -	जू -	नी -

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
म ध	नि सां	रें -	सां सां	रें रें	रें रें	सांरें गंरें	सां -
जो -	पै श्री	व -	ल्ल भ	प्र ग	ट न	हो -	तें -
रें सां	नि ध	म ध	नि सां	रें सांनि	ध प	म ध	नि सां
व सु	धा -	र ह	ती -	सु -	नी -	ना -	त र

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
प प	प प	म प	- ध	नि ध	प प	मप ध	ध ध
दि न	प्र ति	न ई	- न	ई -	छ बि	ला -	ग त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मप	ध	म	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ध	-	म	ग	रे	सा
ज्यो-	-	कं	-	च	न	न	ग	चू	-	-	-	नी	-	-	-

स गु न दा–स य ह, घ र को–से–व क, ज स गा–व त जा–को मु नी ना–त र,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग जंगला—ताल कहरवा[१]

बाजे बधाइयां वे सैयां नंद दे दरबार। हुवा सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार। आई सुनि गोपियां वे हिलमिल गावहीं खुशियाल। जुरे सब लोग मंगनवे गुनिगन बोले दे दे ताल॥ गुनि दे ताला नाचे॥ वाहवा॥ आंगन पह पट मांचे॥ वाहवा॥ नंददा लाला जीवो॥ वाहवा॥ दूधा अमृत पीवो॥ वाहवा॥ खुशी दिल पावा झूमां॥ वाहवा॥ ललादी तुंनी चूमां॥ वाहवा॥ उसदा मंगल गावां॥ वाहवा॥ दान टुपट्टां पावां॥ वाहवा॥ वाहवा॥ वाहवा॥ पावां पटदान मोती वे॥ ××××× नागर दरसन पावोंप॥ वाहवा॥ ॥ २॥

स्थायी

												सारे	निसा		
												बा-	जेब		
×				×				×			×				
रे-	-ग	रेग	मप	मग	रेग	सा-	रेग	-सा	रेसा	निध	निरे	सा-	--साप	प-	प
धा-	-इ	यां-	--	वे-	--	सै-	यां-	-नं	-द	दे-	दर	बा-	--रहु	वा-	सुत

---

१. नागरीदासजी-कृत यह पद अधिकतर डाढीलीलामें गाया जाता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

-रे -ग रेग मप | मग रेग सासा रेग -सा रेसा निध निरे | सा- --सासा पनि निनि

-सो -ह ना- -- | वे- -- मन दा- -मो -ह ना- सुकु | मा- --रआ ई- सुनि

अंतरा

×				×			
-सां	-रे	निध	पध	मग	रेग	सासा	रेग
-गो	-पि	यां-	--	वे-	--	हिल	मिल
-सा	रेसा	निध	निरे	सां-	--सांसां	सां-	सांसां
-गा	-व	ही-	खुशि	या-	--लजु	रे-	सब
-रें	सांरें	सांनि	धप	मग	रेग	सासा	रेग
-लो	-ग	मं-	गन	वे-	--	गुनि	गन
-सा	रेसा	निध	निरें	सा-	--सासा	गमपध	मगरे
-बो	-ले	दे-	दे-	ता-	--लग	ता-ला-	ना-चे-
पपप-	प-पप	गमपध	मगरे-	×××			प-पप
बाहवा-	आं-गन	पहपट	मां-पे-				दा-नदु
नंददास	से	मंगल		गावा	वाहवा	तक	
चालु	स्वर	लिपि		पपप-		××××	
				वाहवा-			

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गमपध	मगरे-	पपप-	----	सांसांसां-	निधधप	पममग	रे—ग
प-टा-	पा-त्रा-	वाहवा	----	वाहवा-	वाहवा-	वा-जेब	धा—ई

राग यमन—ताल धमार

१जियकी न जानत हो पिय, अपनी गरजके हो गाहक । मृदु मुसिकात ललचाय आय ढिंग, हरत परायो मन नाहक ॥१॥ कपटी कुटिल नेह नहिं समुझत, छलसों फिरत घर घरके रस चाहक । ये दइ निरदइ स्यामघन मेरे, 'परमानंद'उरदाहक ॥ २ ॥

स्थायी

३				×				२				०			
निध	पम	प	मग	प	-	-	ग रे	गम		प		रे	सा		—
जि-	य-	की	न-	जा	-	-	न त	हो-		-		पि	य		—
ग	ग	म	ध	सां	सां	-	नि ध	म		ध		निध	पम	प	
अ	प	नी	ग	र	ज	-	के —	हो		-		गा-	ह-	क	

अंतरा

×				२				०				३			
प	ग	-	प	म	ध		प	सां	-		-	सां	-	सां	सां
मृ	दु	-	मु	-	सि		-	का	-		-	त	-	ल	ल

१ पाठांतर :— पियकी बात न जानत हो पिय । आप स्वारथके गाहक ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि ध - नि -	रें -	गं रें -	नि रें सां -
चा - - य -	आ -	- य -	ढिं - ग -
म ध - नि ध	नि ध	प - -	ग - म ध
ह र - त -	प -	रा - -	यो - म न
नि ध प म ग	प -	रे सा -	निध पम प मग
ना - - - -	ह -	क - -	जि- य- का न-

संचारी

×	२	०	३
प प - म ग	म ध	नि ध -	प - प -
क प - टी -	- -	कु टि -	ल - ने -
म ध - नि -	नि -	ध नि ध	प म प -
- ह - न -	हिं -	स मु -	झ - त -
ग ग रे ग म	प प	रे रे -	सा सा नि रे
छ ल - सों -	- फि	र त -	ध र ध र
ग रे ग म ग	प -	रे - -	सा रे सा -
के - - र -	स -	चा - -	ह - क -

ये- - द इ-नि र द इ- -स्या,-म-घ-न-मे- -रे- - -प र-
मा- - - नं--द- उ र दा- - - -ह-क- - जि य की न

"आभोग अन्तरानुसार"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग यमन–ताल धमार (मध्य विलंबित लय)

लाग्यो रे लाग्यो मोसो होरी खेलन लाग्यो। रसिक खिलार कहावत हो तों, अबिर डार कित भाग्यो ।।१।। ताहिसों खेलिये सांवरे हो, जाके रंग रस पाग्यो। 'कृष्णजीवन लछीराम'के प्रभु पिय, सदा ही रहत अनुराग्यो ।२।।

स्थायी

						३	
						प	मप ग म
×		२		०		ला	-- ग्यो रे
नि ध – प	–	गम	प	रे –	सा	सां –	सां –
ला – – ग्यो	–	--	–	मो –	सो	हो –	री –
नि ध नि प	–	ग	प	रें –	सा		
खे – – ल	–	न	–	ला –	ग्यो		

अंतरा

×		२		०		३	
प प सां सां	सां	–	सांनि	ध नि	सां	रें	सांनि ध प
र सि क खि	ला	–	र–	क हा	व	त	हो- – तों
निरें गं गंपं रें	सांनि	ध	निरें	सांनि ध	प		
अबि र डा- –	र–	कि	त–	भा– ग्यो	रे		

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×					२		०			३			
प	प	ध	म	ध	नि	नि	ध	नि	ध	प	ग	प	–
ता	हि	सों	खे	–	लि	ये	सां	–	व	रे	–	हो	–
प	मध	प	रे	रे	सा	सा	प	ग	मप	रे	–	सा	–
जा	–	के	रं	ग	र	स	पा	–	–	–	–	ग्यो	–

कृ ष्ण जी व न ल छी रा म के प्र भु पि थ
स दा ही र ह त अ नु रा–ग्यो

"आभोग अन्तरानुसार"

राग खमाज–ताल त्रिताल

स्याम जमुना बिच खेवत नाव ।
एक सखी आई घरते', कहे मोहीको बेठाव ।।१।।

बेठो केसे घाट ओघट हे, रपटि परत हे पाव ।
हाथ पकरि वेठाय आपु ढिंग, 'रसिकन' रच्यो उपाव ।।२।।

स्थायी

२					०				३				×			
धनि	पध	सांनि	सां		नि	धप	म	ग	ग	म	प	ध	नि	–	सां	सां
स्या-	म-	ज-	मु		ना	–	वि	च	खे	–	व	त	ना	–	–	व

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

०				३				×				२			
ग	म	नि	ध	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	सां	सांरें	निसां	नि	ध
ए	–	क	स	खी	–	आ	–	ई	–	घ	र	तें–	––	क	हे
सां	–	गं	मं	गं	–	सां	रें	नि	–	सां	–	धांन	पध	सांनि	सां
मो	–	ही	–	को	–	बे	–	ठा	–	व	–	स्या-	म-	ज-	मु

संचारी

०				३				×				२			
ग	म	नि	ध	सां	नि	सां	–	–	नि	सां	सां	ध	नि	ध	–
बे	–	ठो	–	के	–	से	–	–	घा	ट	ओ	घ	ट	हे	–
प	ध	म	ग	ग	म	प	ध	सां	नि	ध	म	प	ध	म	ग
र	प	टि	प	र	त	हे	–	पा	–	–	–	–	–	व	–

हा–थ प क रि बे–ठा–य आ–प ढिं ग, रसि कन र च्यो–उ पा–व स्या–म ज मु,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग कान्हरो–ताल धमार

सुरभी कान जगाय खरिक, बल मोहन बेठे राजत हटरी ।
पिस्ता द्राख बदाम छुहारे, खुरमा खाजा गुंजा मठरी ॥१॥
घर घरतें नरनारि मुदित मन, गोपी ग्वाल जुरे बहु ठठरी ।
टेरि टेरि जब देत सबनको, ले ले नाम बुलाइ निकटरी ॥२॥
देति असीस सकल व्रजभामिनी, जसुमति देती हरखि बहु पटरी ।
'सूर' रसिक गिरिधर चिरजीयो, नन्द महरको नागर नटरी ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×				२		०			३			
सां	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	–	–	नि	ध	प	ध
सु	र	–	भी	–	–	–	का	–	–	न	–	ज	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
गा	–	–	य	–	ख	–	रि	क	–	ब	–	ल	–
म	–	–	म	–	म	–	प	ध	नि	ध	–	प	–
मो	–	–	ह	–	न	–	वे	–	–	ठे	–	–	–
म	ग	–	रे	–	सा	रे	ग	म	–	रे	–	सा	–
रा	–	–	ज	–	त	–	ह	ट	–	री	–	–	–

अन्तरा

×				२		०			३			
नि	ध	–	नि	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	सां	–
पि	–	–	स्ता	–	–	–	द्रा	–	–	ख	–	ब	–
नि	सां	–	रें	–	रें	–	गं	मं	–	रें	–	सां	–
दा	–	–	म	–	छु	–	हा	–	–	रे	–	–	–
रें	सां	–	नि	–	ध	–	प	ध	–	नि	–	सां	–
खु	र	–	मा	–	–	–	खा	–	–	जा	–	–	–
सां	नि	–	ध	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
गुं	–	–	जा	–	–	–	म	ठ	–	री	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×				२		०				३			
सां	नि	–	सां	–	सां	–	नि	ध	–	प	–	ध	–
ध	र	–	ध	–	र	–	तें	–	–	न	–	र	–
नि	–	–	ध	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
ना	–	–	रि	–	मु	–	दि	त	–	म	–	न	–
म	–	–	म	–	प	–	ध	नि	–	ध	–	प	–
गो	–	–	पां	–	–	–	ग्वा	–	–	ल	–	जु	–
म	ग	–	रे	–	सा	रे	ग	म	–	रे	–	सा	–
रे	–	–	व	–	हु	–	ठ	ठ	–	री	–	–	–

टे– – रि–टे– –रि–ज–ब–,दे– –त–स–ब न–को – – –,ले–
– – ले – – –ना– –म–बु–ला– –इ–नि–क ट–री – – –,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग कान्हरो–ताल धमार

हरि जनमन ही आनंद भयो ।
नवनिधि प्रगट भई नंदद्वारे, सब दुख दूरि गयो ॥१॥
वसुदेव देवकी मतो उपायो, पलना मांझि लयो ।
कमलाकंत दियो हुंकारो, जमुना पार दयो ॥२॥
नंद जसोदाके मन आनंद, गर्ग बुलाय लयो ।
'परमानंद'प्रभु असुरनिकंदन गोकुल प्रगट भयो ॥३॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थायी

×				२		०				३			
सां	सां	–	सां	सां	रें	नि	ध	–		प	–	ध	–
ज	न	–	म	न	–	ही	–	–		आ	–	–	–
नि	–	–	ध	प	–	म	ग	–		रे	–	सा	–
नं	–	–	द	भ	–	यो	–	–		ह	–	रि	–
म	म	–	म	प	ध	नि	–	–		ध	–	प	–
ज	न	–	म	न	–	ही	–	–		आ	–	–	–
म	ग	–	रे	सा	रे	ग	म	–		रे	–	सा	–
नं	–	–	द	भ	–	यो	–	–		–	–	–	–

अन्तरा

×				२		०				३			
गं	गं	–	गं	गं	–	रें	रें	–		सां	–	सां	–
न	व	–	नि	धि	–	प्र	ग	–		ट	–	भ	–
नि	सां	–	रें	रें	–	गं	मं	–		रें	–	सां	–
ई	–	–	नं	द	–	द्वा	–	–		रे	–	–	–
सां	सां	–	नि	ध	–	प	ध	–		नि	–	सां	–
स	ब	–	दु	ख	–	दू	–	–		रि	–	ग	–
रें	नि	–	ध	प	–	म	प	ध		ग	–	रे	सा
यो	–	–	–	–	–	–	–	–		ह	–	रि	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

×					२		० संचारी			३			
सां	सां	–	सां	–	सां	–	नि	ध	–	प	–	ध	–
व	सु	–	दे	–	व	–	दे	–	–	व	–	की	–
नि	नि	–	ध	–	प	–	म	ग	–	रे	–	सा	–
म	तो	–	–	–	उ	–	पा	–	–	यो	–	–	–
म	म	–	प	–	ध	–	नि	–	–	ध	–	प	–
प	ल	–	ना	–	–	–	मां	–	–	झि	–	ल	–
म	ग	–	रे	–	सा	–	ग	म	–	रे	–	सा	–
यो	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

"आभोग अन्तारानुसार"

राग नायकी–ताल चोताल

वारों मीन खंजन आलीके द्रगन पर भ्रमरगन ।
अतिहि सलोने लोनें अतिहि सुढार ढारें अति कजरारे भारे जिनही अंजन ॥१॥
स्वेत असित कटाक्षन तारे उपमाको मृगही कंजन ।
'परमानंद'प्रभु रसवस कर लीने प्यारीजूके मनके रंजक ॥२॥

स्थायी

											४	
										नि	सा	रें
										वा	रों	–
×		०		२		०		३				
प	–	–	म	प	निप	ग	–	म	रे		रेग	सारें
मी	–	–	न	–	——	खं	–	–	ज		——	न–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	नि	-	धप	ध	म	प	प	निप	नि	सां	-
आ	ली	-	के-	-	द्र	ग	न	--	प	र	-
नि	प	म	प	धप	मप	ग	ग	म	रेग	सा	रे
भ्र	-	-	म	--	र-	ग	न	-	वा-	-	रों

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	-	नि	म	प	सां	-	सां	सां	-	सां
अ	ति	-	हि	-	स	लो	-	ने	लो	-	नें
नि	सां	-	रें	-	गंरें	गं	गंमं	रें	सां	नि	प
अ	ति	-	हि	-	सु-	ढा	--	र	ढा	-	रें
सां	सां	-	नि	ध	म	प	धप	निप	नि	सां	सां
अ	ति	-	क	-	ज	रा	--	रे-	भा	-	रे
रें	नि	ध	म	प	धप	ग	ग	म	रे	सा	रे
जि	न	-	ही	-	अं-	ज	न	-	वा	-	रों

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	-	-	म	प	प	नि	प	-	सां	-	सां
स्वे	-	-	त	-	अ	सि	-	-	त	-	क

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	–	–	सां	नि	प	नि	ध	नि	प	–	–
टा	–	–	क्ष	–	न	ता	–	–	रे	–	–
म	म	–	प	नि	प	म	ग	–	म	प	प
उ	प	–	मा	–	–	को	–	–	मृ	–	ग
प	–	–	मप	नि	प	ग	–	म	रे	–	सा
ही	–	–	कं-	–	–	ज	–	–	न	–	–

'आभोग अन्तरानुसार'

राग अडाना–ताल तीव्रा

राधेजू झूलत रमकि रमकि ।
मनि कचनको सुरंग हिंडोरो ता मधि दामिनि दमकि दमकि ॥१॥
गावत गुन गिरिधरनलालके उठत दसन छबि चमकि चमकि ।
बाढ्यो हे रंग 'गदाधर'प्रभु संग गयो हे मदन तहां तमकि तमकि ॥२॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
नि	प	निम	प	सां	–	–	नि	ध	नि	प	म	म	प
रा	–	धें-	जू	झू	–	–	ल	–	–	त	र	म	–
नि	प	म	प	गम	रे	सा	नि	प	निम	प			
कि	-	–	र	म-	कि	-	रा	–	धें-	जू			

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×			२		३		×			२			३		
म	प	निध	नि	सां	सां	—	निसां	रें	रें	सांनि	सां		निध	निप	
म	नि	कं-	च	न	को	—	सुरं	ग	हिं	डो-	—		रो-	—	
मप	नि	सां	गं	गंमं	रें	सां	नि	सां	—	रें	नि		सां	सां	
ता-	म	धि	दा	—	मि	नि	द	म	—	कि	—		—	द	
निध	नि	प	नि	प	निम	प									
म-	—	कि	रा	—	धें-	जू									

संचारी

×			२		३		×			२			३		
सां	सां	सां	नि	ध	नि	प	निध	नि	सां	—	निध		नि	प	
गा	व	त	गु	न	गि	रि	धर	न	ला	—	ल-		के	—	
मम	प	प	नि	सां	नि	प	म	म	प	ग	—		म	रेसा	
उठ	त	द	स	न	छ	बि	च	म	—	कि	—		—	च-	
रे	—	—	सा	—	—	—									
म	—	—	कि	—	—	—									

"आभोग अन्तरानुसार"

राग बिहाग–ताल त्रिताल

सखियन रुचि रुचि सेज बनाई ।
रंगमहलमें परि गये परदा, धरी अंगीठी सुखदाई ॥१॥

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सीतसमे ग्रीष्म रितु कीनी, अति सुन्दर वरदाई ।
'श्रीविट्ठल गिरिधारि' कृपानिधि, पोढे ओढ रजाई ।।२।।

स्थायी

०	३	×	२
सा सा म ग	प – नि धनि	सां – नि निध	पम प गम ग
रु चि रु चि	से – ज ब–	ना – ई ––	स– खि य- न
सा सा ग म	प पम ग म	ग – – रे	सा – – –
रु चि रु चि	से – ज ब	ना – – –	ई – – –

अंतरा

०	३	×	२
प – म गम	प प नि –	सां सां सां सां	निसां गंरें सां –
रं – ग म-	ह ल मैं –	प रि ग ये	प– र– दा –
प प म गम	प प नि नि	सां – निध नि	पम प गम ग
ध री अं –	गी ठी सु ख	दा – ई– –	स– खि य– न

संचारी

०	३	×	२
प – प म	प – ग म	प – नि नि	सांनि सां निध प
सी – त स	मे – ग्री –	ष्म – रि तु	की– – नी– –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ध प म प	ग म प म	ग – – रे	सा – – – –
अ ति सुं –	द र व र	रा – – –	ई – – – –

आभोग

०	३	×	२
प – सां –	सां सां सां सां	सां – गं रें	सांनि सां नि नि
श्री – वि –	ठ ल गि रि	धा – रि कृ	पा– – नि धि
प – म गम	प – नि नि	सां – निध नि	पम प गम ग
पो – ढे ––	ओ – ढ र	जा – ई– –	स– खि य– न

राग विहाग–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

घरि घरिको रुसनो केसे बनि आवे। हे कोउ चेरी तेरे बाबाकी, नित्त उठि पैयां लागि तोहि मनावे ॥१॥ अब तो कठिन भई मेरी आली, तो बिनु लाल ओर नहिं भावे। 'आसकरन'प्रभु मोहन नागर, मुरलीमें राधे राधे गावे ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३
प प	म ग गम	प निध	प गम ग
घ रि	घ रि को-	रु ––	स नो– –
नि सा	गम प म	ग –	रे सा –
के –	से- ब नि	आ –	– वे –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२			०		३		
प	–	नि	–	नि	सां	–	सां	–	–
हे	–	को	–	उ	चे	–	री	–	–
नि	सां	गं	गं	मं	गं	रें	सां	नि	–
ते	–	रे	बा	–	बा	–	की	–	–
प	प	म	ग	म	प	–	नि	–	नि
नि	त	उ	ठि	पै	यां	–	ला	–	गि
सां	नि	प	ध	प	ध	प	म	ग	म
तो	–	हि	–	म	ना	–	वे	–	–

संचारी

×		२			०		३		
प	प	प	–	प	ध	प	म	ग	गम
अ	ब	तो	–	क	ठि	–	न	–	भ–
प	–	नि	–	नि	सांनि	सां	निध	पम	प
ई	–	मे	–	री	आ–	–	ली–	––	–
प	–	प	ध	म	ग	–	सा	–	–
तो	–	बि	–	नु	ला	–	ल	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	–	निसा	ग	म	पम	प	गम	ग	रेसा
ओ	–	र–	न	हिं	भा–	–	वे–	–	––

आ–स–क र न प्र भु–मो–ह–न ना–ग–र मु र ली – –में–रा––धे–रा–धे गा–वे– –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग बिहाग–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

नवल किसोर नवल नागरियां ।
अपनी भुजा श्यामउर ऊपर, श्यामभुजा अपने उर धरियां ।।१।।
करत विहार तरनीतनयातट, स्यामा स्याम उमगि रसभरियां ।
रही लपटाय प्रानप्यारेसों, मनि मरकत कंचन जेसे जरियां ।।२।।
या उपमाको रवि ससी नाहीं, कंदर्प कोटिक वारने करियां ।
'कृष्णदास'प्रभु गिरिधर नागर, नंदनंदन ब्रिखभानदुलरियां ।।३।।

स्थायी

×		२			०		३		
प	पम	ग	प	म	ग	गरे	सा	–	नि
न	व–	ल	–	कि	सा	––	र	–	न
सा	सा	ग	ग	म	प	गम	ग	रे	सा
व	ल	–	ना	–	ग	रि–	यां	–	–

अंतरा

×		२			०		३		
प	प	सां	–	–	रें	सां	सां	–	–
अ	प	नी	–	–	भु	–	जा	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सां	–	गं	गं	मं	गं	रें	सां	नि	–
स्या	–	म	उ	र	ऊ	–	प	र	–
सां	नि	प	–	प	ध	प	म	ग	म
स्या	–	म	–	मु	जा	–	अ	प	–
प	–	सां	सां	नि	प	मप	ग	म	गम
ने	–	उ	र	–	ध	रि–	या	–	–

संचारी

×		२			०		३		×
प	प	प	ग	म	प	–	प	–	–
क	र	त	–	बि	हा	–	र	–	–
ग	म	प	नि	नि	सां	नि	प	प	–
त	र	नि	त	न	या	–	त	ट	–
नि	ध	प	म	प	ग	म	ग	–	सा
स्या	–	मा	–	–	स्या	–	म	–	उ
नि़	सा	ग	ग	म	प	गम	ग	रे	सा
म़	गि	र	स	–	भ	रि–	यां	–	–

"आभोग अन्तरानुसार"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग बिहाग–ताल चौताल

रावलके कहे गोप आज ब्रज दूनी ओप,
कान दे दे सुनो बाजे गोकुल मंदिलरा ।
जसोदाके पूत भयो त्रिखभानजूसों कह्यो,
गोपी ग्वाल ले ले धाये दूध दही गगरा ॥१॥
आगें गोपवृंदवर पाछें त्रिय मनोहर,
चलि न सकत कोउ पावन न डगरा ।
'चत्रभुज प्रभु' गिरधारीको जनम सुनि,
फूल्यो भोंरा फिरे नारदसों अगरा ॥२॥

स्थायी

×		०			२			०			३			४	
सां	–	सां	सां	–	सां	रें	नि	सां	नि	–	प				
रा	–	व	ल	–	के	क	हे	–	भो	–	प				
नि	ध	प	ग	–	म	प	ग	म	म	–	सां				
आ	–	ज	ब्र	–	ज	दू	नी	–	ओ	–	प				
नि	–	ए	नि	–	नि	सा	सा	ग	म	प	नि				
का	–	न	दे	–	दे	सु	नो	–	बा	–	जे				
सां	–	नि	प	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा				
गो	–	कु	ल	–	मं	दि	–	ल	रा	–	–				

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		०		२		०		३		०	
प	प	–	प	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
ज	सो	–	दा	–	:के	पु	–	त्र	भं	यो	–
नि	:नि	–	प	–	प	नि	ध	सां	नि	–	प
त्रि	ख	–	भा	–	न	जू	–	सों	क	–	ह्यो
सां	–	गं	गं	–	मं	पं	गं	मं	गं	–	सां
गो	–	पी	ग्वा	–	ल	ले	–	ले	धा	–	ये
नि	सां	नि	प	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा
दू	–	ध	द	–	ही	ग	ग	–	रा	–	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
सा	–	सा	प	–	प	नि	ध	प	प	–	प
आ	–	गें	गो	–	प	वृं	–	द	व	–	र
प	–	प	–	ग	म	प	ग	म	ग	–	सा
पा	–	छें	–	त्रि	य	म	नो	–	ह	–	र
नि	–	प	नि	सा	सा	म	ग	प	नि	–	सां
च	–	लि	न	–	स	क	त	–	को	–	उ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नि	—	प	प	ग	म	प	ग	—	ग	—	सां
पा	—	ब	त	—	न	ड	ग	—	रा	—	—

च त्र–भु–ज प्र भु–गि–रि धा–री को–ज न म–सु–नि फू–ल्यो भों रा–फ रे–ना–र द सों–अ ग–रा– –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग बिहाग–ताल धमार

झूलेरी झूलेरी झूलें प्यारो लाल झूलै ।
सुरंग हिंडोरो रोप्यो, कालिंदीके कूलै ॥१॥
तेसीए सुहाई लागें द्रुम लता फूलें ।
'रसिकप्रीतम' देखे मिटी गई उर सूलें ॥२॥

स्थायी

×				२		०			३			
सां	—	—	सां	—	सां	—	नि	—	—	प	—	नि ध
झू	—	—	ले	—	री	—	झू	—	—	ले	—	री —
सां	—	—	नि	—	ध	प	प	म	प	ग	म	ग —
झू	—	—	लें	—	प्या	—	रो	—	—	ला	—	ल —
सा	—	—	ग	—	म	—	प	म	प	ग	—	म —
झू	—	—	ले	—	री	—	झू	—	—	ले	—	री —
ग	—	—	—	—	रे	—	सा	—	—	—	—	— —
झू	—	—	—	—	—	—	लें	—	—	—	—	— —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×					२		०			३			
प	प	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	–	–
सु	रं	–	ग	–	हिं	–	डो	–	–	रो	–	–	–
सां	–	–	–	–	रें	सां	नि	ध	–	सां	–	नि	–
रो	–	–	–	–	–	–	प्यो	–	–	–	–	–	–
प	–	–	ग	–	ग	म	प	–	–	नि	–	नि	ध
का	–	–	लि	–	–	–	दी	–	–	के	–	–	–
सां	–	–	नि	ध	नि	धप	प	म	प	ग	म	ग	–
कू	–	–	लें	–	–	प्या-	रो	–	–	ला	–	ल	–

संचारी

×					२		०			३			
प	–	–	प	–	–	–	प	म	–	ग	–	म	–
ते	–	–	सी	–	–	–	ए	–	–	सु	–	–	–
प	–	–	नि	–	ध	–	प	म	प	म	–	ग	–
हा	–	–	ई	–	–	–	ला	–	–	गें	–	–	–
सा	–	–	ग	–	म	–	प	–	–	ग	–	म	–
द्रु	–	–	म	–	ल	–	ता	–	–	–	–	–	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ग — — — —	रे —	सा — —	— — — —
फू — — — —	— —	लें — —	— — — —

रसि—क— — —प्री— —त—म—,दे- — — — — खे— — — — —,ग— —इ— —
उ—र— — —, सू — — ले प्या रो— — ला—ल—,

राग शुद्ध बसंत (पंचम वर्ज्य प्रकार) ताल आदिताल
(मध्यम ग्राम से गाया जाता है)

खेलत बसंत गिरिधरनचंद । आनंदकंद वर मनके फंद ।।ध्रु०।।
सोहत संग सुंदर वेनु बीन । त्रिखभानकुंवरी अतिसय प्रवीन ।
दोउ छविके सिंधु तहां रहत लीन । ललितादि सखिनके नेनमीन ।।१।।
बनी मंजु कुंज जमुनाके कूल । भीने नवकेसरि दुकूल ।
रंगभरत हंसत दोउ सुखके मूल । तिने देखि मिटे सब तनको सूल ।।२।।
धिधिकट धिधिकट बजत मृदंग । डिडिडमक डमक डमक डफ मिले हे संग ।
ठठठनन ठनन करे तालरंग । गगगनन गनन बाजे उपंग ।।३।।
गावत अलाप तननननन । निंदित कोकिल समननननन ।
रंगभरत बलहि करि झिनिननननन । तब भरेरी नेन इनननननननन ।।४।।
रंगभरत परस्पर करत हास । नहीं बरनि बात रसनाविलास ।
सब बंधी हें जुगल हित प्रेमपास । बलिहारि गयो जहां कृष्णदास ।।५।।

स्थायी

३	×	२	०	३	×	२	०
म ग	म ध	नि सां	— सां	नि ध	ध धनि	ध म	— म
खे —	ल त	ब सं	— त	गि रि	ध र—	न चं	— द

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

३	×	२	०	३	×	२	०
नि सां	रें –	रें गं	रें सां	नि ध	म ध	नि सां	– सां
आ –	नं –	द कं	– द	व र	म न	के फं	– द

सो–ह त सं ग सुं–द र वे–नु बी–न ब्रि ख भा–न कुं व री अ ति स य प्र वी–न

"प्रत्येक संचारी एवं आभोग, स्थायी अन्तरा अनुसार"

राग रामकली–ताल चर्चरी

माई सोहिलरा नंद महर–घर, बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति। सखी सहेली मिलि मंगल गावें रिखि मुनि बेद पठत ब्रह्मा सिव सुर मुनि फूले सुरपति ॥१॥ भयो आनंद तिहूं पुर घर मंगल, विप्र अभय कीने व्रजपति ॥ 'जगन्नाथ-' प्रभु प्रगट भये हें, कूख सिरानी रानी जसुमति ॥२॥

स्थायी

×		२		०		३		
रें	–	रें	सां	–	नि	ध	ध	प	–
सो	–	हि	ल	–	रा	–	आ	ज	–
म	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा	–
नं	–	द	–	म	ह	र	घ	र	–
सा	गम	प	–	प	ध	ध	ध	प	–
बा	जे–	बा	–	जे	मं	दि	ल	रा	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प	ध	सां	–	सां	ध	प	प	ग	म
अ	नु	प	–	म	ग	ति	मा	–	ई
ध	–	ध	प	म	प	–	–	–	–
सो	–	हि	ल	–	रा	–	–	–	–

अंतरा

×		२			०		३		
गं	–	गं	–	गं	मं	–	मं	मं	गं
स	–	खी	–	स	हे	–	ली	मि	ल
रें	–	रें	सां	रें	गं	रें	सां	–	–
मं	–	ग	ल	–	गा	–	वें	–	–
रें	रें	रें	सां	–	ध	ध	प	प	प
रि	खि	मु	नि	–	बे	द	प	ठ	त
ग	म	प	ध	सां	नि	ध	प	ग	म
त्र	–	ह्मा	सि	व	सु	र	मु	नि	–
सां	–	सां	सां	सां	ध	प	म	ग	म
फू	–	लें	सु	र	प	ति	मा	–	ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संचारी

×		२			०		३		
सां	–	सां	सां	नि	ध	–	ध	प	म
भ	–	यो	आ	–	नं	–	द	ति	हैं
ध	ध	प	प	–	ध	म	प	प	–
पु	र	घ	र	–	मं	–	ग	ल	–
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	–	सा
अ	भ	य	की	–	ने	–	वि	–	प्र
ग	म	प	नि	ध	प	म	प	–	–
ब्र	–	ज	–	प	ति	–	–	–	–

आभोग

×		२			०		३		
–	–	गं	गं	–	मं	–	मं	मं	गं
–	–	ज	ग	–	ना	–	थ	प्र	भु
रें	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	–	–
प्र	ग	ट	–	भ	ये	–	हैं	–	–
रें	रें	रें	सां	–	ध	–	प	–	प
कू	ख	सि	रा	–	नी	–	रा	–	नीं
ग	म	प	ध	सां	नि	ध	प	ग	म
ज	–	सु	–	म	ति	–	मा	–	ई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूर्वप्रकाशित अष्टछापीय भक्तिसंगीत के भा—२ तथा इस ग्रन्थमें दिये हुए स्वरांकनसहितके पदोंमेंसे यहां ३८ रागोंकी १०० बंदिशोंके अनुसार गाये जाने वाले

२८० विभिन्न समान पदोंकी नामावली

राग भैरव

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ६ जे जे जे श्री वल्लभप्रभु अनुसार

(१) जागिये गोपाललाल प्रगट भयो (जगायवेको)

(२) नाचत त्रिखभानकुंवरी हंससुता (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १५ छगन मगन प्यारे लाल अनुसार

(१) आछो नीको लोनो मुख भोर ही (कलेऊ)

(२) जागिये गोपाललाल जननी (जगायवेको)

सं. सु. पृष्ठ ४२ जागिये ब्रजराजकुंवर कमलकोस अनुसार

(१) जागिये गोपाललाल ग्वाल द्वार ठाडे (जगायवेको)

(२) जागिये गोपाललाल देखों मुख तेरो (जगायवेको)

(३) मदभरे मतवारे नैंन खोलो क्यों न (जगायवेको)

सं. सु. पृष्ठ ४५ नागरी नंदलाल संग अनुसार

(१) प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी (खंडिता)

(२) चमक आयो सो मुख कुंजतें जब (खंडिता)

(३) निर्तत गोपालसंग गोपिका मिली (रास)

(४) प्रातकाल झूलत हिंडोरे (हिंडोरा)

राग रामकली

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६ नंदको लाल ब्रजपालने झूलें अनुसार

(१) प्रेखपर्यंकशयनं (पलना)

(४) राधिका श्यामतन देख मुसकानी (खंडिता)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(५) जयति श्रीराधिके सकलसुखसाधिके (मंगलादर्शन)

(२) लाल्यति दोलिकामंच (पलना)

(३) प्रेमपर्यंक गिरिधरन सोहे (पलना)

अ. भ. सं. भा. २, पृ. २४ पालने गोबिंद झूलो अनुभार

(१) झूलो पालने नंदनंदन (पलना)

(२) झूलो पालने बलि जाऊं (पलना)

(३) बलि बलि चरित्र गोकुलराय (बाललीला)

(४) सिखवत चलन जसोदा मैया (बाललीला)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १० लालको मुख देखन अनुसार

(१) तिहारो दरस मोहि भावे श्रीजमुनाजी (श्रीयमुनाजी)

(२) यह प्रसाद हों पाऊं श्रीयमुनाजी) (श्रीयमुनाजी)

(३) तिहारो दरस हों पाऊं श्रीयमुनाजी (श्री यमुनाजी)

(४) श्रीजमुनाजी तिहारो पुलिन मोहि भावे (श्रीयमुनाजी)

(५) तुम सम ओर न कोई श्रीजमुनाजी (श्रीयमुनाजी)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ पिय संग रंग भरि अनुसार

(१) जमुनासी नाँही कोइ दुःखहरनी (श्रीयमुनाजी)

(२) श्री जमुनाजी के ४० पद भी इस प्रकार गाये जाते हैं ।

राग खट

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ, ४०:आज नंदलाल मुखचंद तथा आज उठि भोर अनुसार

(१) पाछली रात परछांही पातनकी (मंगला)

(२) नवल ब्रजराजके लाल ठाडो सखी ललित (मंगला)

राग परज

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ५० सुनोरी आज मंगल बधायो अनुसार

(१) सुनोही आज नवल बधायो (श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई)

(२) सुनोरी आज नवल बधायो (श्रीगुसाईजी की बधाई)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग ललित

अ. भ. सं. भा. २, पृ. ५५ कमलसी अखियां लाल तिहारी अनुसार

(१) भोर भये मुख देख लजाने (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ५६ आज सगरी निसा कहां अनुसार

(१) आज निस जागे अनुरागे पागे कोनके (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १६ क्यों मोहन दरपन नहि अनुसार

(१) एसे ही एसे रेन विहानी (खंडिता)

(२) एसेई सांवरें रेन बिहानी (खंडिता)

राग—बिभास

अ. भ. सं. भा. ३, पृ. १२ प्रातसमें नवकुंजद्वार व्हे अनुसार

(१) प्रातसमें नवकुंजमहलमें श्रीराधा (मंगला)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३६ रतनजटित कनकथाल अनुसार

(१) बांकी भ्रोह टेढी पाग (मंगला)

राग मालकोस

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १९ माई रंग रंगे हो लाल अनुसार

(१) जरीको जरायवेको ततीतन तायवेको (खंडिता)

अ. भ. सं. भा. २ पृ. ६७ पीर न जानी अहो पिय अनुसार

(१) सब मिल आवो गावो बजावो

अ. भ. सं. भा. २, पृ. ६७ नख कहां लागे बन बानश ।

(१) लहकन लागी बसन्तबहार (वसंतबहार)

(२) लहकन लागीरी बसन्तबहार (बसंतबहार)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ १४ मोरी भरी मटुकिया ले गयोरी अनुसार

(१) पिय बिन जागत रेन गई (खंडिता)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग देवगंधार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ७३ आजु बधाई मंगलचार अनुसार

(१) ब्रजमें — घर घर बजत बधा — ई (ज. बधाई)

(२) आज जगती पर जे — जे — का —२ (म. बधाई)

(३) भूतल महामहोत्सव आज (म. बधाई)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २३ नेन भर देखो नंदकुमार अनुसार

(१) आज बन कोऊ वह जिन जाय (ज. बधाई)

(२) भू – त – ल – प्र – ग – ट–भ – ये– – – – श्री व–ल्ल – भ – (म. बधाई)

(३) बे – द – ब–च – न– – –प्रतिपा– – – – –ल्यो– – चहुं – जुग (गु. बधाई)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २२ मंगल रूप निधान सांबरो अनुसार

(१) आज गृह नंद महरिके बधाई (ज. बधाई)

(२) कृष्णा – न न द्वि ज रू – प प्रगटे — (म. बधाई)

(३) वल्लभरा – ज कु मा – र ज य श्री — (गु. बधाई)

(४) झूलत बढ्यो – आनं – द मो – ह न (डोल)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ७५ अद्भुत डोल बनी अनुसार

(१) डो – – ल – दो – ऊ – – अ – नु – रा – – गे – – – झू – – ल – त – (डोल)

राग अल्हैया बिलावल

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १०७ आजुको सिंगार देख्यो अनुसार

(१) चलहु राधिके सुजान (रास)

(२) आज नागरी किसोर (रास)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) आजको सिंगार सुभग सांवरे (सिंगार)

सं. मु. पृष्ठ ५८ भोग सिंगार मैया सुनि अनुसार

(१) आज सिंगार निरख स्यामाको (सिंगार)

(२) ग्वालिनि दान हमारो दीजे (दान)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ११४ महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम अनुसार

(१) सोभा आज भली बनि आई (शृंगार)

(२) आनंद आज नंदजूके द्वार (ज. बधाई)

(३) आज नंदजूके द्वार भीर (ज. बधाई)

सं. मु. पृष्ठ ५५ लटपटी पागके पेच संवारो अनुसार

(१) छांड देहु सुरपतिकी पूजा (गो. पूजा)

(२) राख लेहो गोकुलके नायक (इंद्र–मानभंग)

राग धनाश्री

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १३० सब मिलि मंगल गावो अनुसार

(१) चिरं – जि यो – गो – पा – – ल रा नी तेरो, – चि रँ – जि यो – गो पा – – – – – ल – (ज. बधाई)

(२) आ – पुन मं – ग ल गा – वे हो रा–नी जू, – आ पु न मं – ग ल गा – – – – वे – (ज. बधाई)

(३) जा – यो हो हे – सु त नी – को जसोदारानी, – जा यो हो हे – सु त नी – – – – – को – (ज. बधाई)

(४) ब्रजवा – सि न को म गा – – – हो – ब्रज, ब्रजबा – सि न को म गा – – – – – हो – (ढाढी)

(५) दुलहे – हो – न द ला – ल न्या – य दि न, – दुलहे – हो – नं द ला – – – – – ल – (ब्याह)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(६) धा–ई श्रीव – लभ द्वा – – र आ – जं व, धा – ई श्री व – लभ द्वा – – – – – र – (गु. बधाइ)

(७) आ–ये – ब लि पे – मां – ग न वा – मन, आ – ये – बलिपे – मां – – – ग – न – (वा. जयंती)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ २७ लालको मीठी खीर अनुसार

(१) वा – री – ते – रे – मुख पर ललना हो, बा – री – तें – रे – मुख – – पर – –

(२) रा – खो – अपनी – ओ – – ट मा – घो जू, रा – खो – अपनी – ओ – – – ट – – – (इंद्रमानभंग)

(३) मं – द का – न्ह ए क ठो – रे–जें – व त, नं – द का–न्हएकठो – – – रे – – – (भोजन)

(४) नं – द गो पा – ल खि जा–वत जें – वत, नं – दगोपा – ल खि जा – – – व – त – (भोजन)

(५) नं – द का – न्ह बल मै – या – जें – व त नं द का – न्ह बल मै – – – या – – – (भोजन)

(६) रो – टी – ओ – र ब री – – ला –ल को –, रो–टी – ओ – र ब री – – – – – – – (भोजन)

(७) करिउ – ठे – दो उ मै – या–भो – जन, करिउ – ठे – दोउ मै – – – या – – –, (अचवन)

अ. भ. सं भा. ३, पृष्ठ ३० मनहर लें गये नंदकुमार अनुसार

(१) ए – सी टे – व परी – – सखियन (हिलग)

(२) मा – घो सों – मन मा – न्यो मेरोमाई (हिलग)

(३) लो – मी मे – रे–ने – न सखीरी– (हिलग)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग आसावरी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १४४ गिरिधरलाल पालने झूले अनुसार

(१) बरसाने ब्रिखभान गोपके (राधाष्टमीकी बधाई)

(२) पोष कृष्ण नौमीको सुभदिन (गु. बधाई)

(३) चलरी सखी वृंदावन जैये (वसंत धमार)

(४) प्रीति बंधी श्रीवल्लभपदसों (म. बधाई)

(५) प्रिय नवनीत पालने झूले (पलना)

(६) नंदलालसो मेरो मन मान्यो (हिलग)

(७) बरसानेकी नवल नारि मिलि (वसंत धमार)

(८) देखो अदभुत अबगतिकी गति (ज. बधाई)

(९) बरसगांठि गिरिधरनलालकी (ज. बधाई)

(१०)मदनमोहनसों प्रीत करी में कहाजु भयो (हिलग)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३३ मेरो माइ हरिनागरसों नेह अनुसार

(१) तुमको — लालक यों — हे — घै — या (घैया)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३२ ग्वालिन कृष्णदरससों अटकि अनुसार

(१) माईमेरो स्या — म ल ग्यो — संग डो — ले — (हिलग)

(२) ग्वा — लिन तें — मे री गें — द चूरा — ई — (संक्रान्ति)

(३) मा—ई—मी — ठे — हरिजूके बो — लना (पलना)

(४) मैया मोहि ए — सी — दु ल ह नि भा — वे — (ब्याह)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १४२ जाको मन लाग्यो गोपालसो अनुसार

(१) देखो अदभुत अवगतिकी गति (ज. बधाई)

(२) हों ढोटा तोहि क्यों छाँडो (दान)

राग तोडी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १५३ ए कहुँ ऊमड घूमड गरजत अनुसार

(१) तें कहूं देख्योरी आली नंदकों नंदन (दान)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) कि – ये –, चटक मटक ठा – – डो – इ, रह – त – – पनघट
पर, पनि – हा – – रन –सों– –, कर – त– –डो – –क–

अ. भ. सं, भा. २, पृष्ठ १५२ बहुत प्रसन्न भये पिय प्यारी अनुसार

(१) नवल निकुंजमहल रसपुंज ही (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३४ जेवत दोऊ रंग भरे अनुसार

(१) आ – ज हमा – रे भो – ज न की–जे (भोजन)

(२) परोसत गो – पी घूं – घट मा – रें (भोजन)

(३) अचवन की – जे कृपा – नि धा – न (अचवन)

(४) बी – री – नबलखा – लिन ला – ई (वीरी)

(५) जमुना – जल क्रीडत नंदनंदन (स्नानयात्रा)

(६) गो – विंद छिर कत छीं – ट अनू – प (स्नानयात्रा)

(७) क्री – डत का – लिंदी – ज ल मां – ही (स्नानयात्रा)

रागमारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १७३ श्रीलक्ष्मनगृह महामंगल भयो अनुसार

(१) जे वसुदेव किये पूरन तप (गु. वधाई)

(२) बडडेनको आगे दे गिरिधर (गोवर्धनपूजा)

(३) अक्षयतृतीया अक्षय लीला (अक्षयतृतीया)

(४) अक्षय तृतीया अक्षय सुखनिधि (अक्षय तृतीया)

(५) चैत्रमास संवत्सर परवा बरस प्रवेस कियो हे आज (संवत्सर)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ४० तरनितनया-तीर अनुसार

(१) फूल्यो – जन भा –ग्य पथ, पु –ष्टि प्र – ग ट करन दु – ष्ट पा –खं
– ड म त, खं – ड खं – ड न कि ये – (म. बधाई)

(२) पो–स नि – दों – स सु ख, पो – स सु – द र मा – स, कृ – ष्ण
नौ – मी – सुभग, नवघरी – दि न आ – ज (गु. बधाई)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) ब – ठे हरि कुं – ज नव, रं–ग रा–धे – सँ–ग, पहरि छू–टे – बं–ध, अं–ग बा–गो–ला–ल (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ४२ दानघाटी छाक अनुसार

(१) फूलनको मुकुट बन्यो फूलनको पिछोरा (फूलमंडली)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ५३ घर घर ग्वाल देत हे हेरी अनुसार

(१) दे – – ख – ह – री – – को – म – ह – – ल – – – दे – – ख–री – (फूलमंडली)

(२) आ – – व – त–हीं – – ज– मु –ना – – भ – र–पा – – नी – – – (पनघट)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३७ लोचन ही को तारो ब्रजजन अनुसार

(१) सौ – र भ मा – घ वीं सरस सुहा – ई – (फूलमंडली)

(२) पू – जन चले री गो पा – ल गोवरधन, पू–जन चलेरी गोपा – – – ल – – – (गोवर्धनपूजा)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १६९ वृदावन कुंजनिमें मध्य अनुसार

(१) सी – त ल –उ सी –र गृ–ह, छी–र क्यो–गु ला–ब नी–र, तहां – बे – ठे पि य – प्या – री, के – – लि – करत – हे – – (खसखानो)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३६ आई ग्वालिन गोरी अनुसार

(१) बे – ठे – कुं – जभव– – न ला – लन (कुंज)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ, मोहन जेंवत छाक अनुसार

(१) आज नवकुंजनकी–अतिशोभा (कुंज)

गौड सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १९९ हो नहि जान्यो री माई अनुसार

(१) हों नीके जानत री आली बहुनायक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नूर सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २०३ चलो सखी कुंज गोपाल अनुसार

(१) चलो – किन दे–ख न कुं – जकुटी– – – – – – – (कुंज)

(२) घा – ट पर ठा – डे – मदन गोपा – – – – – – (पनघट)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २०४ आजु दधि बेचन मोल अनुसार

(१) ला – लन वे – ठे – कुं – जस्थली – – – – – – (कुंज)

(२) ललन उठा – य दे हो – मेरी गगरी – – – – – (पनघट)

(३) ठा – डो ई दे – खो – जमुना – घा – – ट – – – – (पनघट)

मधमाध सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १८४ सूर आयो सिर पर अनुसार

(१) ज्ये – ष्ठ मा–स तपत धा–म, कहा–को–सिधा–रोला–ल, ए–सी को–न चतुर ना –रवा – को बी–रा ली– नो– –(दुपहरी)

सामत सारंग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ १८८ अनत न जैये अहो पिय अनुसार

(१) बिराज – त दो – – – ऊ – उ सी – र – महल, छूटत – – – फु – हा– रे – आ–गें–नी– – – के – – बि रा ज–त (खसखाना)

राग गौरी

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ६४ नातर लीला होती जूनी अनुसार

(१) हों–चरना–तप–त्रकी–छै–याँ (गु. बधाई)

(२) वं–दे–श्री–वि–ट्ठलचरणं– – –(गु. बधाई)

(३) वं–दे–हं–तं–विमलहुता–शं– (म. बधाई)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २५८ बनतें आवत गावत अनुसार

(१) गो–रजरा–जत सो–वलअं–ग– (आवनी)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) आ–वत हे–आ–गे–दें–गै – या – (आवनी)
(३) क्री–डतका–न्हकनिकआं–गन– – –(बाललीला)
(४) दूलहे–दुलहनि अधिक बनी – – – (ब्याह)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६० वे देखो आवत हे गिरधारी अनुसार

(१) झूक रही सुनि–मुरलीकी टे–र (आवनी)
(२) मै–या–या–तें भई–अवे–र (आवनी)
(३) गिरितन सो–भित हे–गिरिधा–री (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २५९ लटकत चलत जुवति अनुसार

(१) देख न दे–तनबै–रिन पलकें– (आवनी)
(२) मो–हन दे–खसिरा–ने–नयना (आवनी)
(३) आ–वत मो–हन मनवुहयों –हो– (आवनी)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २६३ मेरे मन आनंद भयो अनुवार

(१) मेरे मन आनंद भयो (रा. बधाई)

राग मारु

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७३ कृष्णजनम सुनि अपने अनुसार

(१) आ– –ज–क–हूं– –तें– – –, या– –गो– – – कुल – में– – –, अ– –दभु–त–बर–खा – – –, आ– – ई– – –हो– – – – – –, (ज. बधाई)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७२ आज रघुवीरको वीर आयो अनुसार

(१) सुखद रवि को–टिसम, भवनभ्रा–जे– – – –, (ज. बधाई)
(२) लं–क प्रतिरा–मअं–, गद पठा – वे– – – –, (करखा)
(३) देखे हो–क थरघु, ना–थ आ–यो– – – –, (करखा)
(५) इ–न्द्र – को पतें ब्रज–,जन छुडा–ई– – – – (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २७० हिंडोरे झूलत बंसीवाला अनुसार

(१) हो – त कुला–हल, भा–री–ब्रजमें–, हो– त:कुला – हल भा – – री – – –, (ज. बढाई)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) सी–ता–को–नेह, री– – होलछमन, सी–ता को–नेहरी– – – हो – – –, (करखा)

(३) रा–मरजा–हों–,पा–उ–जो–पें–रा–मरजा–हो–पा– – –उ– – –, (करखा)

(४) को–नदे–सतें–,आ –यो–बनचर, को–नदे–सतें–आ– – – यो– – –, (करखा)

(६) झू–लत सुरंग हिं, डो–रे–प्यारो प्यारी,झू–लत सुरंगहिं, डो– – –रे – – –, (हिंडोरा)

राग मालव

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २८५ रासविलास गहे करपल्लव अनुसार

(१) अला–गला–गनि उरप तिरप गति, नचवत व्रजललना–रा–से– – –, (रास)

(२) मदनगोपा–लरा -समं–डलमें–, मा–लव रा–ग–रसभर्योगा–वे–,

(३) चं-दगोविं-द गोपी–ता–रा–गन,–बन्यो–रा–स–में–बनवा–री– – –,

राग यमन

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ६७ जियकीन जानत हो पिय अनुसार

(१) मेरेरी बगर–में–आ–वत–,छबिसों–कम–ल–फि–रा–वत, (सेन)

(२) अब दूधला–ईजसोदा–मै–या, की–जे–पा– –नलला–रे–,

राग कल्याण

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३१३ डोल झूलत हें गिरिधरन अनुसार

(१) डो– –ल झू–ल–त–हे– –डो– –लझू– –ल–त–हे– – गि–रि–धर –न– –नवल–नं–द–ला– –ला– – –डो – – – –ल– (डोल)

राग केदार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३२३ राधिका आज आनंदमें डोले अनुसार

(१) रु–परसपुं–जबर, नों–कहा–चा–तुरी– (मान)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) आ—सरो—ए—कश्री—,व—ल भा—धी—सको (आश्रय)

(३) मधुरव्रजदे—सबसि, मधुरकी—नो— — — —

राग काफी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४० ऐरी सखी झूलत नवल किसोर अनुसार

(१) एरी सखी प्रगटे—कृ—ष्ण मुरा— — —रि— — — (ज. बधाई)

(२) एरी सखी झू—लत नवलकिसो— — — र— — — (हिंडोरा)

(३) एरी सखी सरद चाँ—दनी रा— — —त— — — (हिंडोरा)

(४) एरी सखी नीकसे—मो—हन ला— — —ल— — — (बसंत धमार)

(५) एरी सखी निकसी वृष भा—न कुमा— — —री— — — (बसंत धमार)

राग जयजयवन्ती

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४६ झूलत नवललाल झुलावत अनुसार

(१) वृंदावन बंसीबट कुंजकुंज जमुनातट (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३४८ माई आज तो गोकुल गाम अनुसार

(१) माई आज तो बधाई बाजे नंद (ज. बधाई)

(२) माई आज तो बधाई बाजे मंदिर महरके (ज. बधाई)

(३) माई आज तो मोहन संग रंगभरी (धमार)

राग कान्हरो

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७१ सुरभी कान जगाय खरिकहिं अनुसार

(१) श्री— —ल— — —क्ष्मन—गृ—ह—, प्रग—ट—भ—ये— —हे— — —श्री — — व— — —ल्लभ—प—र—, मा— —नं—द— —रू— —प— — —, (म. बधाई)

(२) पर-म—कृ—पा— —ल—श्री—, व — —ल्ल—भ—नं— —द—न—,कर— त —कृ—पा — —नि—ज—हा— —थ—ले—मा— —थे— — —, (गु. बधाई)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(३) प्रग–ट–भ–ई– – सो – – –,भा– –त्रि–भु–वन–की– – –,श्री – –त्रि–ख–भा– –न–गो–,–प–कें – – – आ – –ई– – – (रा. बधाई)

(४) श्री वि–ठ्ठ–ल–ना– –थ–ब–,सत–जि–य–जा – –के– – –, ता– – की– – –री– –त–प्री–,–त–छ–बि–न्या– –री– – –(गु. बधाई)

(५) श्री– –न–र–सिं– –ह–भ– –क्त–भ–य–भं– –ज–न–, रं– –ज –न–मन–स–ब–, सुख–का– – –री– – – – – –,(नरसिंह जयन्ती)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३५४ कापर ढोटा नेन नचावत अनुसार

(१) रा–ग–का–न्हरो–तुम, ही –पें–सुनि–यत–,श्री–भ्रखभा–न–नं–,दि –नी–रा–धे– – –,

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ हरि जनमत ही आनंद अनुसार

(१) यह–व्र–त–मा– –धो– – –, प्रथ–म–लि–यो– – – – – –, (नृसिंह जयन्ती)

(२) हरि–रा– – –खे– –ता– – –, हि– –ड–र–का–को– – –, (नृसिंह जयन्ती)

राग नायकी

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७१ लोंचन लालची भये अनुसार

(१) प्रीतको – म र म जा–न्यो (सेन द.)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७२ ठाडे कुंजभवन अनुसार

(१) प्या – रे पै – या पर्न नदी – नी (सेन द.)

(२) प्या – रे – अव – धि – – ट री – – (सेन द.)

(३) तू – मोहिला – ई री – कि त ग ली – (मान)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७५ वारो मीन खंजन मालीके अनुसार

(१) यह म न ला – – न्यो – – री – – मे – रो सुं – – द – २ स्या – – म – अ ही – – र – – सो – – म – न (सेन द.)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ३६९ मेरो पिय रसियारी अनुसार

(१) रुसनों – न कर प्या – री, रुसनो – नि वा – – रि –, रुसनो – न क र प्या – री (मान)

राग अडाना

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७९ तेरी भौंहकी मरोरनतें अनुसार

(१) जा – – ओ – री ला – ज मे – रें, ए – सी को – न का – ज आ – वें, कम – ल – न य न – नी – कें, दे ख – न – न दी – ने ज – ल (सेन द.)

(२) या – – म–ग नि क–सी – –, आ – – य – अ चा – – न–क, का – – न्ह – कुं व र – ठा – डे, अप – नी – – पो – र हों – तो, (सेन द.)

(३) की – – लो – – पट – ल – प, टा – – नो – – क टि – बं–सी, ब ट – ज – मु ना – – त ट –, ठा – डो नागर नट – च–ट (रास)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८० वेनी निरखत भुजंग अनुसार

(१) बं – सी – ब ट के – – नि क ट, ह रि – रा – स रच्यो – हे – –; मो – – र मु कु ट – अ–रु, ओ – – ढे – – पी–त–प–ट, (रास)

(२) रा – जें गि रि रा – ज आ – ज, गा – य गो–प जा – के त – र, बा – नि क – वि चि – त्र ब नी –, ध रें – मे – ख न ट – व – र (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३७६ जलको गई सुघट अनुसार

(१) सु र रा – ज आ – ज पा – – य न – प र्यो –, गि रि – ध र न आ – – पु – नो, क – – र्यो – – सु र – रा – ज, (इन्द्रमानभंग)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) श्री व – ल्ल भ ला – – डि – ले हो–तु मा – रे, च र – न – –
कम – ल – के, स र – न – – श्रीव – ल्ल – भ, (गु. बधाई)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८३ सब गोकुलको जीवन अनुसार
(१) ए – सब व्रज – के – – आनं – द कं – द गो – – कु ल पति
ना – – य क स व (इन्द्रमानभंग)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७७ राधेजू झूलत रमकि अनुसार
(१) पिय तोहि ने – – न– –नही– –में– – –रा–खूं (सेन)
(२) हिंडोरोरी व्र– –ज–के–आं– –ग– –न मां–च्यो (हिंडोरा)

राग रायसा

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३८८ झूलत राधामोहन अनुसार
(१) गोकुल गाम सुहावनो (ज. बधाई)
(२) द्विजकुल प्रगटे श्रीहरि (व. बधाई)
(३) फूलन रच्यो हे हिंडोरो (हिंडोरा)
(४) झूलत मोहन रंगभरे गोपवधू (हिंडोरा)
(९) सकल कुँवर गोकुलके (धमार)
(३) मिलजु डंडारस खेलही (धमार)

राग बिहाग

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३९५ बेठे ब्रजराजकुंवर प्यारी अनुसार
(१) मा – न कि यो – मा – नि नी – म, ना – यो हू – न मा – ने ने –
क, मा – न हू – में सो – य र ही –, मा – नि नी – न मा –
न कें – – (मान)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(२) दो – रीदो – री – आ – – ब – त, मो – – हे – म ना – – व–
त, दा – – म – ख र च – कछु –, मो – – ल – ल ई – – री
– – (मान)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ३९७ पोढे माई मदनमोहन अनुसार

(१) चरन मो – ह न ला – ल चाँ – पत, चरन मो – हन ला
– – – – ल – (पोंढवे)

(२) प्रे – म के – प र यं – क पो – ढे –, प्रे –म के –पर
यं – – – – क – (पोढवे)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ७८ सखियन रुचि रुचि सेज अनुसार

(१) रुचि रुचि से – ज ब, ना – ई – स खि य न, रुचि रुचि
से – ज ब, ना – – – ई – – –, (पोढवे)

(२) वि – ठ्ठ ल ना–थ ध, नी – – ह मा–रे श्री, बि – ठ्ठ ल ना – थ
ध, नी – – – – – – –, (पोढवे)

राग विहागरो

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ४०५ प्रभट व्हे मारगरीति दिखाई अनुसार

(१) झू – –ल – त – हें – – बां – ह –, जो – – रें –
– – ये – – दो – ऊ –, झू – – ल – त–हें – – वा
– ह–, जो – – – – – – रे – – – – – –,(हिंडोरा)

(२) न च – व – न – सिख – व – त –, प्या – – री –
– – पि य – को – – –, न च – व – न – सिख –
व–त–, प्या – – – – – – री – – – – – –, (रास)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ ४०७ भरोसो दृढ इन चरनन अनुसार

(१) व – – ल्ल – भ – ही – – को – – – , भा – – री – भ –
रो – – सो – – – , व – – ल्ल – भ – ही – – को – – –,
भा – – – – – – री – – – – – – (आश्रय)

(२) व – – ल्ल – भ – ही – – को – – भ , रो – – सो – – –
मो – – हि – श्री – , व – – ल्ल – भ – ही – –
को – – ग, रो – – – – – – सो – – – – – – –, (आश्रय)

(३) गो – – व – र – धन – की – – –, रहि – ये – – त
रे – – टी – श्री –, गो – – व – र – ध न – की – – –,
रहि – – – – – – ये – – – – – – –,

राग सोरठ–मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २२९ सखीरी (बूंद) अचानक लागी अनुसार

(१) झूमि झूमि बरखनला–गे–बा–दर (जगायवेको)
(२) करत कलेउ–भो–र लाल माई (कलेउ)
(३) गोवर्धन पर मुरवा बोले माई (मंगल)
(४) सुबह स्या–मको दे–तबी–री– (बीरी)
(५) पीवतदू–घसिरा–य गिरिधर (दूध)
६) रु–सिवे–की–नां–ही यह रितु (मान)
(७) पोढे–ए–कही सं–ग दोउ मिल (पोढवे)

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३१ क्यों न भये हम मोर अनुसार

(१) ये बडभा–गी–मो–र देखो–माई, –ये बडभा–गी–मो– – – – –
र – (शृं. समय)
(२) जें – वत अति सुख दी – नो आ – ज ह रि (राजभोग सरे)
(३) नी – की – आ ज घटा – – पर – ब्रज पर (रा. दर्शन)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(४) गो – व र घ न तें – आ – ई गा – य स ब (संध्यारती)

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ झूलत सुरंग हिंडोरे अनुसार

(१) झूलन के – दिन आये – हिंडो – – रे माई – – (हिंडोरा)

(२) उभ ग र हीं – ब्रज नारी – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(३) गिरि धर सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(४) जुग ल कि सो – र हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(५) राजत रं – गरं – गीलो – हिंडो – – रे – – – (हिंडोरा)

(६) नट वर सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(७) झूलत नटवरलाल – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(८) झूलत हे – ब्रजनाथ हिंडोरे – – माइ – – (हिंडोरा)

(९) झूलत ला – डिली लाल – हिंडो – – रे – – – (हिंडोरा)

(१०) झूलत ला – ल बिहारी हिंडोरे – – माई – – (हिंडोरा)

(११) सावन ती – ज सुहाई – आज – – सुद – – (हिंडोरा)

(१२) रस भरि सुरंग हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

(१३) कुसु मनि भां – तिबनाइ हिंडोरे – – माई – – (हिंडोरा)

(१४) कुंज हिंडो – रो – साज्यो – आज – – बन – – (हिंडोरा)

(१५) जुग ल कि सो – र हिंडोरे – झूले – – माई – – (हिंडोरा)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

राग गौड–मल्हार

अ. भ. सं. भा. ३, पृष्ठ ५७ घूमि घूमि घटा आई अनुसार

(१) ला – ल ओ – र ल ल – ना – जू, बाँ – ह जो – टी उठे – प्रा – त, प व – न – – ल ग – त – –, क म – ल – – ल प – टा – त – (मंगला)

(२) व्या – – रु – क र त – क – र, कौ – – र – ध र त – मु ख –, सु ख – उ – प ज त – क – छु, स्वा – – द – अ धि क – इ – त (व्यारु)

(३) कुं – – ज – म ह ल – के – –, आं – ग न म धि पिय – प्या – री, बाँ – ह जो – टी फि र त र स –, रं – ग सो – – र ग – म गे – (शयन)

(४) प हि – रें – क सूं – मी सा – री, बे – ठे – पि य सं – ग प्या – री, सु रं – ग – हिं डो रे – शो भा –, ला – गे – अ ति भा – – री – – (हिंडोरा)

(५) स्या – – मा – जु दु ल – ह नि –, दु ल – हे – र सि – क व – र, र म – कि – र म – कि दो – उ झू – – ल – त र स – भ र – (हिंडोरा)

(६) न व – ल – हिं डो – रो ला – ल, न व – ल – झू ल त – ला – ल, न व – ल – – व्र ज – ब धू –, न व – ल – झु ला – वे मा – ई (हिंडोरा)

(७) अ ब ही – हो – आ – ई ला – ल, रा – धे को – म ना – य ला – ल, झू लो – झू – ल वो – – दो – ऊ, री – झ री – झ वो – – गा – वो (हिंडोरा)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ. भ. सं भा. २, पृष्ठ २२४ माई री घन मृदंग अनुसार

(१) अ ध र – रं ग रा – च्यो –, अ रु न – अ ति प्रे – म –, प्री – – त के – पा – न ह, र त म न बी – रा – – – (बीरा)

राग–नट–मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३६ वा पत पीतकी फहरान अनुसार

(१) ग्वा – लि नि प्रे – म प्री – त रं ग भी – नी – (छाक)

राग धूलिया–मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३५ जहां तहां बोलत मोर अनुसार

(१) ना – ग – र – नं – – – द – – कि, सो – र – – अ:रो – – ग त – – – (छाक)

(२) ट प क – न – ला – – – गी – – बूं, – – दें – – चहूं – – दि स – – – (छाक)

(३) स्या – म – क – र – त – हे – – बि, हा – र – – मधु – – वन – – – (राजभोगदर्शन)

(४) ज – ग – न्ना – – – थ – ह – रि –, दे – वा – – – ज – य – श्रीं – – – (रथयात्रा)

(५) र – थ – वे – ठे – – – गि – रि –, धा – री – तु म दे – खो – स – खी – (रथयात्रा)

राग सूर–मल्हार

अ. भ. सं. भा. २, पृष्ठ २३२ सरस हिंडोरना माई अनुसार

(१) फू – ल हिं डो – – रा – मा ई झू ले – श्री – ब्र ज चं – द (हिंडोरा)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बसंत (शुद्ध)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४१८ गिरिधरलाल की बानिक उपर अनुसार

(१) चली — हें — भ — रन — गि — रि —, धर — न — ला — — ल — कों — — —, बनि — ब — नि — अन — ग — न —, गो — — — — — — पी — — — — — — (बसंत)

(२) कुच — ग — डु — वा — — जो — — —, बन — मो — र — कं — — चु — की —, बस — न — ढां — — पि — लै — — —, रा — — स्यो — ब — सं — — त — — — (बसंत)

(३) नव — ल — ब — सं — — त — न —, वल — वृं — — — दा — — ब — न —, नव — ल — स्या — — म — खे — ले —, हो — — — — — — री — — — — — — (बसंत)

(४) गिरि — ध — र — ला — — ल — र —, स — — भ — रे — खे — — ल — त —, बिम — ल — ब — सं — — त — रा —, — धि — का — — — सं — — ग — — — (बसंत)

(५) रत — न — ज — टित — पि — च —, का — — इ — नि — कर — लि — यें —, भर — त — ला — — ल — कों — — —, भा — — — — — — वै — — — — — — (बसंत)

(६) गो — — व — र — धन — की — — —, सिख — र — चा — — रु — प — र —, फू — — ली — — — नव — ल — मा —, — ल — ती — — — जा — — इ — श्रीं — (बसंत)

(७) गुरु — ज — न — में — — ठा — — —, डे — — दो — ऊ — प्री — — त — म —, से — — न — नि — खे — — ल — त —, हो — — — — — — री — — — — — — (बसंत)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२० खेलत बसंत गिरिधरनलाल अनुसार

(१) खेलत बसंत गिरिधरनलाल ॥ जू — व — ती — — जू — रि —

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आ – – इ – – – न व – ल – बा – – ल – (बसंत)

(२) गो – – – पी – – ज – न – व – – ल्ल – भ – जै – – मु – कुं – – – द (बसंत)

हिंडोल – बसंत

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२३ हरिरिह व्रजयुवती शतसंगे अनुसार

(१) गा – – व – त – चली – – – ब –, सं – – त – ब – धा – – व – न –, नं – – द – रा – – य – द – र –, वा – – – – – – – र – – – – – – – (बसंत)

(२) मो – – ह – न – बद – न – वि –, लो – – क – त – अखि – य – न –, उप – ज – त – है – – अ – नु –, रा – – – – – – – ग – – – – – – – (बसंत)

(३) अति – सुं – – – दर – म – नि –, बटि – त – पा – – ल – नो – – –, झू – – ल – त – ला – – ल – बि – हा – – – – – – – री – – – – – – – (बसंत)

(४) रिं – – ग – न – कर – त – का –, – न्ह – आं – – – गन – में – – –, कर – लि – – – ये – – न – व –, नी – – – – – – त – – – – – – – (बसंत)

(५) अरु – न – अ – वीर – जि – न –, डा – – रो – – – ला – – ल – न –, दु – – ख – त – अखि – या – ह –, मा – – – – – – – री – – – – – – – (बसंत)

(६) आ – – व – नि – की – – ब – लि –, हा – – री – – – हरि – जू – के –, आ – – व – नि – की – – ब – लि –, हा – – – – – – – री – – – – – – – (बसंत)

वसंत (पंचम अंग)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२५ ऋतु बसंत तरु लसंत अनुसार

(१) आ – ज ल ल ना – ला – ल, फा – ग खे – ल त ब ने –, मिल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

– झू – – लत सखी –, नवरं – ग डो – – ल – (डोल)

(२) उडत बं – द न न वअ, बी – र बहु कुम कुमा–, खे – लत बसं–तबन, ला – लगिश्विरधरन (बसंत)

(३) आ – योरितुराजसा – जि, पंचमी – बसंत आ – ज, मौ – रे द्रूमअतिअनूप, अं – व र हे फू – ली – – (वसंत)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२९ हमारे श्री विठ्ठलनाथघनी अनुसार

(१) अ – द्भूत शो – भा – वृं – दा – व न की –, दे – खहु नं – दकु मा – – – – – र – (बसंत)

(२) ए – क बो – ल बो – लो – नंदनं–दन, तो – खे – लों – तुमसं – – – – – ग – (बसंत)

(३) ला – लगुपा – लगुला – लहमा – री –, आँखियन में – जिनडा – रो – जू – – – (बसंत)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२७ जशोदा नहि बरजे अनुसार

(१) खे – – – लत – ब – सं – – त – व – ल्ल – – भ – कु – मा – – र – (बसंत)

(२) दे – खो – वृं – – दा – – – वन – श्री – – – कम – ल – नै – – न – (बसंत)

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४२८ खेलत खेलत पोढि अनुसार

(१) चलि – रा – – – धे – – तो – हि – स्या – – म – बु – ला – – वे – – – (बसंत)

ललित बसंत

अ. भ. सं. भा. २ पृष्ठ ४१४ श्री वल्लभप्रभु करुना सागर अनुसार

(१) सांचीकहो – मनमोहन मों – सों तो, खे – लो तुम संगहो – – री – – – – (बसंत)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–१

(अ) अष्टछापीय कीर्तन गान और साहित्य

भारतीय संस्कृति में संगीतकला की ध्वजा शिखर तक पहुँचानेमें शब्द याने साहित्यका स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ इस संदर्भ में १६ वीं शताब्दी से लेकर कुछ विचार प्रगट करना चाहता हूं। तत्पूर्वके इतिहास की चर्चा प्रथम भाग में कर चूका हूं। हमारे उ. भा. संगीत के उगम का समय राजा मानसिंह का माना गया है। इस शताब्दी में प्रबन्धादि द्रुपदगान का प्रचार था, जिनमें अकबरशाह के समय को द्रुपदगान का सुवर्णयुग माना जाता है।

कई लोग प्रबन्धगान के द्रुपदअंग में दो प्रकार मानते हैं। प्रथम प्रकार में स्थायी और अन्तरा से ही तुक पूर्ण करते हैं और दूसरे प्रकार में संचारी तथा आभोग को वैकल्पिक मानते हैं, किन्तु हमारी परम्परा के मत से स्थायी–अन्तरा-संचारी और आभोग सहित तुकबन्दी सिवाय के द्रुपद अपूर्ण हैं। प्रथम प्रकार के अपूर्ण द्रुपदगान का प्राचीन मानना सुसंगत नहीं है। आलाप के सम्बन्ध में "ॐ अनन्तनारायण नरहरिः" शब्दों द्वारा किये जाने वाले आलाप-को कई लोग प्राचीनतम मानते हैं जो हमारे मंन्दिरों में "गिरिराज धरणधीर ललन वर" इत्यादि भगवन्नामांकित शब्दों द्वारा आलाप किया जाता है। अधिक चर्चा पूर्वग्रन्थ में की गई है।

अकबर के समय के पूर्व हमारे पुष्टिमार्गीय संगीताचार्य वाग्गेयकार भी थे जिनकी स्थापना श्रीविट्ठलनाथजी (श्रीगुसांईजी) ने सं. १६०६ में "अष्टछाप-मंडल" नाम से की थी। इस समय द्रुपदगानकी चार प्रकार की बानियां प्रचारों में मानी जाती थीं। इनमें श्रीकुम्भनदासजी की बानी 'गोवर्धनधारी' थी, जिसको आज 'गोवरहारी' से पहचानते हैं। इस विषय में "अ. भ. संगीत," भा. २ परिशिष्ट में (पृष्ठ ४३८) कह चूका हूं। यहाँ पुष्टिमार्गीय संगीत के गाये

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाने वाले पदों में संगीत के साथ साथ साहित्य का सम्बन्ध मालूम होता है। इस विषय पर कुछ कहूंगा।

द्रुपदगान का आरम्भ गाथा छन्द–प्रबन्ध–गान के पश्चात् ध्रुवपद या पदशैली का प्रादुर्भाव हुआ है। अनेक विद्वान लोग व्रजभाषा को हिन्दीभाषाकी जनेता मानते हैं। पुष्टिमार्गीय कीर्तनों के द्रुपदगान–शैलीमें काव्य के शब्द, राग, रचना की सूरावली, ताल और आवर्तन तथा मात्रा इत्यादि को आवश्यक माने जाते हैं। गानशैली में काव्य की रचनाओं का आधार मुख्यतः मात्रा तथा ह्रस्व, दीर्घ के आधार पर तालों का वर्गीकरण किया जाता है जिसका उल्लेख हमने पूर्वप्रकाशित ग्रन्थ भा. २ के परिशिष्ट ३ में (पृष्ठ ४४०) उदाहरण-सहित किया है। किन्तु मात्रा के साथ ह्रस्व, दीर्घ का सम्बन्ध जोडना तथा इस आधार पर कितने आवर्तन बनते हैं यह बात निम्न उदाहरण से सहज में समझी जायगी।

प्रथम स्वर और व्यंजनको लक्ष में लेना चाहिये। स्वरो में अ इ उ ऋ को लघु और आ, ई ऊ ए ओ औ अं को गुरु समझ कर लघु की एक मात्रा और गुरु की दो मात्रा को हिसाब लगा कर शब्दों का वितरण करनेसे काव्य की प्रथम पंक्ति या किसी भी पंक्ति के आवर्तन समझमें आ सकते हैं।

जैसे

प्रा–त स | मे–न व | कुं–ज बा | –र व्हे–

५ गुरु और ६ लघु मिलाकर कुल १६ मात्राओं का एक आवर्तन होता है। इस प्रकार अधिकतर प्रत्येक आवर्तन हो सकता है (देखिये इस ग्रन्थ के पृष्ठ १२ पर)।

साहित्यकी दृष्टि से उपर्युक्त नियम की शक्यता विशेषतः ८ या १६ मात्राओं की त्रिताल में दिखाई देती है। अन्य तालों में भी अधिक अंश शक्य वहां तक लघु–गुरु का ठीक स्थान होते हुए भी शब्दावलि की सुसंगतता और राग के स्वरोंका पूर्वापर सम्बन्ध तथा तालों के विभाग (खण्ड) के आधार पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहीं कहीं लघु–गुरु का स्थान बदलता रहता है। जो कि स्थायी, अन्तरा, संचारी, आभोग में अन्तिम अक्षर के लिए गुरु को अन्तिम खण्ड की मर्यादा अनुसार २, ३, ४ इत्यादि मात्राओं तक बढाया जा सकता है। द्रुपदशैलीके चौताल, चर्चरी, सूलतालमें गाये जाने बाले पदों के लिए भा. २ के परिशिष्ट ३ में उदाहरणसहित लघु–गुरु का विवेचन किया गया है। किन्तु धमारकी शैली द्रुपदगानसे कुछ भिन्न होने के कारण लघु–गुरु का नियम शब्दों की तथा तालों के खण्ड की जोड–तोडके आधार पर गायक लोग योग्य स्थान पर नियत करते हैं।

अष्टछाप–परम्परा के पदों में ६, ७, ८, १०, १२, १४, १६ तथा १८ मात्राओं की तालों में गाये–जाने वाले पदों का समावेश होता हैं। यह सभी तालों से निबद्ध पदों की गानशैली द्रुपद–अंग की ही है। प्रचार में ४, ६, ८, १२, १४, १६ मात्राओं के तालों का प्रयोग स्याल, ठुमरी तथा सुगम संगीत इत्यादि शैलियोंमें होती है। इस मात्राओंमें गाये जाने वाले प्रकारों में जो ताल प्रचार में हैं उसकी प्राचीनता और उत्पत्ति सम्बन्ध में पूर्व ग्रन्थ, भा. १ (ताल प्रकरण) में लिख चूका हूँ, जो पखावज–अंग के ताल थे और उसके नाम भी भिन्न थे। इस प्रकार पखावज के प्राचीन तालों के आधार पर तबलों में बजनेवाले तालों का प्रचार होने लगा और उस प्रकार स्याल–शैली के उगमकारों ने द्रुपद–गान के प्रकारों के आधार पर अपनी रचनाएँ की हैं ऐसी मान्यता है। आजकल अधिकतर एकताल और त्रितालमें स्यालगान का प्रचार सुप्रसिद्ध है। चौताल की पदरचना को लक्ष में रख कर एकताल के स्यालों की रचना होने की मान्यता है। उस प्रकार १६ मात्राओं के त्रिताल की बंदिशों की स्याल–रचना भी हमारे ८ मात्राओं के तालों में गाये जाने वाले पदोंको ध्यान में रख कर विविध प्रकार की बंदिशों में स्यालरचना का आरम्भ हुआ हो ऐसी मेरी मान्यता है। प्राचीन ८ मात्राओंके पदोंके स्थान पर १६ मात्राओंके स्याल प्रचारमें आने लगें जो अतिविलंम्बित, विलंम्बित, मध्यलय,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्रुत लय तथा अति द्रुतलयमें भी आजकल सुनने में आते हैं। हमारे यहां कीर्तनोंकी गानपद्धतिमें लयका प्रमाण पूर्वग्रन्थमें कह चूका हूं।

(ब) कीर्तन प्रणाली संबंधी कुछ विचार

संप्रदाय की कीर्तनसेवा प्रणाली के आरम्भ से श्रीजी समक्ष तथा सम्प्रदाय की मुख्य सात पीठों में एवं निधिगृह के मंदिरों में भी गतशताब्दी तक दर्शन समय कीर्तनकार खड़े रह कर कीर्तन–गान किया करते थे। अधिकतर चारों मासों के पदकीर्तन कण्ठस्थ थे तथापि अधिकतर, अपने हाथों से लिखित पोथियाँ–गुटकाओं का उपयोग भी करते थे। यह प्रथा जहाँ तक चालू रही वहाँ तक कीर्तनों के पाठ–पाठान्तर शुद्ध रूप से प्राप्त होते रहे। पश्चात् लगभग अन्तिम सौ वर्षों से छपे हुए पुस्तकों का प्रकाशन प्रचार में आया तबसे पाठ–पाठान्तर में कुछ क्षतियाँ रहने लगी। समयान्तर इस प्रकारके पुस्तकों का उपयोग निधिगृहों के कीर्तनकार भी करने लगे।

हमारे यहाँ समूहगान और व्यक्तिगत गान की प्रथा प्राचीन समय से दिखाई देती है।

व्यक्तिगतगान :–श्रीजी को जगाने से मंगला तक तथा ग्वालसमय तथा उत्थापन एवं पोढाने के समय एक ही कीर्तनकार से ऋतुअनुसार पद गाये जाते हैं। तदतिरिक्त अन्य समय समूहगान की प्रथा आज भी अधिकतर नाथद्वारा में दृष्टिगत होती है।

मर्यादासम्प्रदायके अन्य वैष्णव मन्दिरों में प्रभुकी सेवा मन्त्रोपासना से की जाती हैं, पुष्टि–संप्रदायमें अष्टसखादिकी बाणी द्वारा दिनभर की सेवा चलती रहती है। इस प्रकार बाणी या पद–कीर्तन की भावना वेद–मन्त्रों के समान मानी जाती है। अतः मन्त्रों के अनुसार पदों में भी भाषा–उच्चार एवं पूर्वापर साहित्य की संगति इत्यादि में साहित्य और संगीत की दृष्टि से जरा सी भी क्षति होनी नहीं चाहिए।

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हमारे प्रकाशित ग्रन्थो में दिये गये हुए कीर्तनों का पाठ यथाप्रयत्न शुद्ध किया गया है, जिनमें कांकरोलीके सौ वर्षों पूर्व के कीर्तनकारों की अपने हाथों से लिखे हुए बर्षभर के गुटका तथा अन्य लहियाओं के हाथोंके लिखे हुए कीर्तनसंग्रहों की ओर ध्यान दिया गया है।

आश्चर्य होगा कि मन्दिरों के उपयोगकी पुस्तकें भी जो प्रसिद्ध हो चूकी हैं और सर्वप्रथम ठाकुरदास सूरदास, तत्पश्चात् श्री लल्लुभाई छ. देसाई और जेठमल आसनमल ट्रस्ट (बम्बई) द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों की दो, तीन आवृतियाँ भी प्रसिद्ध हो चूकी हैं, किन्तु इनमें भी उत्तरोत्तर प्रतिलिपि ही दिखाई देती है, तो आगामी प्रकाशन में किसी निष्णात द्वारा प्राचीन पुस्तकों के आधार पर शुद्धीकरण करवा के प्रसिद्ध करेंगे तो उपकारक होगा। जैसे नित्य की बड़ी पुस्तक में सन्ध्यारतीके गौरी राग के "कनक कुंडल कपोल मंडित गौरज छुरत सुकेश" के बाद "मदगज चाल चलत सुरनरमुनि लाडिले व्रजकुंवर नरेश' जिनमें 'सुरनरमुनि' पाठ सभीं पुस्तकों में अर्थहीन छपा हुआ है। असल में 'सुरभिन संग' यह शुद्ध पाठ है।

(२) 'कमलनयन हरि करो कलेवा' कलेवा के इस पद में "हरे खरबुजा जाम" में 'जाम' के स्थान पर 'आम' चाहिये क्योंकि 'जाम' भिन्न ऋतुका फल है। और खरबुजा की ऋतु आम से संबधित है। इस प्रकार हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों के अवलोकन से अनेक पाठन्तरों के शुद्ध रूप प्राप्त हो सकते हैं। दुःख की बात है कि बड़ी बड़ी पुस्तकों के प्रकाशनों में अधिकाधिक खर्च होता है, किन्तु संशोधनकार्य में भी उचित ध्यान देना चाहिये।

फलतः कुछ बिन-अनुभवी कीर्तन गाने वाले कों भी "छाक खाय-खाय घाय-घाय "इस पद की अन्तिम पंक्तिमें 'घर-घर' के स्थान पर 'घर-घर' तथा "जै जै श्रीवल्लभप्रभु पद में" चलत क्यों कुपाथे" के स्थान पर "कृपा ते" शब्द का प्रयोग करते हुए भी सुनने में आते हैं। इस प्रकार की अनेक अशुद्धियाँ दृष्टिगत होती हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कीर्तनप्रणाली एवं पाठान्तर इत्यादि से अल्प परिचित संपादक द्वारा प्रकाशित होने से भाषा दोष, लिपिदोष, अशुद्ध पाठान्तर इत्यादिके कारण समाज में भिन्न प्रकारोंका प्रचार होता रहता है। इतना नहीं आजकल की आधुनिक रचनाओंके घोलपद भी मन्दिरो में श्रीजी समक्ष गाने की प्रथा का आरम्भ हो रहा है। तथा कुछ वैष्णवों की ओर से इस प्रकार की रचनाओं की पुस्तिकाएँ भी, अधिकतर गुजरात में प्रकाशित होती रहती हैं।

पुष्टिमार्गीय कीर्तनसाहित्य और संगीत को समृद्ध बनानेमें श्रीबल्लभाचार्यजी के तथा श्रीमद्विठ्ठलेश्वरके सेवको में क्रमशः ८४–२५२ वैष्णवों में जो कबि एवं संगीतज्ञ थे इन्होंने उस समय विविध प्रकारों की लीलाएँ भाव मय वर्णन—संगीतके माध्यम से प्रगट की थी जिनकी नामावली निम्न प्रकार प्राप्त होती है।

नादकी सर्वोपरिता

न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरः।
न नादेन बिना नृत्यं तस्मान्नादात्मकं जगत्॥

गीत, स्वर एवं नृत्य नादके बिना नहीं होते—क्योंकि जगत् नादात्मक है।

नादोपासनया देवा ब्रह्मविष्णु महेश्वराः।
भवन्त्युपासिता नूनं यस्मादेते तदात्मकाः॥

अर्थात्:

नाद की उपासना करने से ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर की उपासना अपने आप हो ती है। क्योंकि ये देव नाद से भिन्न नहीं हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवि एवं कीर्तनकार

श्रीमद् वल्लभाचार्यजी—

के सेवक	वार्त्ता नं.
(१) श्री कुम्भनदासजी	
(२) श्री सूरदासजी	
(३) श्री कृष्णदासजी	
(४) श्री परमानन्ददासजी	
(५) श्री पद्मनाभदास	४
(६) श्री रघुनाथदास	४/३
(७) श्री पुरुषोत्तमदास	६
(८) श्री गोपालदास	६/२
(९) श्री गदाधरदास	८
(१०) श्री प्रभुदास भाट	२१
(११) श्री जगतानन्द	४०
(१२) श्री कृष्णादासी	४५
(१३) श्री रामदास	
(१४) श्री विष्णुदास	५०
(१५) श्री भगवानदास सांचोरा	५३
(१६) श्री पुरुषोत्तमदास लघु	६५
(१७) श्री कविराज भाट	६६
(१८) श्री गोपालदास	६७
(१९) श्री गोपालदास क्षत्री	६९

श्री विट्ठलनाथजी के

सेवक	वार्त्ता नं.
(१) श्री गोविन्दस्वामी	
(२) श्री छीतस्वामी	
(३) श्री चतुर्भुजदासजी	
(४) श्रीनन्ददासजी	
(५) श्री मुरारिदास	
(६) श्री अलीखान	१७
(७) श्री कटहरिया	२३५
(८) श्री गोपालदास	२८
(९) श्री माणेकचन्द	२९
(१०) श्री गंगाबाई क्षत्राणी	६५
(११) श्री तानसेन	११३
(१२) श्री आसकरन	१२३
(१३) श्री ऋषीकेश	१३७
(१४) श्री ब्रह्मदास	२३६
(१५) श्री सगुणदास	२४२
(१६) श्री धोंधी	२४३
(१७) श्री रसखान	२४५
(१८) श्री यादवेन्द्रदास	२४६
(१९) श्री चतुरविहारी	२४८
(२०) श्री माधोदास (माधवदास)	२५१
(२१) श्री रामरायहित	२५२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदुपरांत तत्कालिन अन्य वैष्णव सम्प्रदायोंके जिनको अपने इष्ट से सानुभावता हो चूकी थी ऐसे महानुभावों के एवं श्रीगुसांईजी के समयसे श्रीहरिरायजीके समय तक के सम्प्रदायिक कुछ संगीत, गोस्वामी तथा वैष्णव महानुभावोंने भी सम्प्रदायका संगीत और पदसाहित्य को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है जिनके प्राप्त नाम अष्टछापीय भक्तिसंगीत के प्रथम भाग में पृष्ठ १२३ पर प्रकाशित किये गये हैं।

परिशिष्ट–२

हवेली संगीतके उत्साहियोंको आवश्यक जानकारी

अष्टछाप परम्परागत हवेलीसंगीत सीखनेकी उत्कंठा वाले संख्याबन्ध वैष्णवों की माँग है, किन्तु आज सिखाने वाले अनुभवी कीर्तनकारों के अभाव से वे असन्तृष्ट हो कर निराश हो जाते हैं। इस परिस्थिति में इस विषय पर में मार्गदर्शन प्रगट करना उचित समझता हूँ।

पूर्वग्रन्थों में कह चूका हूं कि श्री हरिरायजी तक अष्टछापीय परम्परा अविच्छिन्न रही। पश्चात् विक्रम की गतशताब्दी तक भी इस परम्परा की लकीर दृष्टिगोचर हाती रही। इस लकीर के आधार पर ही आज हमने स्वरांकन एवं विवरणसहित तीन भागों में प्रकाशन किया है। जो कि कीर्तन सीखने की पूर्व प्राचीन परम्परा कर्णोपकर्ण गुरुमुख से ही दृष्टिगोचर होती थी। जिस समय सात पीठों में एवं अन्य बडे मन्दिरों में व्यवसायी वैष्णवगण की मंडली समय समय पर हमेशां उपस्थित रहती थी। इस प्रकार कुछ बर्षों के अभ्यास से व्यबसायी और अव्यवसायी कीर्तनगायक तैयार होते रहते थे।

आज यदि कीर्तनकी परम्परा चालू रखनी है तो हमारे सामने तीन प्रकार नजर आते हैं।

(१) बडे शहरोके मन्दिरों में जहाँ कीर्तनगायक–वादक नियुक्त होते हैं वहाँ प्रत्येक सप्ताह में दो या तीन दिनों का शिक्षाक्रम नियत किया जाय।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आजकल मन्दिरों में नियुक्त किये गये कीर्तनगायक–वादक की संख्या गत शताब्दी की अपेक्षा न्यूनतर होती रही हैं ।

(२) बडे नगरों में वर्ष में दो बार शिविरशिक्षा योजना भी की जा सकती हैं । यदि आज के कीर्तनकारों कों यह कार्य सौंपा जाय तो भी प्रत्येक की गानशैली में कुछ–न–कुछ भिन्नता रहेगी । इस भिन्नता के कारण भविष्य में परम्परागत शैली के स्थान पर परिवर्तित शैलीके साथ कीर्तन प्रणालि बनेंगी ।

यदि सप्ताह–दो–सप्ताहों की योजना का आयोजन किया जाय तो सेधा की प्रणाली के सेंकड़ो पदों का ज्ञान संख्याबन्ध स्त्री–पुरुषों के समुह के साथ कविता की तरह गवाने से ताल, लय, स्वर और रागों की सुरावट एवं वन्दिश की तराह इत्यादि में से केवल परिचयात्मक ज्ञान हो सकता हैं । क्योंकि स्त्री–पुरुषोंके आवाज में लगभग चार सूरोंका अर्थात् १३ श्रुतियों का अन्तर होता है अतः इस प्रकार की अल्पकालिन शिक्षा से केवल प्रचार से अधिक लाभ होना अशक्य है । वास्तव में व्यवसायी एवं अव्यवसायी कीर्तन–संगीत के जिज्ञासुओं का शिक्षास्थान हमारे मंन्दिर–हैं जहाँ कायमी योजना की सम्भावना रहती है ।

(३) आधुनिक युग को पहचान कर संगीतोद्धारक पं. भातखंडेजी एवं पं. विष्णु दिगम्बरजी नें शिक्षा की जो सरल पद्धति का स्वरलिपि द्वारा आयोजन किया हैं जो भारतवर्षकी संगीतविद्यापीठों तथा विद्यालियो में स्वरलिपिबद्ध शिक्षा दी जाती है वह सुप्रसिद्ध है ।

शास्त्रविवरणसहित स्वरलिपिबद्ध पाठ्यपुस्तकों द्वारा शिक्षापद्धति अधिक सरल, सुलभ और उत्तम होती है क्योंकि इस युग में समयाभाव के कारण प्रत्येक कला और विद्याकी प्राप्ति के लिए भारतवर्ष की सभी विद्यापीठों ने यही मार्ग अपनाया है ।

"स्वरलिपिसे गायकी का पूरा ज्ञान प्राप्त होना मुश्किल है" क्योंकि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वरलिपि साधन है, जो साध्य करने की सीड़ी है, फिर भी इस पद्धति के अभ्यास द्वारा स्वरज्ञान तालज्ञान और रागज्ञानके उपरांत बन्दिशों की विविध जानकारी के साथ काव्यरचना में आवर्तन, खण्ड, लघु–गुरु, शब्दों की जोड–तोड सहित कलातत्त्व के ज्ञान की प्राप्ति कीर्तनसंगीत की परम्परा साध्य करनेका उत्तम साधन मानता हूँ ।

कीर्तन—संगीत की प्राचीन परम्परा में जो समूहगान की प्रथा थी जो आज भी कुछ कीर्तनमण्डलियों में यह प्रथा दिखाई देती हैं, किन्तु इनमें एक ही प्रकारके शब्द और स्वररचना का सम्पूर्ण अभाव नजर आता है । यदि आज स्वरलिपि–पद्धति द्वारा अभ्यास किया जाय तो स्वर, राग, ताल, खण्ड, शब्द, आवर्तन इत्यादि के साथ पचासों व्यक्तियाँ होते हुए भी एक ही रूपमें, एक ढंगका गान हो सकता है । पश्चात् संगीतपद्धतिके गायन और बादम में स्वरलिपि के उपयोग से सेंकडों की संख्या होते हुए भी समान स्वरूप बनता है, जो हम बॅन्ड के वादन में देख सकते हैं ।

आजकल जो कुछ कीर्तनकार हमारे यहाँ उपस्थित हैं इनमें अधिकांश को स्वरलिपि का ज्ञान न होनेके कारण इस पद्धति से सीखने के लिए उत्सुक वैष्णवगण किसी भी संगीतशिक्षक जिसको स्वरलिपि का अच्छा ज्ञान हो उसीसे शिक्षा प्राप्त कर सकता है ।

इस प्रकार आधुनिक समय को लक्ष में ले कर परम्परागत कीर्तनों की शिक्षा का किसी भी प्रकार का आयोजन करना हो तो तत्पूर्व प्रथम शास्त्रीय संगीत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है । ठुमरी, गज़ल, कव्वाली, भजन, सिनेमा–संगीत एवं लोकसंगीतके प्रसिद्ध कलाकारों को भी शास्त्रीय संगीत का शिक्षण लेना आवश्यक होता है । ध्यान रहे कि अष्टछापीय प्राचीन संगीत सुगम या लोकसंगीत नहीं हैं । इस प्रकार की परम्पर का यदि प्रचार करना है तो स्वर, ताल, राग तथा द्रुपदगान के अनुरूप पर्याप्त शास्त्रीयज्ञान का भी ज्ञान प्राप्त किये बिना केवल कर्णोपकर्ण या समूह–शिबिर–शिक्षा से कोई इच्छित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिणाम न होगा। द्रुपद–अंग की गायकी मृदंगके साथ ही गायी जाती है। मृदंग की गंभीर ध्वनि तथा द्रुपदकलाकारों की गंभीर आवाज एक दूसरे की पूरक जैसी दिखाई देती हैं। इसी कारण से द्रुपदघराने की परम्परा में अनेक पुरुष कलाकार ही प्रसिद्ध हो चुके हैं।

इस प्रकार स्त्रियों की आवाज़ का सम्बन्ध चंचल प्रकृति के साथ ठुमरी, ग़ज़ल, कव्वालीकी गायकी में अत्यन्त सुसंगत होता है। अतः ठुमरी और ग़ज़ल कव्वालो के घरानों की परम्परा भी मौजूद थी। हमारे मन्दिरोंमें प्राचीन समय से श्रीजी की कीर्तन की सेवा में पुरुष कीर्तनकारों की ही नियुक्ति की मर्यादा आज तक चालू रही है। छोटे–बडे मन्दिर ही हमारे शिक्षागृह जैसे दिखाई देते थे क्योंकि संगीत में प्रथम सुनना आवश्यक है। प्रत्येक समय के दर्शन में अनुकूलता अनुसार दर्शनार्थि वैष्णव जो आया करते थे इनमें से कुछ भावुक वैष्णवगण कीर्तन सुननेके लिए कीर्तनगान बन्ध होने तक कीर्तनकार से सुना करते थे। इस प्रकार 'कान तैयार होनेके' बाद कीर्तनकार अपने पास बिठा कर झिलनियाओं को कीर्तनगाने की सम्मति देते थे। इस प्रकार के अभ्याससे कुछ वर्षों में स्वतंत्र रूप से कीर्तनगान की शक्ति प्राप्त हो जाती थी। उपरांत ऋतु–ऋतुके और समय–समय के कीर्तन भी कंठस्थ होते रहेते थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट—३

(अ) ढाढ़ी लीला

पुष्टि सम्प्रदाय की कीर्तन प्रणाली में ढाढ़ी के पद भी गाये जाते हैं। सूरदास, परमानंददास, नंददास, चतुर्भुजदासादि अष्ट छाप के महानुभावी गायकोंने अपनी रचनाओं में ढाढ़ी—ढाढ़िन के पद गाये हुए प्राप्त होते हैं। जन्माष्टमी से राधाष्टमी तक ये पद गाये जाने की मर्यादा है। गोकुल के राजा नंदबाबा के यहाँ वृद्धा वस्था में पुत्र-जन्म की बधाई सुनकर उनकी वंश परंपरा के मागध, बंदीजन, ढाढ़ी आदि याचक गण श्री कृष्ण-जन्म सुनकर अपनी मनः कामनानुसार बधाई लेने के लिए हर्षोल्लास सहित आते हैं। इन याचकों में से हम 'ढाढ़ी' के संबंध में कुछ विचार करेंगे।

जिस प्रकार भाट-चारण आदि जातियों के लोग अपने यजमान के वहाँ पुत्र-जन्म या जन्मदिन जैसे बधाई के शुभ अवसरों पर उनके वहाँ जाकर यजमान के पूर्वजोंकी वंशावली कहते थे और कबित्त, छंद, छप्पय द्वारा उनका कीर्ति—गान करते थे। यह रिवाज कुछ अंशों में आज भी दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार हिन्दु जाति के ढाढ़ी उस समय अपने यजमान की वंशावली के कीर्ति—गान के उपरान्त नाच—गान सहित मुजरा करते हुए बधाई की याचना करते थे। अष्ट छाप के महानुभावोंने इसी ढाढ़ी प्रथा को अपने पद—गान द्वारा बड़े ही भावात्मक और सुंदर ढंग से पुष्टि मार्गीय कीर्तन परंपरा में समाहित कर लिया है। सम्प्रदाय की निश्चित की हुई कीर्तन प्रणालिका अनुसार आज भी ढाढ़ी के ये पद गाये जाते हैं। यही नहीं कुछ बड़े मन्दिरों में तो वैष्णवों तथा कीर्तनकारों में से कुछ जानकार लोग ढाढ़ी तथा ढाढ़िन की वेशभूषा में सज्ज होकर नृत्य करते हुए स्वयं सेवा के उत्थापन के दर्शन के बाद मन्दिर के चौक में उपस्थित होते हैं और भोग समय, संध्यार्ति समय एवं शयन के दर्शन पर्यन्त नाच—गान करते रहते हैं। बाद में मन्दिर के मुखियाजी पान

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

का बीड़ा तथा महा प्रसाद देकर तथा उपरेना (उपवस्त्र) ओढ़ाकर उन्हें बिदाई देते हैं। इसी प्रणाली को ढाढ़ी–लीला कहते हैं।

इस ढाढ़ी लीला का आयोजन मन्दिरों में प्रायः राधाष्टमी (भाद्र शुक्ला ८) के दिन किया जाता है तो कहीं–कहीं शुक्ल पंचमी को भी किया जाता है। ढाढ़ी–लीला की प्रथा का प्रारंभ श्रीमद् हरिरायजी के समय में होना संभवित है।

ढाढ़ी–लीला में प्रारंभ में ढाढ़ी के रूप में एक ही व्यक्ति के उपस्थित होने की प्रथा थी। काँकरोली तथा अन्य कीर्तन मंडल के केवल मुखिया ही नाच का कुछ भाव बताकर ढाढ़ी के चार या पाँच पदों का गान किया करते हैं। बाद में श्रीमद् हरिरायजी की उत्तरावस्था के समय ढाढ़ी के साथ ढाढ़िन भी उपस्थित होने लगी। किन्तु वर्तमान समय में वैष्णव लोगों के घर ढाढ़ी–लीला का जो मनोरथ होता है उसमें दो ढाढ़िनियों का होना भी आश्चर्यजनक नहीं है।

हमारे मत में एक, दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा ढाढ़ी–लीला भले ही की जाय किन्तु उस में ढाढ़ी–लीला का मुख्य अंग–ढाढ़ी का गीत और ढाढ़िन का नृत्य–होना चाहिए। इस में पद्धति अनुसार राग, ताल, सुर में, गान और ढाढ़िन का नृत्य भावात्मक एवं रोचक होना आवश्यक है क्योंकि ढाढ़ी–लीला का नृत्य प्रकार 'लास्य नृत्य' के अन्तर्गत माना जाता है।

श्रीमद् हरिरायजीके पश्चात् तृतीय पीठ के गोस्वामी श्री गिरिधरलालजी महाराज 'भवाईवाले' के समय में ढाढ़ी-लीला का प्रचार क्रमशः बढ़ने लगा। मंदिरों के उपशन्त वैष्णवों के यहाँ भी प्रसंगानुसार ढाढ़ी–लीला का आयोजन किया जाता था जिसमें केवल वैष्णवी दीक्षा प्राप्त व्यावसायिक एवं अव्यावसायिक वैष्णव ही ढाढ़ी–ढाढ़िन के स्वांग में उपस्थित हो सकते थे। इस प्रकारकी मर्यादा आज भी चालू है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यजमानवृत्ति से संबंधित ढाढ़ियों में अधिकतर हिन्दु ढाढ़ी विशेष रूपसे पाये जाते थे। किन्तु अब वर्तमान समय में हिन्दु ढाढ़ी की अपेक्षा मुसलमान ढाढ़ी—जिनमें मीर, मीरासी, कव्वाल आदि का समावेश होता है—परंपरा के लोग ही अधिक प्रचार में हैं। इसी प्रकार वर्तमान समय में कथ्थक, बंदीजन, चारण, भाट आदि जाति के लोग हिन्दु ढाढ़ी की प्राचीन परंपरा की याद दिलाते हैं।

ढाढ़ी—लीला में गाये जानेवाले अष्टछापीय कीर्तन परंपरा के पदों में से कुछ पदों[१] की प्रथम पंक्तियाँ नमूने के तौर पर यहाँ दी गयी हैं :

१. श्री वल्लभ पद बंदि कें, कहूं सुजस इक सार. पुत्र भयौ श्री नंद कें, बड़ी वेस ततकार ॥[२]

२. हमारो नंद बड़ो जिजमान ॥

३. लाल पर वारनें कीनी हो ढाढिनि बारनें कीनी ॥

४. यदुवंशी जिजमान तिहारो ढाढ़ीं ॥

५. नंद वृषभान के हम भाट ॥

६. कृष्ण जनम सुनि अपने पतिसों हँसि ढाढ़िन यों बोलीजू ॥[३]

---

१. इन पदों के रचयिता कवि क्रमशः इस प्रकार हैं : (१) श्रीमद् हरिरायजी (२) और (३) रामकृष्ण, (४) किशोरीदास, (५) व्यासदास, (६) नंददास, (७) कृष्ण, (८) चत्रभुज (९) दासगोपाल, (१०) रामराय, (११) नागरीदास.

२. श्रीमद् हरिरायजी के पद में वंशावली सहित कीर्तन—गान की भावना प्रकट की गयी है।

३. यह पद स्वर लिपि बद्ध है। देखिये 'अष्टछापीय भक्ति संगीत' —२ खण्ड—४ पृ. सं. २७३.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

७. ढाढ़िनियां मचल रही रे नंदघर लै चलरी ॥
८. हों ब्रजराज की ढाढ़िनि ब्रजतें आई हो ॥
९. श्री ब्रजराज के हम ढाढ़ी ॥
१०. जसोदे बधाइयाँ बधाइयाँ जसोदे बधाइयाँ ॥
११. बाजे वधाइयाँ वे सैयां नंददे दरबार ॥१

ढाढी लीला संबंधी कवित्त, सवैया के उदाहरण :—

१. फुलि गये गोप गृह गोपिन कों भूलि गये,
हुलसी मचाइ जामें प्रेम सरसाइमें,

२. पूत सपूत जन्यौ जशोदा इतनी सुनिकें बसुधा सब दौरी, देवन को आनंद भयो सुनि धावति गावति मंगल गौरी, नंद कछु इतनो जू दियो न बचि बछियां छछियां न छिछौरी :

---

१. यह पद् स्वरलिपि बद्ध है। देखिये इसी ग्रथ में. पृ. सं. ६५.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब–जोगीलीला (महादेवलीला)

शास्त्रकारोंने संगीत की व्याख्या में गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों का समावेश किया है। तदनुसार पुष्टिमार्ग की कीर्तन संगीत प्रणाली में गीत, वाद्य तथा नृत्यको विशिष्ट स्थान दिया गया है। पूर्व प्रकाशित "अष्टछापीय भक्ति संगीत–भाग १ एवं भाग–२ में इस संबंध में विस्तार पूर्वक कहा गया है।

सम्प्रदाय में गायन और वादन–कला की अपेक्षा नृत्य–कला का स्थान गौण रहा है। तथापि ढाढ़ी–लीला तथा महादेव लीला में नृत्य–कला का स्थान भी भावात्मक दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण रहता है।

इस के पूर्व ढाढ़ी लीला संबंधित नृत्य–गान पर बिचार व्यक्त किये गये हैं।

शास्त्र में नृत्य के मुख्य दो प्रकार माने गये हैं। इनमें ढाढ़ी लीला के नृत्य का प्रकार "लास्य" प्रकार है तो महादेवलीला का नृत्य "ताण्डव" प्रकार के अन्तर्गत कहा जायगा। क्योंकि महादेवलीला में भगवान शंकर की ही भावना प्रगट की जाती है।

सच्चिदानन्द पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म श्रीकृष्णने गोकुल में जन्म लिया है यह जानकर सुर, नर, मुनि ब्रह्मादि देवता तथा शिव–सनकादि भगवान श्री बालकृष्ण के दर्शन को आते हैं और धन्यता का अनुभव करते हैं यह कथा सुप्रसिद्ध है। तत्भावानुसार सम्प्रदाय में छठी के रोज यानि व्रज भाद्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन पालना दर्शन के समय सूरदासजी रचित "बाला में जोगी जस गाया" यह पद गाया जाता था। पश्चात् वैष्णव कलाका' देवाधिदेव महादेवजी का जोगी के वेशमें स्वांग सजाकर नृत्य करते हुए तथा पद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

का भाव जताते हुए मंदिर के चौक में उपस्थित होते थे और पालना के दर्शन खुलते ही उक्त पद का गान समाज सहित किया करते थे।

कहा जाता है कि भवाईवाले श्री गिरधरलालजी महाराज के समय व्रज-प्रदेश के करहला के रासधारी ब्राह्मणों में से किसी योग्य व्यक्ति को जोगीका पात्र बनाकर महादेवलीला की जाती थी।

गुजरात में अष्टछापके स्थापक श्रीमद् विठ्ठलनाथजी के सेवक और "दोसो बावन वैष्णवन की वार्ता" में जो "दया भवैया" नाम से प्रसिद्ध हैं उसके परिवार की जाति के लोग भवाई करते थे। उनमें से भक्ति भाववाले एवं नृत्य, गान, वेशभूषा इत्यादि में प्रवीण ऐसे कुछ कलाकारों का वैष्णव आचार्यों ने वैष्णवी दीक्षा देकर उनको अपना आश्रित बना लिया था। ऐसे लोग सम्प्रदाय की कीर्तन प्रणाली के गायक-वादक भी बन चुके थे। उनमें से कुछ योग्य व्यक्ति को जोगीका स्वांग बनाकर महादेवलीला का आयोजन किया जाता था। तत्पश्चात् मंदिरों के अधिपति गोस्वामी महाराजश्री अपने मंदिरों में ढाढ़ी लीला तथा महादेवलीला का आयोजन कराने का आग्रह रखते थे। प्रति वर्ष क्रमशः राधाष्टमी और छठी के दिन नियत क्रम में श्रीजी सम्मुख नृत्य, गान आदिका आयोजन किया जाता था।

इस प्रकार गायन, वादन के उपरान्त नर्तन कलाने भी पुष्टि सम्प्रदाय में अपना योग्य स्थान प्राप्त कर लिया। यही नहीं गोस्वामी स्वयं इस में रस लेने लगे थे जिसके प्रत्यक्ष उदाहरण में गोकुल के गो. श्री कन्हैयालालजी महाराज का उल्लेख पर्याप्त होगा।[१]

---

१. पु. मा. भक्ति संगीत भाग-१ खण्ड-२ पृष्ठ. १२५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेखक के पिता श्री छबीलदासजी पू. पा. गो. श्री कन्हैयालालजी महाराज के सम्पर्क में आये हुए थे।१ उन्होंने जीवन पर्यंत लगभग पचास वर्ष तक ढाढ़ी लीला में ढाढ़िन बनकर और महादेव लीला में शंकर का स्वांग बनाकर नाच–गान सहित कांकरोली के अन्तर्गत पाटन (उ. गु.) के मन्दिर में उल्लेखनीय सेवा की थी।

महादेवलीला की प्रथा में गायेजानेवाले पदों में से वे निम्न पदों का नृत्य सहित गान करते थे :—

१. हे दैया मतवाला जोगी द्वारे तेरे आया हैं।
२. आयो है अवधूत जोगी कन्हैया दिखलावे हो माई।
३. बाला मैं जोगी जस गाया।२
४. दिल दा मेरा सांवरा दार दरस दिखाजा।३

जांघिनी काछिनी कटि–पिताम्बर, श्रवन कुंडल सिर मोर मुकुट।
घूंघरवारी अलकें झलकें (मेरे) नैनों में समाजा॥
बंसी धुनि जमुनातीर सुनत ही मन होत अधीर
सपने में दरस दिखाय कें (मेरा) सकल दुःख मिटायजा॥
जानकीदास भयो उदास निकसत नाहिं यह पापी श्वास
साँवरी सुरत मोहिनी मूरत (मेरी) तनकी तपत बुझाजा॥

---

१. देखिये : गो. श्री कनैयालालजीनुं जीवन अने साहित्य पृ. सं. ९२
प्र. आ. १९७२

२. स्वरलिपि के लिए कृ. देखिये अ. छा. भ. सं. भाग—२ खण्ड—३
पृ. सं. २३८

३. उपर्युक्त प्रथम दोया या तीन पद गाने के पश्चात् रीति के पलना गाये जाते हैं।

प्रस्तुत पद बिदा के समय गाते थे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–४

इस ग्रन्थके पृष्ठ ९२ से पृष्ठ ११५ तक कीर्तनकी जो प्रथम पंक्ति दी गई है उसकी पहिचान के किये अन्त में कोष्टकमें शब्द दिये गये हैं जैसे कि (मंगला), (छाक), (वधाई) (रथयात्रा) (वसंत) (महाप्रभुजीकी वधाई). आदि ये समी पद कौनसे संग्रहमें प्राप्य होंगे उसकी जानकारी निम्नप्रकार दी गई है ।

मुख्यतः तीन प्रकार के ग्रन्थों में समी पदोंका समावेश हो जाता है । (१) नित्य पद संग्रह (२) वर्षोत्सव पद संग्रह (३) वसंतधमार संग्रह । नित्य पद संग्रहः- श्री महाप्रभुजी के, श्री गुसाइजी के, यमुनाजीके, जगायवेके, कलेउके, मंगलार्तिके, न्हवायके, मंगला समयके, खंडिताके, वृत्तचर्याके, हिलगके सिंगारके, सिंगार–सन्मुखके, सुहाके, सुधराईके, ग्वालके, धैयाके, भोजनके, छाकके, भोगसरिवेके, बीरीके, राजभोग–सन्मुखके, कुंजके, पनघटके, दूपहरीके, नावके, चंदनके, खसखानेके, भोगसमयके, आवर्नीके, आरतीके, सायंदैयाके, बियारुके, दूधके, सैन–समयके, फूल–सिंगारके, मानके, पोढवेके, आश्रयके पद

वसंतधमार संग्रह में :- वसंतके, धमारके, होरीके, डोलके, पद.

वर्षोत्सव पद-संग्रह में :- श्री महाप्रभुजी गुसाईजी और सात बालकोंकी वधाई के पद तथा जन्माष्टमीकी वधाईके, पालनेके, राधाष्टमीकी वधाईके, वामन जयंतीके, दशहराके, रासके, धनतेरसके, रूपचतुर्दशीके, दिवारीके, गायखिलायवेके, कानजगायवेके, दीपमालिकाके, हटडीके, अन्नकूटके, गोवर्धनपूजाके, भाईदूजके, गोपाष्टमीके, देवप्रबोधिनीके, रामनवमीके, अक्षय-तृतीयाके, नृसिंहजयंती के, गंगादशमीके, स्नानयात्राके. बाललीलाके, ढाढीके, दानके, सांझीके, नवविलासके, रथयात्राके, हिंडोराके, संवत्सरीके, पवित्राके, राखीके, मुरलीके, करवाके, इन्द्रमानभंगके, गोचारनके, ब्याहके, मागीसंक्रांतिके, गेंदके, फूलमंडलीके, संवत्सरके, गनगौरके, मल्हारके पद.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–५ (अ)

अनुसंधान अ. छा. म. सं. भाग-२ पृष्ठ सं. २४४ नट के पश्चात्

राग–नटनारायण, ताल–चर्चरी (झपताल अंग)

नागरी नटनारायन गायो ॥
तानमान बंधान सप्तसुर रागसो राग मिलायो ।
चरन घूंघरु जंत्र भुजनि पर नीकों झमक जमायो ॥
ततथेई ततथेई गति में गति लै मोहनलाल रिझायो ।
सफल त्रियन में सहज चातुरी, अपनको अधिक दिखायो
व्यास स्वामिनी धनि धनि राधे, रासमें रंग बढायो ॥

स्थायी

×		२			०		३		
म	म	प	–	–	सा	–	रे	सा	सा
न	ट	ना	–	–	रा	–	य	–	न
सां	–	ध	–	प	प	–	रे	ग	म
गा	–	यो	–	–	ना	–	ग	री	–
ध	ध	प	–	–	रे	ग	ग	ग	म
न	ट	ना	–	–	रा	–	य	–	न
सा	रे	सा	–	–	सा	रे	ध	प	–
गा	–	यो	–	–	ना	–	ग	री	–

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अंतरा

×		२			०		३		
प	—	सां	—	सां	रें	—	सां	—	सां
ता	—	न	—	मा	—	—	न	—	ब
सां	ध	सां	—	रें	सां	—	ध	—	प
धा	—	न	—	स	प्त	—	सु	र	—
सां	रें	गं	गं	मं	पं	गं	मं	सां	रें
रा	—	ग	सौ	—	रा	—	ग	—	मि
सां	रें	सां	—	प	प	—	ग	म	—
ला	—	यो	—	—	ना	—	ग	री	—

संचारी

×		२			०		३		
सां	सां	सां	ध	ध	प	—	प	—	—
च	र	न	—	धूं	ध	—	रुं	—	—
ध	—	प	—	प	ध	प	रे	ग	—
जं	—	त्र	—	मू	ज	नि	प	र	—
म	—	प	—	—	सां	सां	ध	—	प
नी	—	कों	—	—	झ	म	क	—	ज
प	रे	ग	म	प	म	सा	रे	सा	—
मा	—	—	—	—	यो	—	—	—	—

'आभोग' अंतरा अनुसार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–५ (ब)

अष्टछापीय कीर्तन संगीत परंपरामें ७४ रागों का प्रचलित १० थाटों में विभाजन

थाट भैरव (८)

१. भैरव
२. प्रभात–भैरव
३. रामकली
४. रामकली (प्र–२)
५. खट
६. ललित पंचम
७. गौरी
८. देवगन्धार

थाट बिलावल (१२)

१. बिभास
२. बिलावल (शंकराभरन)
३. अल्हैया बिलावल
४. नटबिलावल
५. कुकुभबिलावल
६. गौडबिलावल
७. देवगिरिबिलावल
८. नट
९. नट नारायण
१०. बिहाग.
११. बिहागरा
१२. शुद्ध बसन्त

थाट भैरवी (१)

१. माल कौंस

थाट आसावरी (४)

१. धनाश्री
२. आसावरी
३. सामेरी
४. जोगिया आसावरी

थाट तोड़ी (१)

१. तोड़ी

थाट पूर्वी (७)

१. परज
२. पूर्वी
३. पूर्वी कल्याण
४. गौरी
५. श्री
६. मारू
७. जेतश्री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

थाट खमाज (९)

१. बड़हंस २. मल्हार (मेघ) ३. शुद्ध मल्हार
४. गौड़ मल्हार ५. सोरठ मल्हार ६. जंगला
७. खमाज ८. सोरठ ९. जय जयवन्ती

थाट मारवा (४)

१. ललित २. पंचम
३. ललित बसन्त ४. पंचम बसन्त

थाट कल्याण (११)

१. हिंडोल २. हिंडोल प्र.२. ३. गौड़ सारंग
४. मालव ५. हमीर ६. हमीर कल्याण
७. यमन ८. कल्याण ९. श्याम कल्याण
१०. केदार ११. हिंडोल बसन्त

थाट काफी (१७)

१. सूहा २. सुघराई ३. सूहा बिलावल
४. सारंग (वृन्दावनी) ५. मधमाध सारंग ६. सामन्त सारंग
७. नूर सारंग ८. सूर मल्हार ९. धूलिया
१०. नट मल्हार ११. काफी १२. कान्हरा
१३. बागेश्री कान्हारा १४. नायकी कान्हरा १५. अडाना
१६. रायसो १७. सिंधूरा कान्हरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–६

"मन्दिरों का द्रुपदगान"

भरतीय संस्कृति की ललित कलाओं में संगीत–कला का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अति प्राचीन समय से इसकी धारा अविच्छिन्न रूप से बहती आ रही है जिसका श्रेय देवालयों और राज्यालयों को ही दिया जा सकता है। देवालयों में अपने आराध्य देब को संगीत द्वारा प्रसन्न करने का उद्देश्य था तो राज्यालयों में राजा महाराजाओं को खुश करने के लिए संगीत का उपयोग किया जाता था।

इन दोनों प्राचीन परंपराओं में देवालयों यानि "मन्दिरों का द्रुपदगान" के विषय में कुछ विचार व्यक्त किये गये हैं।

आज हमें मंदिरों के एवं राज्यालयों की द्रुपद गान शैली का जो संगीत उपलब्ध होता है उसकी परंपरा का प्रारंभ राजा मान के समय हुआ और मंदिरों की परंपरा का समय राजा मान के समय से पंद्रह–बीस वर्षों के पश्चात् ई. स. १५०० तक से पाया जाता है।

उस शताब्दी में द्रुपद की चार प्रकार की बानियां मानी जाती थीं। इनमें से आज जिसको "गोबरहारी बानी" कहते हैं यह वास्तव में मंदिरों की बानी कही जायगी। अष्टछाप के श्री कुंभनदासजी से उसका प्रारंभ हुआ। इस द्रुपदगान शैली को "गोवर्द्धनधारी की बानी" के नाम से पहिचानने लगे। सर्व श्री कुंभनदासजी, चतुर्भुजदास जी, कृष्णदासजी, छीतस्वामी आदि अष्टछाप के सभी महानुभाव प्रायः अपनी सभी पद–रचनाओंमें "गिरधारी" "गोबरधनधर", "गिरिधरनाथ". "गोवर्द्धननाथ" आदि नामोंमें से किसी नाम को अपनी छाप के साथ जोड़कर रचना किया करते थे। ये "गोवर्द्धनधर" ही आज के "श्रीनाथजी" हैं। भक्त कवि मीरांबाई भी अपने पदों में "गिरधर" नाम का प्रयोग अपनी छाप के साथ कर पद–रचना किया करती थीं। अष्टछाप के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कवि महानुभाव गोवर्द्धनपर्वत पर के श्रीजी के मंदिर में कीर्तन–गान किया करते थे। इस प्रकार "गोवर्द्धन पर्वत", पासके गोवर्द्धन गांव तथा "गोवर्द्धन-धारी" नामों से इस बानी का संबंध जुड़ गया।

अब हम "मंदिरों का द्रुपदगान" की बात करेंगे।

वैसे तो उत्तर भारत में गणेशजी के, भगवान शंकर के, भगवान राम आदि के मंदिर भी स्थापित किये गये हैं। इन मंदिरों में भी उसी समय में द्रुपद के भक्तिगान गाये जाते थे किन्तु इसकी परंपरा और प्रणाली स्थगित हो जाने के कारण आज उनके भक्ति–गान के द्रुपद अल्प प्रमाण में प्राप्त होते हैं।

द्रुपद गायन का आरंभ और उसकी सुरक्षा व्रजमंडल के हमारे मंदिरों से ही होती रही है। व्रजमंडल उसका मुख्य स्थान है जहां राधा–कृष्णोपासक चतु: संप्रदाय–पुष्टि, चैतन्य, गौडिया और राधा–वल्लभ–के स्थापकों–श्री वल्लभाचार्यजी, श्री चैतन्यमहाप्रभु, श्री हरिदास स्वामी और श्री हितहरिवंशजी–ने अपने–अपने मंदिरों में सेवा–पूजा के साथ संगीत के माध्यम द्वारा भगवान के भक्तिमय गुणगान को जोड़ दिया है।

इन चारों संप्रदायों के सैकड़ों मंदिर अस्तित्व में हैं। राधा–कृष्ण के लीला–भेदों की स्वरूपासक्ति अनुसार स्वरूप(मूर्ति)की स्थापना की जाती है। किन्तु आज इन चारों संप्रदायों की सेवा प्रणाली तथा (द्रुपद-गान-) गान-शैली आदि परंपराओं में पर्याप्त अन्तर आ गया हैं।

श्री चैतन्यमहाप्रभुजी का बंगाल से संबंध होने के कारण वहां के संगीत तथा भाषा के प्रभाव से उनकी कीर्तन–गान–शैली में परिवर्तन हो गया है। परिणामतया पद–रचनाओं के स्थान अधिकतर हरिनाम–स्मरण और हरि–नाम–संकीर्तन का प्रभाव बढ़ता गया है। श्री हरिदासजी के गौडिया संप्रदाय के मंदिरों में उनकी गान–परंपरा केवल भावुक सज्जनों के हाथों में कुछ वर्षों तक रहने से राग–ताल और बंदिशों की प्राचीन गोरवहारी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बानी की द्रुपद—शैली के स्थान पर उनकी स्वतंत्र शैली दिखाई देती है। केवल राधावल्लभ संप्रदाय के कीर्तनों की रचनाएँ अधिकतर अष्टछाप के महानुभावों की रचनाओं से मिलती—जुलती प्राप्त होती हैं जिनमें राधावल्लभ—संप्रदाय के स्थापक गोस्वामी श्री हितहरिवंशजी के चौरासी पदों के उपरान्त उनकी सेवक—परंपरा के अष्टमहानुभावों की रचनाएँ विपुल प्रमाण में प्राप्त होती हैं। इस के साथ उनकी स्वतंत्र गान-शैली भी प्रचार में है। इन चारों संप्रदायों के मंदिरों में से श्रीमद् वल्लभाचार्यजी के पुष्टि संप्रदाय के मंदिरों में प्राचीन द्रुपद परंपरा के कीर्तनगान की प्रणाली आज तक चालू रही है।

अतः अब हम पुष्टि—संप्रदाय के मंदिरों की द्रुपद—कीर्तन—गान परंपरा के संबंध में अपने बिचार प्रस्तुत करेंगे।

"अनुपम—संगीत रत्नाकर" के अनुसार द्रुपद का जो स्वरूप दिया गया है वह निम्न प्रकार है :—

"गीर्बाणमध्यदेशीय भाषा साहित्य राजितम्। द्विचतुर्वाक्यसंपन्नं नरनारी कथा श्रयम्॥

शृंगाररसभावाद्यं रागालापपदात्मकम्। पादान्तानुप्रासयुक्तं पादान्तयुगकं च वा॥

प्रतिपादं यत्रबध्यमेबं पादचतुष्टयम्। उदग्राहध्रुवकाभोगान्तरं ध्रुवपदं स्मृतम्॥

द्रुपद के उक्त स्वरूपानुसार हमारे द्रुपदों में संस्कृत—मिश्रित व्रज—भाषा का साहित्य मुख्य अंग माना गया है; इसमें नर—नारी यानि राधा—कृष्ण की लीलाओं का वर्णन, शृंगार रस की प्रधानता, चार चरण एवं पद के अन्त में अनुप्रास आदि विशेषताओं का प्राधान्य पाया जाता है।

इन विशेषताओं में भाषा का उल्लेख प्रथम किया गया है। अतः भक्ति—प्रधान इन चतुः सम्प्रदायों में रचनाकारों की भाषा का उच्चारण स्पष्ट होना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अत्यावश्यक माना जाता है क्योंकि भक्ति की भावात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही होती है और संगीत उसका पूरक जंग होता है। इस प्रकार के द्रुपद–गान के रचनाकार भक्त महानुभावों को अनुभूति के जो दर्शन हुए थे उसीको उन्होंने अपनी "वाणी" के माध्यम से प्रकट किया है। अतः सभी वैष्ण संप्रदायों में पदों को "वाणी" कहने का भी रिवाज है। इनमें राधा–वल्लभ संप्रदाय के महानुभावों की पद–रचना के ग्रन्थों (हस्त–लिखित तथा प्रकाशित) में पदों के लिए "वाणी" का ही शब्द–प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अष्टछाप के "पद" को भी वाणी कहनेका रिवाज है। इस बात से स्पष्ट होता है कि द्रुपद–गान की चारों प्रकार की प्राचीन शैलियों में "बानी" शब्द का जो प्रयोग हुआ है वह वस्तुतः इसी "वाणी" शब्द का ही व्रजभाषीय रूप है जिसका प्रथम प्रयोग "गोवरहारी(गोवर्द्धनहरि)वानी" के रूप में पाया जाता है।

इसके पश्चात् राज्याश्रित गायक–वादकों द्वारा "नौहारी वानी", डागुरी बानी", तथा "खंडारी बानी" का प्रादुर्भाव हुआ ऐसा माना जाता है।

बुझुर्गों से सुना हैं तद्नुसार कहा जाय तो नौहारी बानी में नौ प्रकार (जैसे –दुगुन, तीगुन, आड, डेढ आदि)के अंगों से द्रुपद्–गान किया जाता था। इसमें मुख्यतः गिनती का हिसाब रहता है। जब कि नौहारी बानी के कुछ अंगों के उपरान्त डागुरी बानी में मीड, गमक, घसीट आदि तथा खंडारी में खंड–खंडकरके गाने का प्रचार होना संभवित हैं। इसके अतिरिक्त गांवों तथा प्रदेशों के नाम पर से भी इन नामों के प्रचलित होने की एक मान्यता हैं।

गोबरहारी बानी के द्रुपद् सीधे–सादे और सरल ढंग से गाये जाते हैं। इसमें तान, बोल–तान, आड, डेढ आदि किसी अंग का प्रयोग नहीं किया जाता। किन्तु इसमें स्वर, राग–शुद्धि, स्वर–स्थान, लय, शब्दोच्चारण आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संप्रदाय के अलावा अन्य द्रुपद गायकों में स्व. भरतजी व्यास का नाम लिया जा सकता है जो कुछ बर्ष पूर्व कुछ वर्षों के लिए बडौदा संगीत विश्व-विद्यालय में द्रुपद—गान के प्रधानाध्यापक के रूप में रहे थे।

आज—कल प्रचार के द्रुपदों में अधिकतर स्थायी और अन्तरा ही सुनने में आते हैं। जबकि अष्टछापीय परंपरा में द्रुपदों में स्थायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारों विभाग रहते हैं। इन चारों विभागों में प्रत्येक के चार—चार आवर्तन होते हैं। तथापि कुछ ऐसे द्रुपद भी मिलते हैं जिनमें स्थायी के दो या तीन आवर्तन भी पाये जाते हैं तो स्थायी के चार तथा अन्तरा के पांच आवर्तनवाले द्रुपद भी पाये जाते हैं।

इस प्रकार पुष्टि—सम्प्रदाय की उक्त द्रुपद—गान परंपरा में निश्चित् रागों एवं निश्चित भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। "अष्टछापीय भक्ति—संगीत" के द्वितीय तथा तृतीय खंड के परिशिष्ट ५ (ब) में जिनका प्रचलित दस थाटों में विभाजन प्रस्तुत किया गया है इन ७४ रागों में ही द्रुपद—गान की परंपरा प्राप्त होती है। इनके अलावा अन्य राग बर्ज्य समझे जाते हैं। उसी प्रकार द्रुपद—गान की भाषा ब्रज—भाषा ही मान्य है।

किन्तु वर्तमान परिस्थिति शोचनीय है। एक ओर प्राचीन परंपरा के कीर्तनकारों की संख्या धीरे—धीरे कम होती जा रही है वहां दूसरी ओर अर्वाचीन कीर्तन गानेवाले अधिकतर स्वैच्छिक परिवर्तनों का प्रयोग करते जा रहे हैं। परंपरा की शास्त्रीय दृष्टि से इनके कीर्तनगान में राग, ताल, लय, आवर्तन, शब्दों की सुसंगतता आदि के स्पष्ट दर्शन नहीं होते। इसके उपरान्त खयाल आदि प्रचलित आधुनिक शैलियों का असर भी दिखाई पड़ता है।

हमारी प्राचीन कीर्तन परंपरा के लिए पिछले पचास वर्षों से "हवेली संगीत" नाम प्रयोग में आ रहा है। परिणामतया गुजराती "धोळः"(गुजराती भाषा में प्रयुक्त गरबा जैसी एक प्रकारकी लोक—गायन शैली)का भी हवेली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संगीत के अन्तर्गत प्रयोग प्रारंभ हो गया है जिसको संप्रदाय की सेवा-प्रणाली के बिरुद्ध कहा जायगा ।

उपर्युक्त विचारों से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि अष्टछापीय द्रुपद-गान परंपरा की रक्षा तथा शिक्षा हमारे मन्दिरों के द्वारा ही होती रहती थी जो आज प्रायः लुप्त-सी होती जा रही है। दूसरी ओर भोपाल, वृन्दावन, बनारस कलकत्ता आदि स्थानों में द्रुपद-गान प्रचार की संस्थाएं तथा अन्य संगीत-विद्यापीठें द्रुपद-गान प्रचार का प्रशस्य कार्य कर रही हैं ।

इस प्रकार "द्रुपद" प्रचार की जो-जो संस्थाएं हैं उन सबसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे सभी, जिसकी परंपरा अति प्राचीन है तथा जिसका साहित्य भी विपुल और भक्तिभाव पूर्ण है ऐसी अष्टछापीय द्रुपद-गान परंपरा को अपने कार्यक्षेत्र में समाविष्ट करें ।

इस परिस्थिति में इस के संबंध में जिनकी जिम्मेदारी सबसे अधिक हैं ऐसे मंदिरोंके माननीय अधिपति गोस्वामी महोदय, संप्रदाय के धनाढ्य सेवक तथा संप्रदाय के भावुक वैष्णव लोग यदि इस दिशामें कुछ-ठोस कार्य का आरंभ करने से विमुख रहेंगे तो मंदिरों के द्रुपद गान की प्राचीन परंपरा सर्वथा लुप्त हो कर आज की प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रकारकी मनोरंजक गायन-शैलियां इस का स्थान ले लेंगी ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–७

घोळ

परिशिष्ट–६ में सम्प्रदाय के मन्दिरों में गाये जानेवाले द्रुपदों की चर्चा की गयी है। यह द्रुपद गान शैली संप्रदाय की शिष्ट संगीत की प्रमुख धारा है।

इस "शिष्ट–संगीत" की धारा के साथ संप्रदायमें "लोक–संगीत" का प्रवाह भी बहता रहा है। इस में यह न भूलना चाहिए कि लोकजीवन में वैष्णव धर्म की भावना युक्त "लोक–संगीत" की रसगंगा प्रवाहित करने में गुजरात का बहुत बड़ा योगदान हैं।

"लोक–संगीत" के इस प्रवाह में "पद" से मिलता–जुलता "घोळ" नामक एक लोक–गीत प्रकार संप्रदाय को गुजरात की विशिष्ट देन है।

अब हम "घोळ" पर कुछ बिचार प्रस्तुत करेंगे।

सम्प्रदाय के 'घोळ' शब्द के रूढ़ अर्थ में घोळ के गीतों के अन्तर्गत अन्य- लोक–शैली के घोळ के अन्य प्रकारों को भी 'घोळ' कहने का प्रचार है। संप्रदाय के 'घोळ' गीतों का उद्‌गम श्रीमद् बिठ्ठलेश्वर के समय में असारवा के सेवक गोपालदासजी द्वारा हुआ हैं। उन्होंने नौ की संख्या में घोळ की रचना की है, जो गुर्जर भाषा में ही नहीं, गुर्जर लोक–गीतों की शैलीमें भी लिखे हुए स्पष्ट होते हैं। आज सभी वैष्णवगण लोक–गीत के ढंग से गाते हैं। तथापि ध्यान रहे कि इस रचना को नवाख्यान या वल्लभाख्यान के नाम से लिखित और प्रकाशित पुस्तक में स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होते हैं। यही नहीं प्रत्येक आख्यान के शीर्षक में—राग केदार, राग परज, राग सामैरी इत्यादि राग–रागिणी ही पाये जाते हैं।

इस से ज्ञात होता है कि उस समय राग वर्गीकरण में राग कुटुंब की व्यवस्था प्रचार में थी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"धोळ" शब्द मूलतः संस्कृत "धवल" शब्द से निकला हुआ है। धवल से 'धउल' और बाद में "धोळ" शब्द प्रचार में आया है। संस्कृत "धवल" शब्द प्राचीन है। किन्तु सम्प्रदाय में जो "धोळ" गाये जाते हैं उनका उद्गम और प्रचार पिछले ३०० वर्षों से अधिक नहीं हैं।

आजकल "धोळ" के गीत–प्रकार को कुछ लोग हवेली संगीत मानने लगे हैं। किन्तु यह मान्यता सम्प्रदाय की परंपरा, प्रणाली तथा गान–शैली से सर्वथा भिन्न है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, "धोळ" शब्द तथा गीत–प्रकार का इतिहास ३०० वर्षों से अधिक नहीं है। श्रीनाथजी के मेवाड़ पधारने के पश्चात् गुजरात और सौराष्ट्रमें सम्प्रदाय के मंदिरों कीं स्थापना होती रही और गोस्वामी महाराज श्रियों द्वारा उन के सेवक लोग वैष्णवी दीक्षा लेकर वैष्णव बनते रहे। इन भावुक वैष्णवोंने प्रचलित लोक गीतोंकी तर्जों के आधार पर अपनी भाषा में जो गीत–रचना की है इसे ही "धोळ" कहा जाता है। यह "धोळ" आज के 'लोक–संगीत' तथा 'सुगम–संगीत' के समान माना जायगा।

"धोळ" के स्वरूप तथा प्रकार के संबंध में प्रसिद्ध विद्वान श्री जेठालाल गो. शाह लिखते हैं तद् अनुसार "पद तथा धोळ यह एक प्रकार का काव्य का प्रकार है। काव्य–शास्त्र की दृष्टि से यह उर्मिकाव्य (Lyric=प्रगीत) प्रकार में गिना जायगा। पद् और धोळ के बीच सूक्ष्म अन्तर हैं।"[१] इस से स्पष्ट है कि "धोळ" प्रगीत प्रकार का "भवित–भाव पूर्ण काव्य–प्रकार" ही है।

हकीकत तो यह है कि गुजरात–सौराष्ट्र में संप्रदाय की भगवत्सेवा के विभिन्न उत्सवों, त्यौहारों, जन्म–बधाइयों तथा अन्य मांगलिक प्रसंगों पर भावुक

---

१. "धोळ–पद संग्रह–भा. १. "आमुख" पृ. ४ ले. चंपकलाल छबीलदास कीर्तनकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भक्त हृदयों के द्वारा उत्साह के आवेश में आकर गीत गानेकी रस वृत्ति के कारण गुर्जर—लोक संगीत में घोळ, रास, गरबी, हींच—हमची आदि शैलियों का उद्भव हुआ है। "घोळ" के संग्रह कर्ताओंने परंपरा के अनुसार इन सभी को "घोळ" के अन्तर्गत रखा है।

"घोळ" लोक—संगीत का ही एक प्रकार होने के कारण विशेष कर स्त्री वर्ग के लिए स्वभाविक और सरल होने से वे विना किसी तालीम आसानी से ग्रहण कर सकती हैं।

वैष्णव महिलाएँ हाथ से ताली देते हुए खड़ी रह कर या वर्तुलाकार घूमते हुए इन गीतों का गान करती हैं और अपना आनंद—उल्लास व्यक्त करती हैं। कभी—कभी रास और हींच—हमची में पुरुष वर्ग की जुड़ जाता है और उत्साह के साथ उत्सव की शोभा बढ़ाता है।

आज से सौ वर्ष पूर्व वैष्णव भक्त कवि श्री दयारामभाई तथा श्री शोभा माजी तक के घोळ पदों की जो हस्त—लिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं उन्हीं के आधार पर गो. वा. श्री लल्लुभाई देसाई ने सर्व प्रथम "विविध घोळ पद" नामक पुस्तक प्रकाशित की। बाद में गो. वा. श्री बसंतरामभाई शास्त्री ने परिश्रम लेकर उसी पुस्तक को सुधार के साथ पुनः प्रकाशित किया। वैसे तो घोळ पदकी छोटी—छोटी पुस्तिकाएँ वैष्णवों की ओर से भी प्रसिद्ध होती रहती हैं। किन्तु उक्त प्रथम दो महानुभावों ने घोळ पद के उपरान्त नीति—नियम के पाठ तथा श्री यमुनाजी के चालीस पदों का भी संकलन कर के प्राप्त सभी घोळ को अपनी पुस्तक में समावेश किया है।

हमारे "अष्ट छाप केन्द्र" से भी "प्राचीन घोळ पद—संग्रह-भा. १" प्रगट किया गया है। इस संग्रह में प्राचीनता की दृष्टि से गत सौ वर्षों के पूर्व के "घोळ" का ही समावेश किया गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अद्यावधि प्रकाशित प्रमुख घोळ संग्रहों में अधिकांशतः प्राचीनता की दृष्टि से निम्न–विषयों के 'घोळ' पाये जाते हैं–जैसे, श्री यमुनाजी, श्रीनाथजी, सात स्वरूप, प्रभु प्रागट्य, पारणा (पलना), बाललीला, श्रीमहाप्रभुजी, श्री गुंसाईजी, सात बालक, श्री गोकुलनाथजी, श्री वल्लभवेश, कन्हैयालालजी महाराज, दानलीला, रासलीला, हींच–हमची, व्रज, श्री दाउजी, मोटी (बड़ी) व्रज परिक्रमा, छोटी–व्रज परिक्रमा, आश्रय विनती आदि के घोळ।

उपर्युक्त प्रकार के गुजराती तथा सौराष्ट्री प्राचीन शैली के घोळ वैष्णव समाज द्वारा गाये जाते हैं। मन्दिर के निज मन्दिर, तिवारी, चौक तथा जगमोहन के स्थान के अतिरिक्त अन्य खुलेस्थान में इन घोळ गीतों का आयोजन किया जाता है। यह सम्प्रदाय की मर्यादा है। जब तक इस मर्यादा का पालन किया जाता हो तब तक कोई आपत्ति नहीं। किन्तु आज सम्प्रदायके मन्दिरों में प्रभु सम्मुख गाये जानेवाले अष्टछापीय कीर्तन गान के स्थान पर इस प्रकार के घोळ–गीत गाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इतना ही नहीं आज इस प्राचीन घोळ शैली के गीत भी आधुनिक पाश्चात्य संगीत के प्रवाह की ओर झुकते जा रहे हैं।

काव्यत्व की दृष्टि से देखा जाय तो 'कहीं की ईंट, कहीं का रोडा "जैसी स्थिति पायी जाती है अर्थात् काव्यत्व के स्थान पर उटपुटाग शब्दावली से युक्त वे सिर पैर के नये घोळ गीत भी प्रचार में आ रहे हैं। इस प्रवृत्ति को यदि समय पर रोका न गया तो प्राचीन ध्रुपद–गान परंपरा के साथ यह प्राचीन–घोळगीत शैली भी आधुनिक रंग में रंग कर यदि लुप्त हो जाय तो आश्चर्य नहीं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट—८

'अष्टछापीय भक्ति संगीत'—भाग—२ खंड—३—४ एवं पूर्तिग्रंथ खंड—५ में स्वरलिपि बद्ध पदों में प्रयुक्त कठिन शब्दों के हिन्दी एवं गुजराती अर्थ

अ

अकुलाई—व्याकुल होती है—વ્યાકુળ થઈ જાય છે.

अगन—अग्नि—અગ્નિ, આગ.

अघाऊँ—संतुष्ट होऊँ—સંતુષ્ટ થઉં.

अघै—अघ—पाप—પાપ

अचरा—अंचल—સાડીનો પાલવ

अजहु—अभी भी—હજી પણ.

अधरन—ओठों पर—હોઠ ઉપર.

अनत—अन्यत्र—બીજી જગાએ.

अनार—दाड़िम—દાડમ.

अनुचर—नौकर—सेवक—નોકર.

अनुदिन—हमेशा—હંમેશાં.

अभिराम—सुंदर—સુંદર.

अमित—खूब—પુષ્કળ, ખૂબ.

अरगजा—केसर—चंदनयुक्त लेप—કેસર ચંદન ભેળવીને કરેલ લેપ

अरबरे—अंडबंड—વેસિર પૈરકા—મ્હોં માથા વિનાનું.

अरुझी—उलझी हुई—ગુંચવાયેલી.

अरे है—कलह करता है—કજિયો કરે છે. આડો કરે છે.

अल कें—बाल की लटें—વાળની લટો.

अलबलाई—सच्चीझूठी बातें—ખરી—ખોટી વાતો.

अलि—भौंरा—भ्रमर—ભમરો

अलिसुत—भौंरा—ભમરો.

अवगाहत—गहराई में जाना—ઊંડા ઉતરવું.

अवेर—देर—વાર, મોડું.

असुवन—आँसू—આંસુ

अंगीकार—स्वीकार—સ્વીકાર

अंत हु सौं—अन्त में—છેવટે

अंबर—आकाश—આકાશ.

अंबुज कमल—કમળ

आ

आगरी—आगे—આગળ

आन—(i) दूसरा—બીજું, અન્ય.
(ii) आकर—આવીને.
(iii) सौगन्ध—આણ.

आरत—(i) इच्छा—ઇચ્છા.
(ii) दुःख—દુઃખ.

आस—आशा—આશા.

उ

उखल—उखल—ખાંડણિયો.

उघटन—नीकलना—प्रगट होना—ઉત્પન્ન થવું.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उजियार–प्रकाश–પ્રકાશ.
उझकि–आश्चर्यसे–આશ્ચર્યથી.
उझकिपरी–चौंक उठी–ચમકી ગઈ.
उडुगन–तारे–તારાઓ.
उदे–उदित हुआ–ઉદય થયો; ઊગ્યો.
उनींदे–नींदसे भरे–જાગરણ ને કારણે ઘેરાતાં.
उपरना–उपवस्त्र–ઉપવસ્ત્ર, ઉપરણું.
उबार्यो–बचा लिया–તાર દિયા–ઉગાર્યો, તાર્યો.
उमता अई–उन्मत्त हो जाता है–ઉન્મત્ત થઈ જાય છે.
उलट–उलटा–ઉલટું.
उसीर–ख़स–ખસ (સુગંધી યુક્ત ઘાસ)

ओ

ओचक–अचानक–અચાનક

औ

और–दूसरा–अन्य–બીજું.

क

कचरज–कीचड़–કીચડ.
कटि कसिया–कमर पर कस कर–કમર પર કસીને
कठुला–गलेकी हँसुली–ગળાની હાંસડી
कनिया–कटि पर–કેડમાં
कमठ–कछुआ–કાચબો.
कमोरी–मटकी–નાની માટલી.
करारे–किनारे–કિનારે
करोरन–करोडोंकी–કરોડોની
कल–शान्ति–चैन–શાન્તિ, ચેન.
कलेवा–सुबहका नास्ता– સવારનો નાસ્તો.
कहाँ लौ–कब तक–ક્યાં સુધી.
कंचुकी–कंचुकी–કાંચળી.
कंठसरी–गलेमें सरकती हुई माला–ગળામાં ફરતી માળા.
काछिनी–घेर युक्त कच्छ–ઘેરદાર કાછોટો.
कानि–लाज–આબરૂ–મર્યાદા.
कामरी–कम्बल–કામળી
कासौं–किसे, किसको–કોને
किधौं, कैंधो–अथवा तो–અથવા તો
किलकि–किलके–खुशीसे हँसे–ખુશી થઈને મોટેથી હસે.
किंकिनी–करधनी–કેડનો કંદોરો.
किंवारे किवाड़–કમાડ
किहिं–कहाँ–ક્યાં.
कुटिल लट–घुंघराले बालों की लट વાંકડિયા વાળની લટ
कुपथें–बुरे रास्ते पर–ખરાબ માર્ગ પર
कुलकानि–कुलकी लाज–કુળની લાજ આબરૂ.
कुरंग–हिरन–હરણ.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुलिन–ऊँचे कुल का–કુળવાન.
केहरि–सिंह–સિંહ
कोने–कोने में–ખૂણામાં, ખૂણે.
कौसेय–रेशमी वस्त्र–રેશમી વસ્ત્ર.

ख

खल–दुर्जन, ढोंगी–દુર્જન, ઢોંગી.
खिलाइ–खिलाऊँगी–ખેલાઉંગી–ખવડાવીશ, રમાડીશ.
खुरमा–वालु शाही मिठाई–એક પ્રકારની બાલુશાહી મિઠાઈ.
खोरि (–री) गली–ગલી.

ग

गठजोरे–गठबंधन–છેડાછેડી.
गन–समूह–સમૂહ, ગણ.
गयो बिचाइ–बिक गया–વેચાઈ ગયું
गरल–ज़हर–ઝેર.
गल बाँही–गलेमें बाँह डालना–ગળામાં હાથ રાખવો.
गहेरी–गहरी–ઘેરી ગાઢ
गात–अंग–અંગ
गार्यो–टाल दिया–ટાળ્યો.
गाँस–रुकावट–भेद की बात–અડચણ, રહસ્યની વાત.
गुर–गुड़–ગોળ.
गोरोचन–गोरोचन–ગોરોચન तिलक करने में प्रयुक्त सुगंधित पदार्थ

घ

घनसार–चंदन–ચંદન; સુખડ.
घुंघरवारी–घुंघराली–વાંકડી લટ.
घोख–अहीर जाति–આહીર, ભરવાડ

च

चकई–चकवी–સારસી,
चकडोर–चकई–હાથથી ફેરવવાની ચકરડી.
चकचोंधी–आँखों को चौंधा देने वाली–આંખો અંજાઇ જાય એવી.
चकोरा–चकोर पक्षी–ચકોર પક્ષી.
चक्रवाकी–चकवा मादा–ચકવી.
चख–आँख–આંખ.
चपला–बीजली–વિજળી.
चरचावें–चंदन लगाते हैं–ચંદન લગાવે છે.
चहुं ओर–चहुंधा–चारों ओर–ચારે બાજુ.
चहुँदिस–चारों दिशाओं में–ચારે દિશાઓમાં
चिकुर–बाल, केश–વાળ.
चितवत– देखता है–જુએ છે, નજર કરે છે.
चितवन–नजर–નજર, દૃષ્ટિ.
चित हूँ–चित्त में, मनमें–મનમાં, ચિત્તમાં.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिरैयाँ–चिड़िया–ચકલી.

चुरावै–चुरा लेता है–ચોરી લે છે.

चुवत–आँसू नीकलना–ચૂના–આંસુ આવવાં; ચૂવું.

चुहचुहानी–पंछियों का कलरव–કલરવ

चेरो–दास, सेवक–દાસ, ચાકર

चोलना–अंगरखा–અંગરખું.

चौवा–सुगंधित लेप–સુગંધિત લેપ.

छ

छतियाँ–छाती–છાતી.

छहियाँ–छाया–છાંયડો.

छाक–छाक–वह खाना जो हलवाहों, चरवाहों आदि के खाने के लिए दोपहरमें भेजा जाता है। ભાત (ખેતરમાં લઈ જવામાં આવતું ખાણું)

छाजै–शोभित होता है–શોભે છે.

छाँडिके–छोड़कर–છોડીને.

छिन–क्षण–ક્ષણ.

छिरकत–छिड़कता है–છોડે છે, છાંટે છે.

छुहारे–कच्चा छुहारा–લીલી ખારેક.

ज

जलद–बादल–વાદળું.

जलसुत–कमल–કમળ

जहाँ–जहाँ–જ્યાં

जाई–जन्मी–જન્મી.

जुन्हाई–चाँदनी–ચાંદની.

जोर्यो–जोड़ दिया–જોડ્યું, જોડેલું.

जौलौ–जब तक–જ્યાં સુધી.

झ

झगुली–झगुला–ઝભલું, આંગડિયું.

झर बरसायो–जल बरसाया–જળ વરસાવ્યું.

झरोंकन–झरोखे से–ઝરુંખામાંથી

झारूं–झाड़ देना–સાફ કરવું.

झांक्यो–देखा–જોયું.

झुँड़न जोरी–समूहमें मिलकर–સમૂહમાં મળીને, ભેગાં થઈને.

झोरी–झोली–ઝોળી.

ठ

ठठक्यौ–ठिठक गया–અટકી ગયો.

ठाढ़ी–खड़ी–ઊભેલી, ઊભી.

ठौर–स्थान, जगह–જગા.

ड

डगर (–रा)–रास्ता, मार्ग–રસ્તો, માર્ગ.

डलियाँ–डली–છાબડી.

डुलावे–डिगना–ડગવું.

ढ

ढिंग–पास, नजदीक–પાસે.

ढोटा–लड़का–છોકરો.

त

तगा–तार–તાંતણો.

तडाग–तालाब–તળાવ.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तनसुख सारी–एक प्रकार की साड़ी
એક પ્રકારની
સાડી.
तमचर–मुर्गा–કૂકડો.
तरनि-तनया–सूर्य की पुत्री–સૂર્યની
પુત્રી, યમુના.
तहाँई–वहीं–ત્યાંજ
तहियाँ–तहाँ–वहाँ –ત્યાં
ताहिपे–उस पर–તેના ઉપર
तिमिर–अँधेरा–અંધારું.
तिय–स्त्री–સ્ત્રી, નારી.
तोऊ–तो भी–તો પણ
तुरंग–घोड़ा–ઘોડો.
तोर्यो–तोड़ दिया (संबंध)–તોડી
નાંખ્યો.
तौलों–तब तक–ત્યાં સુધી.
त्रिपुरारि–महादेव–મહાદેવ, શંકર.

थ

थेंगरी–थिगला–થીગડું.

द

दनुज–दानव–દાનવ.
दमकत–चमकता है–ચમકે છે.
दरस–दर्शन–દર્શન.
दारागारादि–स्त्री–घर आदि–સ્ત્રી-ઘર
વગેરે.
दुपहैरी–दुपहरी–બપોર
दुरक–दुरै–छिप जाता है–સંતાઈ
જાય છે.
दुस्तरैन–पार करना कठिन–તરવું
મુશ્કેલ.
द्रुमवेली–वृक्ष की लता–વૃક્ષની લતા.
द्योस–दिवस–દિવસ

ध

धुनत डोलते हैं–ડોલે છે.

न

नक वेसर–नाक का एक गहना–
નાકની નથણી.
नखनि–खनावत–पैर के नखों से
कुरेदना–પગના નખથી
ખોતરવું.
नटवत–नाचता है–નાચે છે
नाईं– के जैसा–ના જેવું.
नातर–नहीं तो–નહિતર
नाना भात–नाना प्रकार से–
अलग–अलग प्रकार से–જુદા
જુદા પ્રકારે.
नाहिन– नहीं है–નથી
निकट–पास, नजदीक–પાસે
निकसी–नीकली–નીકળી.
निगम–वेद–વેદ.
नितितें–रोजकी अपेक्षा–રોજ કરતાં
निर्तत–नाचता है–નાચે છે.
निमेख–निमेष, क्षण–નિમિષ, ક્ષણ.
निवारक–दूर करनेवाला–દૂર કરનાર
निहारौं–देखता हूँ–જોઉં છું.
नीकी–सुंदर, अच्छी–સુંદર, સારી.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नीके–अच्छे ढंग से–સારી રીતે.
नेकु–जरा भी–જરા પણ, જરીક.
नैन (–ना)–नयन, आँख–નયન, આંખ.

प

पटकी–पटक दी–પછાડી. પટકી.
पठायो–भेजा–મોકલ્યો.
पत्याऊँ–विश्वास करता हूं–વિશ્વાસ કરું છું.
पत्यात–विश्वास करना–વિશ્વાસ કરવો.
परस–स्पर्श–સ્પર્શ
परसि–स्पर्श करके, छूकर–સ્પર્શ કરીને, અડીને.
परिरंभन–आलिंगन–આલિંગન
पलकन से–पलकोंसे–પાંપણથી.
पसार–फैलाकर–ફેલાવીને.
पंगु–लूला, लंगड़ा–લૂલો, લંગડો.
पंजिरी–जन्माष्टमी के दिन दिया जानेवाला प्रसाद–पंजिरी–પંજરી.
पंकज पाटीर की–पंकज की पंखुडियों से छायी हुई–કમળની પાંખડીઓથી છાએલી.
पाज–हद, मर्यादा–હદ, પાળ.
पाँयन–पाँवमें, पगमें–પગમાં, પગે
पिक–कोयल–કોયલ.
पीचकाइन–पिचकारी–પિચકારી.
पीर–पीड़ा–પીડા, દુઃખ.
पुलिन–तट, किनारा–કિનારો.
पूरन ससी–पूर्णिमा का चाँद–પૂનમનો ચંદ્ર.
पोहोप–पुष्प, फूल–પુષ્પ, ફૂલ.
पैठ–बाजार–બજાર.
पेंडो–मार्ग, रास्ता–રસ્તો, માર્ગ.
पोवति–पोवत–પિરોતી હૈ–પરોવે છે.
पिरोना–पिरोता हूँ–પરોવું છું.
पेखो–देखो–જુઓ.
पौरी–द्वारपर–દરવાજે

फ

फगुआ–फाग के उपलक्ष्य में भाभी के द्वारा देवर को दिया जाने वाला उपहार–હોળી ખેલવા નિમિત્તે ભાભી દ્વારા દિયરને અપાતી ભેટ.
फरकावै–फरफराना–ફરકાવે.
फबि–शोभित–શોભતાં.
फुलवा–फूल–ફૂલો.
फेरत–घुमाते हुए, उड़ाते हुए–ફેરવતાં.

ब

बकवो–बकवास–बकना–બકવાસ.
बछरा–बछड़ा–વાછરડું.
बटोही–प्रवासी–મુસાફર, પ્રવાસી.
बढ़ाउं–बढाना–વધારવું.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बदौं-जानूं -જાણું.
बना-वर-વર.
बयार-हवा-હવા.
बरखा-वर्षा, बारिश-વરસાદ.
बरबंट-बरबस-जबरन-જબરજસ્તી
बहियां-हाथ-હાથ.
बहुरि-फिरसे, पुनः-ફરીથી
बानिक-छटा-છટા
बावरी-पगली-ગાંડી, પગલી.
बासर-दिवस-દિવસ, વાર.
बाँकौं-बाँका-સુંદર, ફાંકડો, વાંકો
बिकाउं-बिकने योग्य-વેચાઉં.
बिछूरे-बिछड़ गये, अलग हुए-છૂટા પડયા.
बिदारन-चीर देना-ફાડી નાંખવું.
बिधना-विधाता-વિધાતા.
बिरद- बिरूद-ઇલ્કાબ, પદવી.
बिरही-विरह का-વિરહનો
बीड़ा-पान का बीड़ा-પાનનું બીડું
बीथिन-गली-ગલી.
बीरबधू-बिरह-बधूटी-વર્ષાઋતુમાં પેદા થતું એક લાલ જંતુ.
बूझत-समझते हैं-સમજેછે.
बेसर-नाक का एक गहना-નાકની નથણી.

भ

भंजन-नाश करने वाला-નાશ કરનાર, ભાંગનાર.
भाजै-भाग जाना- દોડી જવું.
भान-सूर्य-સૂર્ય, સૂરજ
भोर-सुबह, प्रातः-સવાર,

म

मकरंद-फूल का रस-ફૂલનો રસ,
मग-रास्ता-રસ્તો.
मतिमंद-मंदबुद्धि-ઓછી બુદ્ધિવાળો.
मधुप-भौंरा-ભમરો.
मराल-राजहंस-રાજહંસ
महियाँ-में, भीतर-માં, અંદર
मंडित-शोभित-શોભતા.
मिला की-मिलवा देने की-મેળવી આપવાની, મેળવવાની.
मिस-बहाने-બહાને, બદલામાં.
मीन-मछली-માછલી.
मुकुलित-खिला हुआ-ખીલેલું.
मुक्ता-मोती-મોતી (નાકની નથણીનું મોતી नक बेसर)
मो पै-मुझ पर-મારા ઉપર
मोसों-मुझ से-મારાથી, मुझ-सा-મારા જેવો.

य

या-यह-આ
याम-प्रहर-પ્રહર,

र

रच्छन-रक्षण-રક્ષણ.
रतनारे-लाल (कमलजैसे)-લાલ-રાતાં (કમળ જેવાં)
रतिपति-कामदेव-કામદેવ.
रसना-जीभ, जिव्हा-જીભ.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रसाल-मधुर-મધુર, મીઠું.
राजै-शोभित होते हैं-શોભે છે.
रावटी-तंबू-તંબુ.
रिझवत-खुश करती है-ખુશ કરે છે.
रीतु-ऋतु-ઋતુ.
रुसिबेकी-रीस करने की-રિસાવા માટેની.
रेनु-धूल-ધૂળ.
राका-रात्रि-રાત
राँभत-रँभाती है-(ગાય) ભાંભરે છે.
रैन-रात-રાત.
रोर-कलरव-કલરવ.
रोरी-कुमकुम-કંકુ

ल

लखाये-दिखाई पड़ता है-દેખાય છે.
लरियाँ-बालों की लट-વાળની લટ લીરા.
लौंदा-लौंदा-લુંદો (માખણનો)
लौन-नमक-મીઠું.

व

वरने-रंगका-રંગનું, રંગે.
वासव-इन्द्र-ઈન્દ્ર.
विरहिन-विरहिणी-વિરહિણી, વિયોગિની.
विराजै-शोभित होता है-શોભે છે.
विहरइ-विहार करते हैं-વિહાર કરે છે.
व्हैं-होकर-થઈને.

श

श्रुतिरूपा-गोपीजनों के एक समूहका प्रकार-ગોપીજનોનો એક સમૂહ
श्रवनन-कान-કાન.
श्वपच-चाण्डाल-ચંડાળ.

स

सगरी-सारी-સઘળી, પૂરી, આખી
सचु-सुख-સુખ.
सजल-पानी से भरा-પાણીથી ભરેલું
सरबन-कान-કાંન.
सरवाई-मित्रता-મિત્રતા, મૈત્રી.
सरोज-कमल-કમળ, સરોજ.
सहचरी-सखी-સખી.
सांकरी-संकरी-સાંકડી.
साँचि-सच-સત્ય, સાચું.
साँवल-श्याम रंग का-શ્યામ રંગનું
साँस-श्वास, सांस-શ્વાસ.
सिधारे-गये-સિધાયે-સિધાવ્યા, ગયા
सिंघारन-संहार करना-સંહાર કરવો
सीमंतिनी-नारी-નારી, સ્ત્રી.
सुवन-पुत्र-પુત્ર-દીકરો
सुवा-तोता-પોપટ
सेन-इशारा-ઈશારો
सेहरा-सेहरा-ફૂલનો તોરો જે વર રાજાના ફેંટા સાથે બાંધવામાં આવે છે.
सोतन-सौत-શોક્ય.

ह

हरणे-हरनेवाला-હરણ કરનાર, લઈ લેનાર.
हुती-थीं-હતી.
हुतौ-था-હતો.
हुलरावति-लोरी गाती है-હાલરડું ગાય છે.
हेरत-देखता है-જુએ છે.
हौले-हौले-ધીરે-ધીરે.

आम्नाय-ग्रन्थालय,
प्रतिनिधि, करौंदी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुद्धि पत्र

पूर्वग्रंथ अ. छा. भ. सं, भा–२ (खण्ड–३,४) का संपूर्ण शुद्धि–पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१३	रे	रे
१४	२	रे	रे
१४	९	घ	घ
१४	१९	घ	घ
१६	१	रें	रें
१६	१	ग	गं
१६	२	चठिकाठि	चढिकाढि
१६	५	क्षगुली फेंह	झगुली फेंट
१६	१५	खलन	खेलन
१६	१५	लामै	लागे
१६	२०,२१,२२	नि सा | ग म | – प | म ग नि स | दि ना | – की | टे – × | ० | २ | ० म रे | – सा – वा | – – ३ | ४	
१९	१४	घ – रें सां घ प	घ – रें सां घ प
१९	१५	डोलत	डारत
२३	१	घ	घ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२३	२	देख	देखो
२४	१९	ध	ध
३९	६	होहोहोरी	हरि होरी
३९	१५	संचारी की स्वरलिपि में आभोग के शब्द आ जानेसे उस स्थान पर "हाथ न पिचकाइ लिये" यह पंक्ति के शब्द लगा लिजिये।	
४२	२	ज ब ऽ	ज ब हि
४२	१८	स द न	म द न
४८	३	नि ध प ध	नि ध प ध
४८	७	ध नि सां नि ध	ध नि सां नि ध
४८	१०	म ध नि	म ध नि
४८	१३	ध सां नि ध	ध सां नि ध
४८	१४	मरे	मेरे
४८	१८	ध	ध
४८	२२	ध	ध
४८	२३	झा —	झा — रू
४९	९	म— | ग ग | म म | ग — | म ग | — म	
		—म — | ग ग | म ग | म ध | नि ध प | म ग	
४९	२०	ग रे ग	म रे ग

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५१	१	गम गरे सरि	गं मं गंरें सांरें
५१	१	सां रें सां	सां रें सां
५१	३	रें सां निध	रें सां निध
५५	१	निरे गम	नि़रे गम
५५	१३	निरे गम	नि़रे गम
५५	१९	सां रें सां सां सां	सां रें सां सां
५६	५	निरे गम	नि़रे गम
५६	२२	म ध म म –	म ध म म –
५७	५	गम मम	गम मं म
५७	१६	गम मम	गम मम
५८	१	नि	नि़
५८	५	नि रे नि	नि रें नि
५८	७	म म ग	म म ग
५८	१०	सां निसा	सा नि़सा
६०	७	निरे	नि़रे
६१	१	सा – – सारे	सां – – सांरें
६१	१	म ध	म ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

६१	६	मध	मध
६१	१०	मध	मध
६३	१	सां रे निध	सां रें निध
६५	१२	नारी	गोरी
६९	९	नि	नि
७३	२०	सां	सा
७९	११	म	मं
८०	१०	सां – सां	सा – सां
८१	९	साध – म – ध	साध़ – म़ – ध़
८१	१७	मं	मं
८१	१९	सां – सां	सा – सां
८४	७,९	ध – नि सा	ध़ – नि़ सा
८८	१४	निसां	निसां
१२६	१५	गम	गप
१३८	१५	ध	ध
१४१	१	नि	नि
१५४	५	३	×
१५४	६	म	म
१५४	१२	रे	रे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१५५	१	ध	ध
१५५	७	मंग	मग
१५७	९	रें	रें
१५७	१९	ग	ग
१६९	५	रे	रें
१६९	१३	निप	निप
१७३	५	निप	निप
१७४	१५	नि – – प	नि – – प
१७५	११	सा–	सां–
१७५	१३	रे– सां–	रे– सा–
१८२	७	सांनि	सानि
१८३	९	नि – प	नि – प
१८७	५	व	प
१९८	३	पव	पप
१९८	७	व	प
२००	१४	मप	मप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२०९	१८	ध	ध
२२३	६	सा सां	सां सां
२२५	१५	रे	रें
२३१	९	म म म रे रे	मं मं मं रें रें
२३६	७	ध नि़ प	ध नि प
२३७	१९	आसावयी	आसावरी
२३८	९	ध	ध
२३८	१९	ध	ध
२४६	१	रे नि	रें नि
२४६	२०	नि रे ग	नि़ रे ग
२४७	३	म ध	म ध
२४८	९	रें	रें
२४९	९	म	मं
२५०	१	रे	रे
२५०	५	कुछ	कछु
२५०	२२	म ध म ध	म म ध म ध
२५१	२	ककु	कछु

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२५१	५	रें,	रें,
२५१	५	रे ग	रे ग
२५१	९	म ग – ग	म ग ग ग
२५१	१०	कच – क	क – चक
२५५	अन्तराकी पहली आवृत्ति		
	प प प ध प	म म प	नि नि नि	सां – सां –
	क न क खं भ	म र –	क त म	नि – हो –
२५६	४	चाका	चोकी
२५९	५	म	म
२५९	१८	रें	रें
२६०	७	रें	रें
२६४	१९	रें	रें
२६६	१६	रें	रें
२६८	५	रें	रें
२६८	१७	म ध	म ध
२७२	१७	रें	रें
२७२	१९	ध	ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२७३	३	सा	सां
२७३	१३	ते	ग
२७४	१७	म — — ध	म — — ध
२७८	२२	रे ग	रें गं
२८०	१	नि सा	नि़ सा
२८१	११	सां रे नि	सां रें नि
२८७	९,१९	रे	रें
२९३	१३	धि	ध
२९४	१८	सा	सां
२९६	९	सा	सां
३००	२१	म	म
३०६	३	म	म
३०९	९	नि ध	नि ध
३११	१९	नि	नि
३१३	२४	रे — सा —	रे — सा
३१४	३	— नि	नि —
३१४	४	— झु	झु —
३१४	११	सां — —	गं रें सां
३१४	१३	सारे — ग — रे	सांरें — गं — रें
३२२	१४	प मप ध	प म प ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३२२	१७	र, —	र, क
३२२	२०	प ध सां रें	ध नि सां रें
३२३	७	म ध	मध
३२३	११	प म	प म
३२७	१	सां	सा
३२८	१९	र	रे
३३३	१५	रे	रे
३३४	१	रे	रे
३३६	३	नि	नि
३३८	१	रें	रें
३३९	९	ग रे	ग रे
३३९	११	ग ग	ग ग
३३९	१५	गं	गं
३४५	९	रे	रें
३४६	१०	रे गरे	रे ग रे
३४६	१२	प	प़
३४६	१४	म – रे	म़ – रे
३४६	१६	नि धप	नि धप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३४६	१६	गरे ग	रेग रे
३४७	५	ग रे ग	रे ग रे
३४७	१३	प	प़
३४७	१५	गरे ग	रेग रे
३५१	९	सां	सा
३५२	१	मं	मं
३५६	१७	धर्यां	धर्यों
३५७	५	नि – सां	नि – सां
३५७	१५	गं – –	गं – मं
३५७	१७	ध नि प	ध नि प
३६१	२०	ग म रे सा नि सा	गं मं रें सां नि सां
३६२	७	नि – सा	नि – सां
३६२	१३	नि ध नि	नि ध नि
३६३	९	नि़ ध़	नि ध़
३६३	२०	सा, नि	सा, नि
३७०	९	नि सा	नि़ सा
३७१	१	रे नि सा रे	रे नि़ सा रे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३७३	१५	म रे सां	म रे सा
३७७	१	ग ग	ग ग
३७७	१०	जप	ज न
३७७	११	गं गं	गं गं
३७७	१४	रे	रें
३७८	३	गग	ग ग
३७८	५	नि सा	नि़ सा
३७८	११	ध	ध
३७८	१३	गं गं गं	गं गं गं
३७९	१	बडाना	अडाना
३७९	१४	ग ग	ग ग
३७९	१६	ग ग	ग ग
३८०	७	गं गं	गं गं
३८१	५	ग ग	ग ग
३८१	१७	गं गं	गं गं
३८२	११	ग ग	ग ग
३८२	९	नि — प	नि — ध

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३८२	११	नि प	नि प
३८३	१	गं गं	गं गं
३८३	९	गं गं	गं गं
३८४	११	ग	गं
३८९	११	प ध	प़ ध़
३९३	१७	ध नि प	ध नि प
४०९	१३	स्वखान	स्वरज्ञान
४०९	१६	भारखंडे	भातखंडे
४१५	१	रें सां	रें सां
४१५	१	ध सा	ध सां
४१५	१७	नि सा	नि सां
४१६	११	रें	रे
४२३	२३	नि रें –	नि रें –
४२४	८	नि रें सां –	नि रें सां –
४३०	१७	रें सा	रें सां
४४६	१	अनु. पृ. ४१४	अनु. पृ. ३१४
४४६	२०	सां –	सा –
४४६	२४	नि–नि – सा –	नि नि़–नि़-सा–नि़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिशिष्ट–९

पखवाज : (मृदंग) ताल परिचय (सामान्य)

(अ) ठेका–बोल परिचय

पुष्टि मार्गीय कीर्तन परंपरा में पखवाज (मृदंग) की प्राचीनता के बारे में प्रथम भाग के 'तालाध्याय' में विस्तार के साथ कहा गया है। प्राथमिक शिक्षा के कई जिज्ञासु अभ्यासियों के द्वारा पखवाज (मृदंग) के कुछ तालों का समावेश हिन्दी ग्रंथ के आगामी भाग में करने के संबंध में सूचन मिले थे। इस सूचन की उपयोगिता को लक्ष्य में रखकर प्रचार में प्रचलित पखवाज (मृदंग) के कुछ आवश्यक ताल, उनके बोलों की व्यावहारिक समझ के साथ, बोल, ठेका सहित दिये जा रहे हैं।

पखवाज के तालोंकी सामान्य समझ

जिस प्रकार संगीत में मुख्य सात स्वर माने जाते हैं उसी प्रकार पखवाज के ठेका–बोल के मूल पाठाक्षर भी सात माने जाते हैं। और बाकी के शेष नौ पाठाक्षर सहायक या प्रतिनिधि माने जाते हैं। इस प्रकार कुल सोलह पाठाक्षर निम्न प्रकार बजाये जाते हैं :

१ ता. : मृदंग की दाहिनी पूड़ी पर बजता हुआ यह खुला बोल है। दाहिने भाग में आधी स्याही से कुछ ऊपर के भाग में सभी उंगलियाँ सीधी साथ मिलाकर पंजा बजाना चाहिये और बजते ही शीघ्र पंजा हटा लेना चाहिये। इसे 'थाप' या 'थप्पी' कहते हैं।

२ दी : यह भी पखवाज की दाहिनी पूड़ी पर बजता हुआ खुला बोल है। सभी उंगलियाँ मिलाकर पंजा सीधा कर के पंजे के अगले हिस्से से चाट पर हलका आघात करना चाहिये और बजते ही पंजा हटा लेना चाहिये।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३ ना : यह भी खुला बोल है और पखवाजकी दाहिनी पूड़ी पर बजाया जाता है। दाहिने भाग में चाट के स्थान पर तर्जनी उंगली से आघात देने से यह बोल बजता है।

४ तिं : यह मृदंग की दाहिनी पूड़ी पर बजता हुआ बंध प्रकार का बोल है। पंजे की मध्यमा और अनामिका दो उंगलियाँ मिलाकर स्याही के मध्य भाग में दबाकर बजाने से यह बोल बजता है।

५ ट : 'तिं' की तरह यह भी बंध प्रकार का बोल है। मृदंग की दाहिनी पूड़ी पर बजाने से यह बोल निकलता है। स्याही के मध्य भाग पर दाँयें हाथ की तर्जनी उंगली दबाकर बजाने से 'ट' की ध्वनि उठती है।

६ ध : यह खुले प्रकार का मृदंग के बाँयें भाग में बजता हुआ बाल है। जैसे दाँयें भाग में 'दीं' बजता है उसी प्रकार बाँयें भाग में बजाने से 'ध' बजता है।

७ क : मृदंग के बाँयें भागमें बजते वाला यह बंध प्रकार का बोल है। पूड़ी के नीचे के हिस्से में आटे का मध्यभाग छोड़कर बायें हाथ की चार उंगलियाँ मिलाकर दबाकर बजाने से यह बोल बजता है।

ऊपर के सात मूल पाठाक्षरों के अतिरिक्त उनके सहायक या प्रतिनिधि पाठाक्षर भी हैं जो उनके मूल बोलों के समान बजाये जाते हैं। जैसे,

१ गा, क, का, तां, डां, लां : ये अक्षर 'ता' के प्रतिनिधि हैं और जैसे 'ता' बजाया जाता है वैसे ही ये सभी बोल बजाये जाते हैं।

२ दिं, तिं, म, थुं : ये चार मूल अक्षर 'दीं' के प्रतिनिधि हैं क्योंकि जिस प्रकार और जिस स्थान से 'दीं' बजता हैं उसी भांति ये सभी बजाये जाते हैं।

३ रा. : यह 'ना' का प्रतिनिधि हैं और उसी भांति बजता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४. कि, त, ड, क, तत्, दित् – ये अक्षर 'ति' के प्रतिनिधि हैं और ज्यादातर जैसे दाहिने से बंध 'ति' निकलती है जैसे ही ये बोल बजते हैं।

५. र, :रि, त : ये 'ट' के प्रतिनिधि हैं और 'ट' के समान ही बजाये जाते हैं।

६. ग, गे, गि, ध, धे,, धुं, दिं, धिं, धा – ये सभी बोल मूल अक्षर 'ध' के प्रतिनिधि हैं और उसी प्रकार बाँयीं ओर खुले से बजते हैं।

७. का, कत् कि, तक्– ये सभी मूल अक्षर 'क' के प्रतिनिधि हैं और उसीके समान ही बजाये जाते हैं।

मृदंगकी दाहिनी ओर बाँयी पूड़ी पर साथ में बजाने से निकल ते कुछ बोल निम्न प्रकार हैं।

धा : दायें से 'ता' और बाँयें से 'ध', दोनों एक साथ बजाने से यह बोल बजता है।

धीं : दायें से 'दीं' और बाँयें से 'ध' दोनों को एक साथ बजाने से यह बोल बजता है।

धेट, धि : दाहिने पर 'ति' और बाँयें पर 'ध' को एक साथ बजाने से यह बोल बजता है।

धे : दाहिने पर 'ट' और बाँयें से 'ध' दोनों को एक साथ बजाने से 'धे' बजता है।

कति या कड – यह संयुक्त अक्षर बाँयें हाथ से 'क' और दाहिने हाथ से 'ड' इनदोनों को कुछ आगे–पीछे बजाने से 'कति' या 'कड' ध्वनित होता है।

उपर्युक्त पाठाक्षरों के अलावा 'त्र' बोल दाहिनी पूडी पर बजाया जाता हुआ संयुक्त अक्षर है। स्याही के बीच भाग में अनामिका, मध्यमा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और तर्जनी उंगलियों को क्रमसे अर्थात् एक के बाद एक शीघ्रता से बजाने से 'त्र' बजता है।

'त्रक' बजाने के लिए 'त्र' के अलावा उसका 'क' 'त्र' के बाद अनामिका और मध्यमा मिलाकर 'ति' की तरह शीघ्रता से बजाना चाहिये।

(ब) पखवाज (मृदंग) के ताल बोल

यहां पखवाज (मृदंग) के कुछ आवश्यक तालों का बोल सहित परिचय दिया गया है।

प्रत्येक ताल की मात्राएँ अंकों– १, २, ३, ४, ५, ६ में बतायी गयी हैं जब कि ताल के लिए ताल चिन्हों का प्रयोग किया गया है जैसे सम के लिए '×' खाली के लिए "०" तथा सम के अतिरिक्त ताल '२, ३, ४' अंकों के द्वारा बताये गये हैं और मात्रा तथा ताल चिन्ह के नीचे 'बोल' दिये गये हैं। सभी तालों के लिए यह समान पद्धति है।

जहां मृदंग के एक से अधिक बोल हैं वहां मृ – १, २ बताया गया है। उसी प्रकार 'तोड़ा' के लिए – 'तो – १, २' 'महोरा' के लिए – 'म. १, २ तथा 'परन' के लिए प. १, २, ३, लिखे गये हैं।

१. ताल : अर्ध आड़ा चौताल, मात्रा–७

	१	२	३	४	५	६	७
	×	२		३		४	
	कत्	धीत	धा	कत्	तीत	तीत	ता
परन	धा–कीट	तकीटत	का–कीट	धुमकीट	तकधुम	कीटतक	गदिगन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२. ताल—त्रिताल मात्रा—८

	१	२	३	४	५	६	७	८
	×				०			
मृ—१	धा	धी	ट	ता	कीट	धा	कधा	—क
२	धा	धी	ट	धा	कीट	धा	कीटतक	गदिगन
३	धा	धीट	धीट	ता	कीट	धा	गदि	गन
तो—१	कीटतक	गदिगन	धाधा	कोटतक	गदिगन	धाधा	कीटतक	गदिगन
२	धा—कीट	धीधीकीट	धा	धा—कीट	धीधीकीट	धा	धा—कीट	धीधीकीट

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३. ताल : चर्चरी (झपताल अंग)—मात्रा—१०

	१	२	३	४	५
	×		२		
मृ.	धा	—	धा	ग	की
तो. १	धा	—	कीटतक	गदिगन	धा
म. १	धा	कीट	तक	गदि	गन
२	धागे	तीट	कत	गदि	गन
प. १	धा—तीर	कीटतक	ता—तीर	कीटतक	ता—तीर

६	७	८	९	१०
०		३		
ट	त्रक	ध	की	ट
कीटतक	गदिगन	धा	कीटतक	गदिगन
ता	कीट	तक	गदि	गन
तागे	तीट	कत	गदि	गन
कीटतक	धा—तीर	कीटधागे	तीटकत	गदिगन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४. ताल : चर्चरी प्राचीन : मात्रा : १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×			२		०		३		
धा	गे	न	धी	कीट	ता	धीट	धा	गदि	गन

५ : ताल : सुल ताल : मात्रा : १०

	१	२	३	४	५	६
	×		०		२	
मृ. १	धा	धा	दीं	ता	कीट	धा
ष. १	धागेकीट	तागेकीट	तकींटत	का–कीट	तकतक	धुमकीट

७	८	९	१०
३		०	
तीट	कता	गदि	गन
तकधुम	कीटधुम	कीटतक	गदिगन

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतनिधि, कशी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

६ : ताल : ध्रुवपद (चौताल) = मात्रा—१२

	१	२	३	४	५	६
	×		०		२	
मृ-१	धा	धा	दीं	ता	कीट	धा
२	धा	धीन	नक	तक	धीन	नक
तो-१	धा	धा	दीं	ता	कीटतक	गदिगन
२	धा	तद्धा	कीटतक	गदिगन	धा	तद्धा
प.१	कडां	धीत्तां	धीद्धी	ताघेघे	तीटकत	गदिगन
२	धागेकीट	धागेकीट	तागेकीट	तागेकीट	कीटधीत्त	गदिगन
३	धातीर	कीटधा	तीटकीट	धा	धातीर	कीटनक

	७	८	९	१०	११	१२
	०		३		४	
	दीं	ता	कीट	तक	गदि	गन
	धीन	नक	तीरकीट	धाकी	टधा	—न
	धाधा	टीटतक	गदिगन	धाधा	कीटतक	गदिगन
	कीटकत	गदिगन	धा	तद्धा	कीटतक	गदिगन
	धाघेघे	तटकत	गदिगन	ध—घेघे	तीटकन	गदिगन
	नागेतीट	धागेतीट	कतीटत	गेनधा	कीटधा	नधा—न
	तातीर	कीटनक	तातीर	कीटधा	तीटकदि	गदिगन

७. ताल : त्रिताल — मात्रा–१६

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	धी	ट	धा	गे	धी	ट	धा	क	ती	ट	ता	तीट	कत	गदि	गन
धा	धेटे	धेटे	धा	धा	धेटे	धेटे	धा	कत्	तेटे	तेटे	ता	कीट	तग	गदि	गन

८. ताल : चलती – मात्रा–४

धीट	धीतां	–ग	धा	धीट	धीतां	–ग	धा
धीट	धीतां	–ग	धा	कीट	तक	गदि	गन

९. ताल : आड चौताल मात्रा–१४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	×		२		०		३				४			
मृ.	धा	की	ट	धा	दीं	ता	धीं	धीं	धा	धा	कीट	तक	गदि	गन
	धा	त्रक	धा	गें	दीं	ता	कत्	धा	दीं	ता	कीट	तक	गदि	गन
म. १	धाकी	टत	गीन	धर	ता	धा	बीटतक	गदिगन	धा	कीटतक	गदिगन	धा	कीटतक	गदिगन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१०. ताल : धमार : मात्रा—१४

×					२		०			३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धी	ट	धी	ट	धा	—	क	ती	ट	ती	ट	ता	—
कीट	तक	गदि	गन	धा	कीट	तक	धा	दी	ता	कीट	तक	गदि	गन
ध	धी	ट	धी	ट	धा	—	गदि	गन	धा	धा	कीट	तक	गदि
धा	कीट	धुम	कीट	तक	धी	ता	धाकी	टत	गीन	धाकी	टत	गीन	धाधा
ध	ती	ट	ती	ट	ता	—	कीट	धा	—	कीट	तक	गदि	गन
त	ती	ट	धा	दीत	कीट	तक	गन	धा	धा	कीट	तक	गदि	गन
क	धी	ट	धी	ट	धा	—	क	ती	ट	ती	ट	ता	—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ताल–मर्यादा

यहां एक शंका उपस्थित की जा सकती है कि अष्टछाप महानुभावों ने ब्रह्म, जोग, लक्ष्मी जैसे अधिक (२५ से ऊपर) मात्राओंवाले तालों में कीर्तन-पदों की रचना क्यों नहीं की होगी? इस विषय में हमारी मान्यता इस प्रकार है।

संप्रदाय के प्रारंभ से ही 'प्रमेय' और 'प्रमाण' के अनुसार सेवा-क्रमकी प्रणाली चालू रही है। राग और तालों के अष्टसखा संबंध में भी यही मान्यता दिखाई देती है। 'प्रमेय' अर्थात् भावात्मक–दृष्टि से तथा अष्ट समय की सेवा की दृष्टि से प्रधान तालसंख्या ८ है और प्रतिनिधि ताल सहित जो १२ तालों की संख्या होती है उनकी भावना द्वादश निकुंज की मानी जाती है।

'प्रमाण' अर्थात् 'मर्यादा' या 'व्यवहार' की दृष्टि से देखा जाय तो संगीत के रसास्वाद की अनुभूति के लिए लघु वाक्य–रचना अधिक उपयुक्त मानी जाती है। यह जात साहित्य के आस्वाद के लिए भी सही मानी जाती है क्योंकि वाक्य जितना लंबा होता है, पूर्व अनुसंधान उतना ही कष्टसाध्य बनता जाता है जो रसास्वाद में बाधक होता है। पद–गायन में भाव की दृष्टि से संगीत, शब्द, स्वर, ताल, लय, मात्रा आदि का ध्यान रखा जाना आवश्यक है जो अधिक मात्राओं के तालों में उतना संतुलित नहीं रह पाता और भक्तहृदय का भावपक्ष शिथिल हो जाता है। प्रभु को प्रसन्न करने के लिए ताल और रागों की अधिकाधिक संख्या का होना अनिवार्य माना नहीं जाता था।

भक्त तो भगवान की भावपूर्ण लीलाओं का गान करने वाले कीर्तनकार ही रहना चाहते थे; उन्हें शास्त्रज्ञ पंडित या गवैया बनने की तनिक भी चाह नहीं थी। और इसी लिए अधिक मात्राओं के तालों को छोड़ कर सामान्य समाज भी आसानी से जिनका लाभ ले सके ऐसे सरल तालों का प्रयोग करना उचित समझा गया है। मध्ययुग के कबीर, तुलसी, मीरां, दादु, नानक आदि सन्त–भक्त कवियों ने भी इसी मार्ग को अपनाया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भा. ३ का

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	११	रे	रे
१९	३	नि	नि
२१	११	ध	ध
२३	११	रे	रे
२९	१३	मं प म	म प म
२९	१७	गं	गं
३२	११	ध	ध
३२	१६	ध	ध
३९	१६	मप नि	मप नि
४६	१५	सा	सां
६४	२	होची	होती
६४	११	रें	रें
७६	९	गं	गं
७७	१७	गम रे सा	गम रे सा
८२	१५	नि	नि
८९	१७	रे	रे
९२	१८	चमक आयो सो	चमक आयो चंद सो
९३	४	अनुभार	अनुसार
९६	१३	सध	सब
९७	१०	एंक	इक
९९	२१	फूल्यो	फल्यो
१००	१	ब–ठे	बै–ठे
१००	२०	पृष्ठ मोहन	पृष्ठ ३९ मोहन
१०१	५	वेचन	कंचन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०१	१४	सामत	सामंत
१०१	१५	अनत	अनंत
१०१	२५	जत सो	जत सां
१०२	११	मन बुह्यों	मन जूह्यो
१०२	१२	अनुवार	अनुसार
१०२	२२	–क थरधु	–कं धरधु
१०३	१	नेह	नेंह
१०४	२३	थे	थें
१०५	८	नेन	नेंन
१०५	११	पृष्ठ हरिं	पृष्ठ ७३ हरिं
१०५	२५	सो– –म	सों– –म
१०६	११	की– –लो	पी– –रो
१०६	२२	पर्यो	पर्यों
१०९	१६	सुबह	सुबल
११०	२	पृष्ठ	पृष्ठ ५५
११०	४	उभ	उम
११०	८	झूछे	झूले
१११	८	ई–त	अ–ति
१११	२१	हो–आ	हों–आ
११४	१२	बंटि	जति
११६	६	चूका	चुका
११६	१२	हमोरी	हमारी
११६	२४	चूका	चुका
११७	५	पुष्टिमार्गीय	पुष्टिमार्गीय
११७	१३	स्वरो	स्वरों
११७	१५	मात्रा को	मात्रा का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	१०	यह	इन
११८	१३	होती	होता
११८	१४	उसकी	उनकी
११८	१५	चूका	चुका
११९	१	अति ुतलय	अति द्रुतलय
११९	२	चूका	चुका
११९	१०	छपे हुए	छपी हुई
१२०	१	ग्रन्थो	ग्रन्थों
१२०	५	चूकी	चुकी
१२०	२	कीर्तनकारों की	कीर्तनकारों के
१२०	१८	पाठन्तरों	पाठान्तरों
१२१	२	भें	में
१२१	४	मन्दिरो में	मन्दिरों में
१२१	८	सेवको	सेवकों
१२३	१	तत्कालिन	तत्कालीन
१२३	११	असन्तृष्ट	असन्तुष्ट
१२३	१२	में	मैं
१२३	१३	चूका	चुका
१२३	१५	हाती	होती
१२३	१९	हंमेशां	हमेशा
१२३	२३	शहरो के	शहरों के
१२४	७	प्रणालि बनेंगी	प्रणाली बनेगी
१२४	८	सेधा	सेवा
१२४	९	झान	ज्ञान
१२४	१५	हैं	है

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२५	२	रागझान	रागज्ञान
१२५	१०	व्यक्तियां	व्यक्ति
१२५	११	वादम	वादन
१२५	२०	तत्पूर्ब	तत्पूर्व
१२५	२१	झान	ज्ञान
१२६	११	दर्शनार्थि	दर्शनार्थी
१२७	३	मी	भी
१२८	२१	उपशन्त	उपरान्त
१३२	९	का	को
१३४	२४	गेद के	गेंद के
१३८	४	खगाज	खमाज
१४०	६	मी	भी
१४३	१४	परपरा	परंपरा
१४४	३	अष्टछापीब	अष्टछापीय
१४८	१७	उटपुटाग	उटपुटांग
१४९	कोलम–२ पं० २१	ड	उ
१६९	१४	शेव	शेष
१७०	११	बाल	बोल
१७१	८	भूल	मूल
१७१	१४	दादें बांयें	दायें बायें
१७२	६	पखचाज	पखवाज

आम्नाय-ग्रन्थालय,
Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai
रत्ननिधि, करौली
वाराणसी-5

लेखक के अन्य प्रकाशन

(१) संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन (अप्राप्य)
(२) संगीतकाव्यसुधा न्यो. रु. ४–५०
(३) संगीतपाठावली (अप्राप्य)
(४) संगीतसुबोधिनी न्यो. रु. २०–००
(५) वर्षोत्सव कीर्तनसंग्रह भाग–१ (अप्राप्य)
(६) वर्षोत्सव कीर्तनसंग्रह भाग–२ (अप्राप्य)
(७) बसंत धमारसंग्रह न्यो. रु. १०–००
(८) संक्षिप्त नियम–श्रीयमुनाजीनां पद धोळ (अप्राप्य)
(९) प्राचीन धोळ–पदसंग्रह न्यो. रु. १२–००
(१०) वल्लभाख्यान–मूलपुरुष (अप्राप्य)
(११) नित्यकीर्तनसुधा (अप्राप्य)
(१२) नित्यपदसंग्रह न्यो. रु. ८–००
(१३) हिन्दी धोलपदसंग्रह (संपादक) (अप्राप्य)
(१४) कीर्तनपद्यावली (संपादक) (अप्राप्य)
(१५) संक्षिप्त वधाईसंग्रह न्यो. रु. २–५०
(१६) गुजराती नाटकोनां गीतोनी (सस्तुं साहित्य प्रकाशन)
सरगम (स्वरलिपिकार) अप्राप्य
(१७) अष्टछापीय भक्तिसंगीत, उद्भव और विकास भाग–१ (खण्ड १–२)
न्यो. रु. ५०–००
(१८) अष्टछापीय भक्तिसंगीत, उद्भव और विकास, भाग–२ (खण्ड ३–४)
न्यो. रु. ६०–००
(१९) अष्टछापीय भक्तिसंगीत, उद्भव और विकास भाग–३ (खण्ड–५)
न्यो. रु. ४०–००
(२०) सग्रह पद (आगामी प्रकाशन)

(अप्राप्य पुस्तकों का आर्थिक सहायता मिलने पर पुनर्मुद्रण किया जायेगा, प्राप्तिस्थान एवं सम्पर्क—श्री चम्पकलालजी छबीलदास नायक ६०, नायकनगर अहमदाबाद–३८००१४

इति शुभम्

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai
आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai